

# प्रमा

2014-15

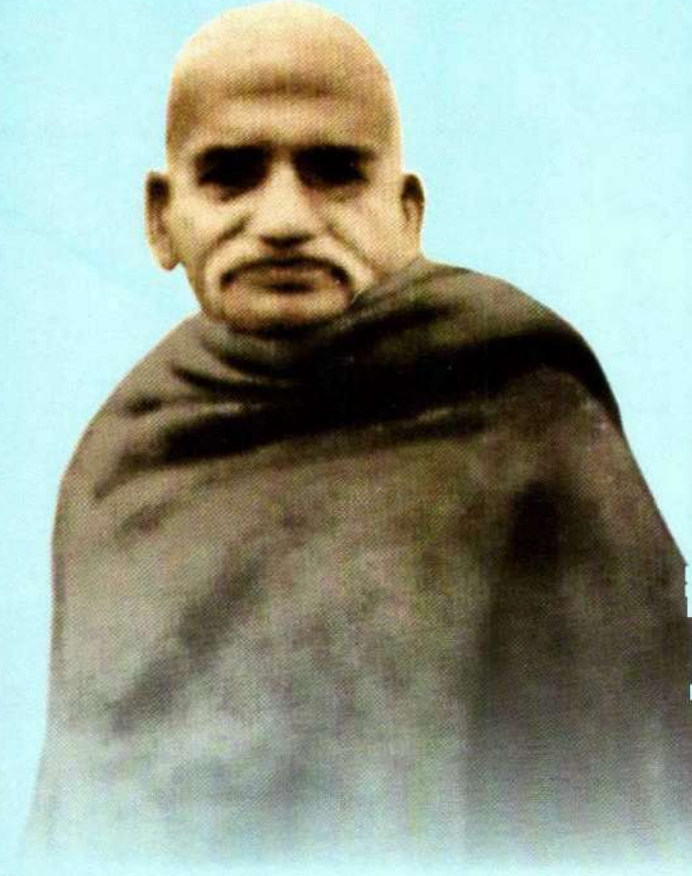


सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद  
(संघटक - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

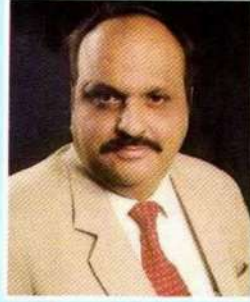
SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, ALLAHABAD  
(Constituent College of University of Allahabad)



# महाविद्यालय-आधार



स्मृति शेष प्रो. दामोदर दास खन्ना  
(पूर्व अध्यक्ष एस के पी सोसायटी एवं  
एस एस खन्ना महिला महाविद्यालय)



श्री राजीव खन्ना  
सचिव  
सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी  
एवं  
अध्यक्ष एस एस खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज

यशः काय सदनलाल खन्ना जी  
संस्थापक - सारस्वत खत्री पाठशाला, इलाहाबाद



श्रीमती सरल टण्डन  
मैनेजिंग ट्रस्टी  
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई



श्री विनय मेहरोत्रा  
ट्रस्टी  
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई



डॉ. शिप्रा सान्याल  
प्राचार्या



## सम्पादक मण्डल

### संरक्षिका

डॉ. शिप्रा सन्याल  
प्राचार्या

### सम्पादक

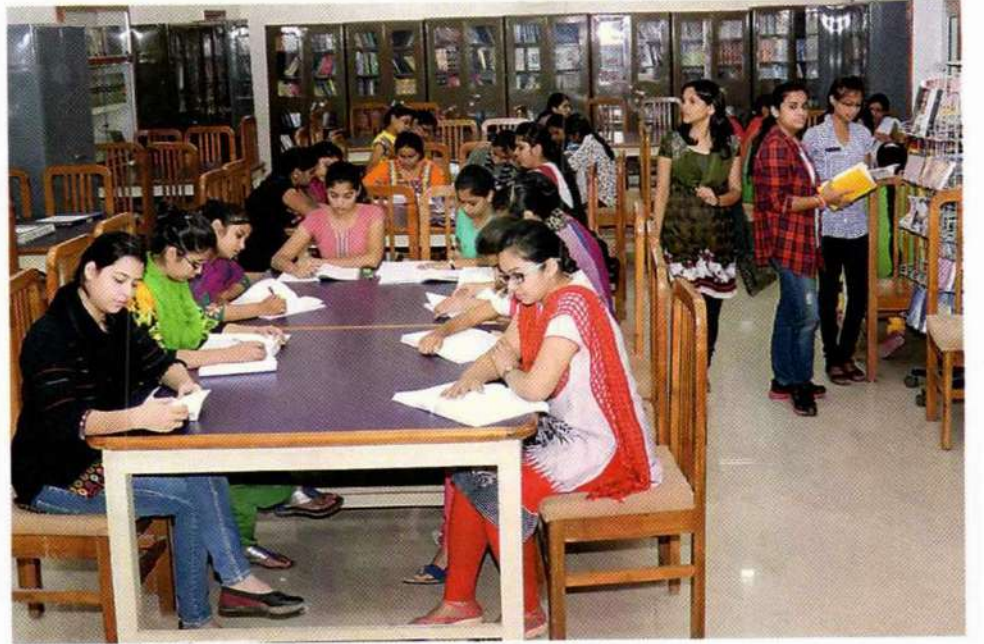
डॉ. आशा उपाध्याय

### सम्पादक मण्डल

डॉ. ज्योति कपूर  
डॉ. मंजरी शुक्ला  
डॉ. अर्चना ज्योति  
डॉ. ताहिरा परवीन  
डॉ. रुचि गुप्ता  
डॉ. रुचि मालवीय  
डॉ. शालिनी रस्तोगी  
शिल्पी श्रीवास्तव

### छात्रा प्रतिनिधि

संजना पांडेय  
प्रज्ञा मिश्रा  
अज्ञका सिद्दीकी  
समन फात्मा  
स्वाति द्विवेदी  
प्रतिभा द्विवेदी



सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद  
(संघटक महाविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

179 डी, अतरसुइया, इलाहाबाद 211 003, उत्तर प्रदेश

फोन नं. : 0532-2659124, 2451692, 2451791

E-mail : khanna\_girls\_dc@yahoo.co.in



राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद  
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान  
**NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL**  
An Autonomous Institution of the University Grants Commission

## *Certificate of Accreditation*

*The Executive Committee of the  
National Assessment and Accreditation Council  
on the recommendation of the duly appointed  
Peer Team is pleased to declare the  
Sadansal Sanwaldas Khanna Girls' Degree College  
Attarsuiya, Allahabad, affiliated to University of Allahabad, Uttar Pradesh as  
Accredited  
with CGPA of 3.46 on four point scale  
at A grade  
valid up to March 02, 2020*

*Date : March 03, 2015*



*Anurag Kishor*  
Director





राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद  
 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संग्ठान  
**NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL**  
 An Autonomous Institution of the University Grants Commission

## Quality Profile

Name of the Institution : Sadanlal Sanwaldas Khanna Girls' Degree College  
 Place : Attarsuiya, Allahabad, Uttar Pradesh

Criteria	Weightage (W <sub>i</sub> )	Criterion-wise Weighted Grade Point (Cr WGP)	Criterion-wise Grade Point Averages (Cr WGP <sub>i</sub> / W <sub>i</sub> )
I. Curricular Aspects	100	350	3.50
II. Teaching-Learning and Evaluation	350	1300	3.71
III. Research, Consultancy and Extension	150	390	2.60
IV. Infrastructure and Learning Resources	100	400	4.00
V. Student Support and Progression	100	400	4.00
VI. Governance, Leadership & Management	100	290	2.90
VII. Innovations and Best Practices	100	330	3.30
<b>Total</b>	$\sum_{i=1}^7 W_i = 1000$	$\sum_{i=1}^7 (Cr WGP) = 3460$	

$$\text{Institutional CGPA} = \frac{\sum_{i=1}^7 (Cr WGP)}{\sum_{i=1}^7 W_i} = \frac{3460}{1000} = \boxed{3.46}$$

Grade = **A**

Descriptor = **VERY GOOD**

Date : March 03, 2015



*Anurajitai*  
 Director

- This certification is valid for a period of Five years with effect from March 03, 2015
- An institutional CGPA on four point scale in the range of 3.01 - 4.00 denotes A grade (Very Good), 2.01 - 3.00 denotes B grade (Good), 1.51 - 2.00 denotes C grade (Satisfactory)
- Scores rounded off to the nearest integer



प्रमा 2014-15



इलाहाबाद विश्वविद्यालय  
सीनेट हाउस, इलाहाबाद (उ.प्र.)-211 002, भारत  
**University of Allahabad**  
Senate House, Allahabad (U.P.)-211 002, India



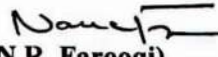
प्रोफेसर एन० आर० फारूकी  
कुलपति

**Professor N. R. Farooqi**  
Vice-Chancellor

January 24, 2015

### Message

I am delighted to learn that the S.S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad is planning to bring out the next edition of its magazine 'PRAMA'. The college magazine essentially provides an appropriate forum to the faculty and students to give expression to their talent and expertise in their area of specialization. It also provides an opportunity to the college to showcase its achievements in the past year. The magazine also inspires all concerned to educate themselves and initiate debates on significant issues that we are facing in contemporary times. I am sure that under your leadership the College magazine will fulfil these objectives in full measure. Let me congratulate the faculty and students of the S.S. Khanna Girls' Degree College for bringing out the magazine. I wish the College all success in its future academic endeavours.

  
(N.R. Farooqi)

शिविर कार्यालय / Camp Office:

दूरभाष / Tele. : (0532) 2545020

फैक्स / Fax : (0532) 2545733

मुख्य कार्यालय / Main Office:

दूरभाष / Tele. : (0532) 2461089, 2461157

टेली फैक्स Tele. / Fax : (0532) 2461157





## संदेश

महोदया,

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि एस0एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय विगत की भांति इस वर्ष भी अपनी पत्रिका "प्रमा" का नया अंक प्रकाशित करने जा रहा है। यह इस बात का प्रतीक है कि महाविद्यालय अपने उत्तरदायित्वों के साथ-साथ शिक्षा में सुधार एवं छात्राओं के सर्वांगीण विकास के प्रति सजग है। यह पत्रिका विद्यालय के समस्त क्रिया कलापों को प्रतिबिम्बित करेगी तथा अध्यापिकाओं एवं छात्राओं को बेहतर बनाने में भी इसका अमूल्य योगदान ऐसा मेरा विश्वास है।

महाविद्यालय छात्राओं को मानसिक एवं शारीरिक रूप से सबल एवं समर्थ बना कर एक सभ्य एवं सुशिक्षित समाज के निर्माण के लिए अनवरत प्रयासरत रहे यही ईश्वर से प्रार्थना है।

धन्यवाद

अरुण टण्डन

(अरुण टण्डन)



Sar-La Education Trust

Admin. Office : 316, Neelam, 108, R. G. Thadani Marg, Worli, Mumbai 400 018, India.  
Tel : +91 22 6660 7631 Email : info@sar-la.in



M E S S A G E

I am delighted to write these words for the annual magazine 'Prama'.

One of the things that make S. S. Khanna Girls Degree College so special is its long term relationships that develop between students, alumni, faculty, staff and friends of the College that make the place feel like home.

A college magazine is a repository of the heart and soul of the college. It reflects the life and times of the College at various periods in its history and is something that students cherish and treasure in their later years. It is heartening to note that your college has kept this so essential aspect of the traditions of a college alive.

The faculty at S. S. Khanna Girls Degree College has always been a trend setter but what has also been noteworthy is the excellent support and commitment of the non-teaching staff.

I wish to congratulate the entire faculty and other staff for encouraging and guiding the students in all facets, for their all round development.

I wish you all the best for achieving greater success and scaling newer heights in your education and career ahead.

(Chetan Mehrotra)

Executive Trustee

February 9, 2015



दिलीप मेहरोत्रा  
प्रबन्धक/कोषाध्यक्ष  
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय  
इलाहाबाद



## संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी प्रमा का प्रकाशन हो रहा है।

पत्रिका विद्यालय के सभी स्वरूपों को एक मंच पर प्रदर्शित करने का सशक्त माध्यम है। समय की मांग के अनुसार यदि हम नैतिक मूल्यों एवं अच्छे संस्कार छात्राओं में विकसित कर सकें तो यह एक उचित सफलता होगी।

पत्रिका के प्रकाशन पर विद्यालय की प्राचार्या एवं प्रबुद्ध शिक्षिकाओं को मेरा आभार। विद्यालय दिन प्रतिदिन ऊंची उड़ान भरे यही मेरी कामना है।

ईश्वर छात्राओं को प्रेम एवं आशीर्वाद दें।

(दिलीप मेहरोत्रा)



प्रमो 2014-15

## श्रद्धांजलि

न जायते म्रियते वा कदाचिन्, नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।  
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥



यशः शोष गोपेश खन्ना  
(जन्म - सितम्बर 1950 देहावसान 28 मार्च 2015)



स्मृतिशोष श्रीकान्त पाण्डेय  
(जन्म 20 फरवरी 1959 देहावसान 5 फरवरी 2015)

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी एवं महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य

यशः शोष गोपेश खन्ना एवं  
महाविद्यालय संगीत विभाग के संगतकार  
स्मृतिशोष श्रीकान्त पाण्डेय की स्मृति को सादर नमन



सम्पादकीय



## सम्पूर्णता की ओर

शिक्षा एक ऐसा उपकरण या माध्यम है जो मनुष्य को सम्पूर्ण और सार्थक बनाता है। लेकिन केवल इसी एक माध्यम से सम्पूर्णता की कल्पना करना कुछ अतिरेक-सा होगा। हम जिस सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति और शासन-व्यवस्था में रहते हैं, उन सबका प्रभाव हमारे विकास पर पड़ता है। लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि इसमें मनुष्य के अस्तित्व और उसकी गरिमा को सम्मान मिलता है। लेकिन इस शासन-व्यवस्था की एक बड़ी विसंगति यह है कि देश का भौतिक विकास भी अवरुद्ध होता है; हर कार्य के लिए जन स्वीकृति प्राप्त करना एक राजनीतिक नैतिकता बन जाती है। आधुनिक विकास की कुछ अनिवार्य शर्तें होती हैं। उन शर्तों को अनदेखी कर या उनकी उपेक्षा कर विकास के पहिए को गतिशील नहीं बनाया जा सकता।

भौतिक विकास और भौतिक उपलब्धियाँ आज की जरूरत हैं। इनकी उपेक्षा करके हम केवल व्यक्ति की खोखली गरिमा के नारे के बल पर आज की चुनौतियों का सामना नहीं कर सकते। पूरा वैश्विक परिदृश्य बदल चुका है और इस तीव्र विकास-क्रम में हमारा देश अभी भी पिछड़े समुदाय या अविकसित देश की श्रेणी में है, जहां लोगों को आधारभूत सुविधाओं के लिए भी जूझना पड़ता है। हमारे बाजारों पर पड़ोसी देश चीन का कब्जा लगातार बढ़ता जा रहा है। यहां तक कि हमारी सांस्कृतिक, धार्मिक, उपासना सम्बन्धी चीजें भी इस पड़ोसी देश में धड़ाके से तैयार हो रही हैं और हमारे घरों में कब्जा कर रही हैं। यह एक गंभीर सवाल है और हमारी संस्कृति पर प्रच्छन्न हमला भी। जब देश और समाज का गौरव कमजोर होता है तो व्यक्ति की गरिमा का क्षरण और अपहरण भी होता है। यह किसी देश को गुलाम बनाने की आधुनिक शैली है। हम इस खतरे से घिरे हैं।

कठिन सवाल है कि क्या कुछ ऐसे कठोर निर्णय करने का समय आ गया है जब सबकी स्वीकृति के सिद्धांत को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया जाए! बहुत ही भावना प्रधान सवाल है यह और हमारे लोकतांत्रिक देश के लिए थोड़ा अस्वाभाविक भी किन्तु देश के विकास और सुरक्षा एवं सशक्तीकरण के लिए अब इस सवाल से जूझना ही पड़ेगा। हमारी शिक्षा केवल हमें सम्पूर्ण बनाने के लिए नहीं वरन् पूरे देश को विकसित और मजबूत बनाने का उपकरण है, होनी चाहिए। हम सम्पूर्ण मानव बनें और हमारा भारत एक सर्व शक्तिमान, आत्म निर्भर, साहसी और विकसित देश बने- हमारी सोच को इस तरह संयोजित होना पड़ेगा। कभी-कभी सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए हमें कुछ त्याग भी करना पड़ता है जैसे भविष्य के सुख के लिए वर्तमान में कुछ कठिनाइयाँ झेलनीं पड़ती हैं। स्त्री शिक्षा को भी सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षा से आगे बढ़ कर देश के सशक्तीकरण में महिला शिक्षा की नयी अवधारणा और नयी महिला चेतना से जुड़ना होगा।

इसी सद्भाव के साथ प्रमा का यह अंक आपको समर्पित है।

*आशा उपाध्याय*

आशा उपाध्याय



डॉ. ताहिरा परवीन - महाविद्यालय को जिन पर गर्व है



उत्तर प्रदेश उर्दू एकेडमी लखनऊ द्वारा पुरस्कार प्राप्त करते हुए

डॉ. ताहिरा परवीन को यह सम्मान और पुरस्कार ₹ 15000/- उनके द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नज़में पढ़ते हैं' पर प्रदत्त किया गया है।





### प्राचार्या की कलम से...

मनुष्य को संस्कारित, प्रशिक्षित, चरित्रवान बनाने में और समाज को समुन्नत एवं देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस भूमिका निर्वहन का सशक्त माध्यम निःसंदेह शिक्षक ही है जो प्रभावी रूप से इन गुणों का आरोपण छात्र छात्राओं में करते है। महाविद्यालय पत्रिका प्रमा भी राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण, शाश्वत मूल्यों की स्थापना तथा भारतीय संस्कृति के तत्त्वों के विकास में अपना योगदान देती है। इसके माध्यम से छात्राओं में कर्तव्यनिष्ठता, वैश्विक दृष्टि का विकास एवं अन्य मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

प्रबन्ध तन्त्र का मार्ग दर्शन हमें इस पत्रिका को आगे बढ़ाने में शक्ति तथा सामर्थ्य देता है अतः मैं आप सभी का आभार व्यक्त करती हूँ। मैं प्रमा के सम्पादक मण्डल को भी उनके अथक प्रयास के लिए धन्यवाद प्रेषित करती हूँ। महाविद्यालय के शिक्षकवर्ग एवं छात्राओं के प्रति सस्नेह आभार व्यक्त करती हूँ कि वे अपने लेख एवं शैक्षणिक सहयोग प्रदान कर इसे सार्थक बनाते हैं, और भविष्य में निरन्तर उन्नति की कामना करती हूँ।

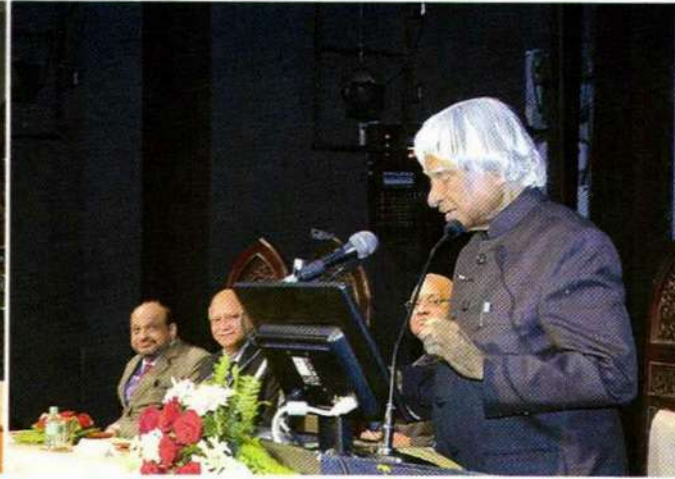
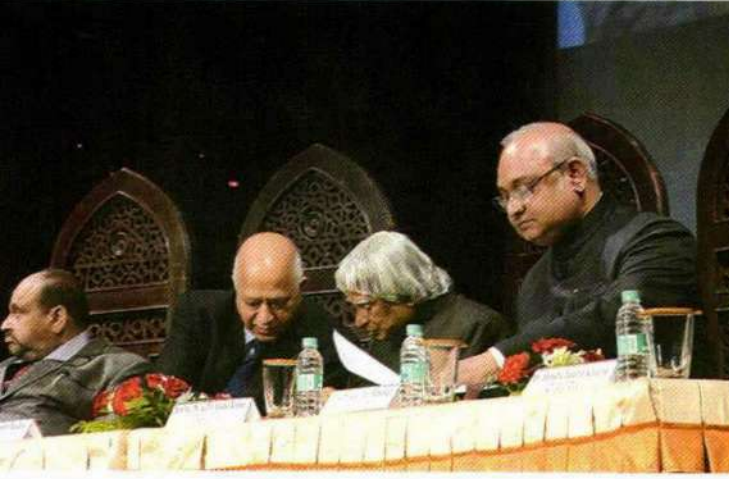
मैं इन पंक्तियों के साथ मैं अपनी कलम को विराम देती हूँ -

आशाएं ऐसी हो जो  
मंजिल तक ले जाएँ  
मंजिल ऐसी हो जो  
जीवन जीना सीखा दे  
जीवन ऐसा हो जो  
संबंधो की कदर करे  
और संबंध ऐसे हों जो  
याद करने को मजबूर कर दें।

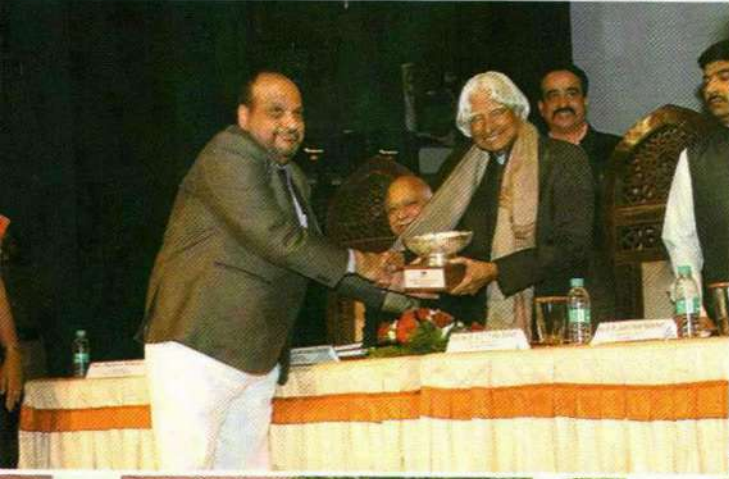
(डॉ. शिप्रा सान्याल)



## अविस्मरणीय संवाद यात्रा पूर्व राष्ट्रपति कलाम के साथ



मंच पर पूर्व राष्ट्रपति कलाम के साथ इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति श्री अरुण टंडन और माननीय न्यायमूर्ति श्री दिनेश महेश्वरी तथा महाविद्यालय अध्यक्ष श्री राजीव खन्ना



अन्य फोटो में छात्राओं के साथ काका कलाम



**Address and Interaction with the students of  
SS Khanna Girls' Degree College,  
21st November, 2014**

**“Evolution of responsible and happy citizens”**

My mission is to discover, my area of natural talent and ability and then to develop it throughout my life.  
I will do it

Dr. A.P.J. Abdul Kalam, Former President of India

I am happy to address and interact with the students of S. S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad and other colleges. My greetings to the Principal, Faculty members and students. This college being pioneers in girls education in this region of Uttar Pradesh has played an important role in serving the society with quality education and empowerment of women. Friends, today when I am in this campus, I would like to share few thoughts on the topic “Evolution of responsible and happy citizens”.

Friends, it is said, “History has proven that those who dare to imagine the impossible are the ones who break all human limitations. In every field of human endeavour, whether science, medicine, sports, arts, or technology, the names of the people who imagined the impossible and achieved are engraved in our history. By breaking the limits of their imagination, they changed the world.” The unique minds always bring a big change to the world. I am sure, all or some of you may contribute to the planet earth by becoming unique personality for the world. This mathematician was of-course Srinivasa Ramanujan for whom every number was a divine manifestation.

Do you know about a great human being with a spirit of service, who also won a Noble Prize for her contributions? She said and practiced, “Give, give and give, until it hurts”. She is Mother Teresa.

Friends, there was a great scientific lady who is known for discovering radiation. She won not one, but two Noble prizes, one for physics and another for chemistry. Who is she? She is Madam Curie. Madam Curie discovered radium and she

was doing research on the effect of radiation on human system. The same radiation which she discovered, affected her and she sacrificed her life for removing the pain of human life.

Friends, I have, so far, met 18 million youth in a decade's time. I learnt, **“every youth wants to be unique, that is, YOU! But the world all around you, is doing its best, day and night, to make you just “everybody else”. In the home, dear young fellows you are asked by your parents to be like neighbours children for scoring good marks. When you go to school, your teachers say “why not you become like the first five rankers in the class”. Wherever you go, they are saying “you have to be somebody else or everybody else”. Now dear young friends, how many of you would like to be unique yourself.**

The challenge, my young friends, is that you have to fight the hardest battle, which any human being can ever imagine to fight; and never stop fighting until you arrive at your destined place, that Engineer or a scientist, or a teacher or a political leader, or a bureaucrat or a diplomat or anything you want to be.

Since, I am in the midst of you, I would like to present my visualization of what type of India you would be in after your educational endeavours.

Distinctive profile of the nation

1. A nation where the ruler and urban divide has reduced to a thin line.
2. A nation where there is an equitable distribution and adequate access to energy and quality water.
3. A Nation where agriculture, industry and service sector work together in symphony.
4. A Nation where education with value system is



not denied to any meritorious candidates because of societal or economic discriminations.

5. A Nation which is the best destination for the most talented scholars, scientists, and inventors.
6. A Nation where the best of health care is available to all.
7. A Nation where the governance is responsive, transparent and corruption free.
8. A Nation where poverty has been totally eradicated, illiteracy removed and crimes against women and children are absent and none in the society feels alienated.
9. A Nation that is prosperous, healthy, secure, devoid of terrorism, peaceful and happy and continues with a sustainable growth path.

Power of leadership with compassion. Let me narrate the details of experience which happened in Mexico.

A riot was raging in La Mesa Prison in Mexico. Twenty Five hundred prisoners were packed into a compound, which had been built for only six hundred. They angrily hurled broken bottles at the police who fired back with machine guns. Then came a startling sight. A tiny five feet two inches, sixty three year old woman, calmly got into the crowd, with outstretched hands, in a simple gesture of peace. Ignoring the shower of bullets, she stood quietly and asked everyone to stop. Incredibly everyone did. No one else in the world, but Sister Antonia could have done this. Why did the people listen to her? All because of her decades of service to the prisoners by her choice. She sacrificed all her life for the sake of prisoners lived in the midst of murderers, thieves and drug lords all of whom she called her sons. She attended their needs round the clock, procured antibiotics, distributed eyeglasses, washed bodies for the burial and counseled the suicidal. This selfless act of love and compassion generated the respect among the prisoners to

control themselves and urged them to do what she wanted them to do. What a great message for humanity? We have seen a leader with compassion is there for even prisoners, but we need leaders with compassion for the voiceless people of millions in the nation and the world.

#### **The purpose of womanhood: God's mission**

Friends, in the planet Earth womanhood is indeed the Almighty's gift. I would like to narrate an Abrahamites story on woman who was created to be a partner for the man in his struggle to overcome ignorance and acquire knowledge as said:

"Angel is free because of his knowledge,

The beast because of his ignorance,

Between the two remains the son of man to struggle"

Friends, I was thinking the national dynamics, particularly in our way of life and situation at home and the thinking of the youth and the experience in the midst of many education systems and the law of the land. We may have many and many Laws. But, based on my study, evolution of a happy home will result into beauty of character in all the members of the family. hence, I would like to share a few thoughts on happy Home.

#### **Happy home profile**

A beautiful home (we have 200 million homes in India) emanates from four dimensions. One comes from spiritual home, second comes from mother's happiness, third comes from transparency of the home and the fourth comes from providing a clean and green environment. This combination of four traits indeed brings out happy home. Let us study, we can achieve that.

**Spiritual Home:** friends, let us look at a small family home with father, mother, a son and a daughter, or two sons or two daughters. In this home, both parents earn. I visualize in this little home, a small home library with at least ten great books and in this home parents have to inculcate reading habit among their children

**From today onwards, I will make my mother happy.**

If my mother is happy, my home is happy.



If my home is happy, the society will be happy.  
If societies are happy, State will be happy.  
If State is happy, the nation will be happy.

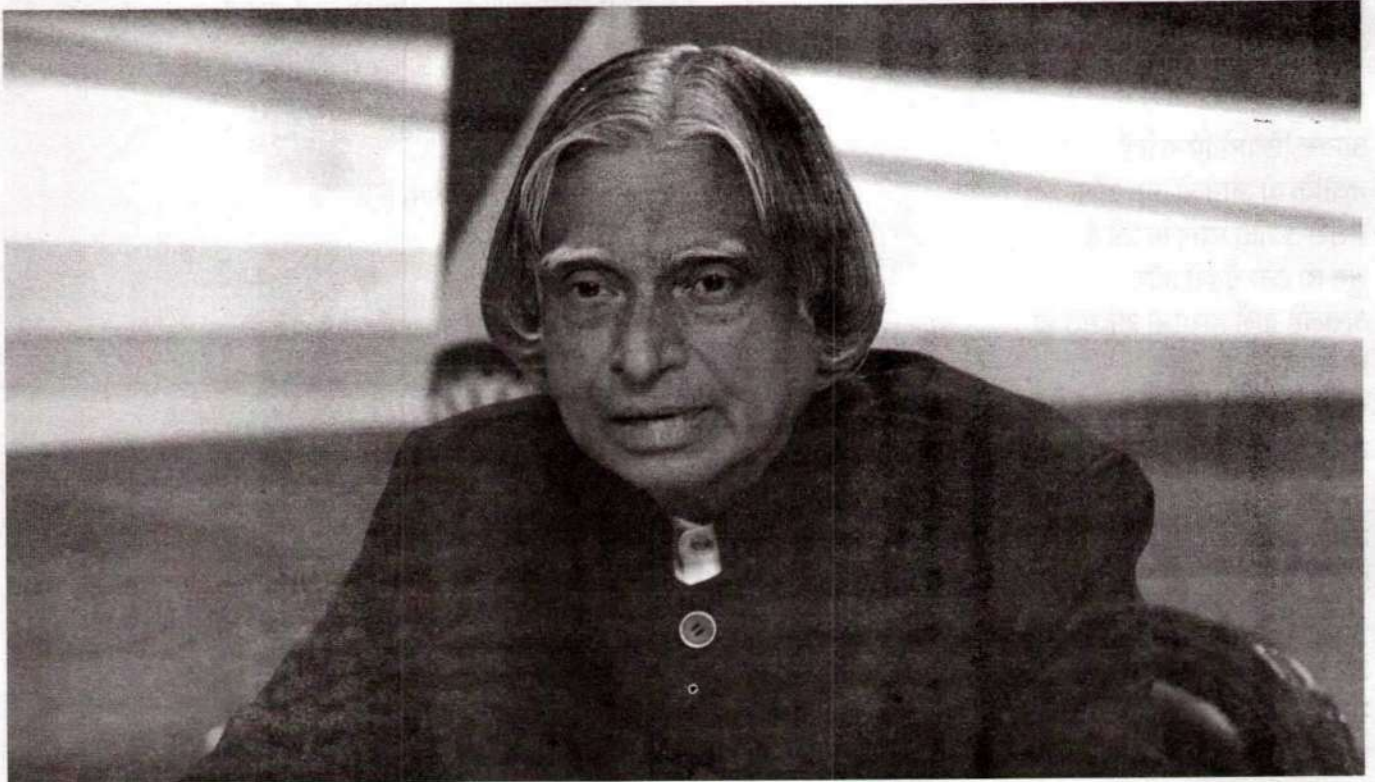
**A transparent home:** Friends as I said, we belong to a society of 200 million families. Every family has four members; father, mother, two daughters or two sons or one son and one daughter. There is a crying need in the nation to develop a transparent society. Dear young members, I have a mission for the youth of the nation, that is the daughter or son of the family. Friends, everyone of you assembled here will know, after all corruption emanates from a few homes. It is estimated, 30% of our Indian homes are corrupt. That means approx 60 million houses may be corrupt. In a corrupt home, imagine, son or daughter can sense it and persuade the father not to become a victim of corruption using their love and affection. My conscience says, compared to any law against corruption, definitely this movement of the youth against corruption, will be extremely effective.

**Green Home Mission:** Friends, today there is a constant climate change in the

universe. Deforestation, industrialization and transportation emitted carbon-di-oxide has caused hole in the ozone layer, leading to increased heating of the planet earth. This is the major cause of flood and draught. If the youth of the nation

**Oath for the students**

1. I will bring a change in the life of 100 women in education, employment or healthcare.
2. I will promote courage and self-reliance, particularly among women.
3. I will work continuously to remove gender discrimination and crime against women and children.
4. I will promote righteousness in the heart that will blossom the beauty in the character among citizens.
5. I will light the lamp of knowledge in the nation and ensure that it remains lit for ever.
6. Wherever I am, I will always be remembered by my thought, word and action as a student of S. S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad.
7. My National Flag flies in my heart and I will bring glory to my nation.





कविता

## वो आतंकवाद समझती है

शालिनी मिश्रा

छात्राध्यापिका-बी.एड.

वो जब घर से निकलती है

खुद ही

खुद के लिए दुआ करती है

चाय की दुकान से उठे कटाक्षों के शोलों में

पान के ढाबों से निकली सीटियों की लपटों में

रोज ही झुलसती है

चौराहों की घूरती नजरों की गोलियाँ

उसको हर घड़ी छलनी करती हैं

आतंकवाद!

अरे इससे तो तुम

आज खौफ खाने लगे हो

वो कब से

इसी खुराक पे जीती-मरती है

तुम तो आतंक को

आज समझने लगे हो

आज डरने लगे हो

वो तो सदियों से डरती है

जमीं पे आने की जहोजहद में

किस-किस से निपटती है

तुम जान देने से डरते हो

पर वो

आबरू छिपाये फिरती है

क्योंकि वो जान से कम और

इससे ज्यादा प्यार करती है

तुम तो ढके चेहरों और

असलहे वाले हाथों से सहमते हो

वो तुम्हारे खुले चेहरे

खाली हाथों से सिहरती है

तुम मौत से बचने को बिलखते हो

वो जिंदगी पे सिसकती है

तुम्हें लगता है

औरत अखबार नहीं पढ़ती तो

कुछ नहीं समझती

अरे चाहे पिछड़ी रहे शिक्षा में

मगर

सभ्यता में

आदमी से कई कदम आगे रहती है

इसलिए

हाँ इसलिए

तुमसे कई गुना ज्यादा

वो आतंकवाद समझती है।।

## बेटी हूँ मैं.....

नन्दिनी लता

छात्राध्यापिका-बी.एड.

कभी सोचूँ कौन हूँ मैं

माँ के आँचल की गुड़िया

या पापा की लाडली, उनकी आफत की पुड़िया।

हमेशा भाईयों से लड़ती, नोक-झोंक करती

बिना मतलब की एक बहस हूँ मैं

अपने ही आँगन में खिली

बेगानों के गुलदान की एक फूल हूँ मैं

या दूर कहीं बेगानों के घर में

अपनेपन को रोशनी बिखेरती दीया हूँ मैं

अपने कहते, तू तो धन है पराया

तेरा यहाँ क्या, तू नहीं है हमारी

सासरा कहता तू तो आई घर से पराये

मैं क्या जानूँ क्या है पहचान मेरी

अपनों के बीच कभी महसूस करती

एक अजनबी सा एहसास हूँ मैं

तो कभी परायों के बीच ढूँढ़ती अपनेपन की

एक जानी-पहचानी सी आस हूँ मैं

बेटी हूँ मैं.....।।



दर्शन

## गीता-सार

इन्दु

छात्राध्यापिका-बी.एड.

- जो भी हुआ, अच्छा हुआ।  
जो भी हो रहा है, अच्छा हो रहा है  
जो भी होने वाला है, अच्छा होने वाला है।।
- तुमने खोया क्या है ? तुम रो क्यों रहे हो ?  
तुमने कुछ खोया नहीं है, क्योंकि इस संसार  
में कुछ नहीं लाये थे  
कुछ भी नाश नहीं हुआ, क्योंकि तुमने  
कुछ भी सृष्टि नहीं की थी।।
- जो भी तुम्हारे पास था, उसे तुमने यहीं से  
लिया था।  
जो भी तुमने दे दिया, उसे तुम्हें यही से दिया  
गया था।  
आज तुम्हारा जो भी है, वह कल किसी और  
का होगा, परसों किसी और का होगा।  
यह परिवर्तन सार्वलौकिक है।।

जीवन-पुरस्कार

## आंसू का उपहार

अंजलि गुप्ता

छात्राध्यापिका-बी.एड.

अक्सर आंखों में आंसू देखकर लोगों को लगता है कि यह कमजोरी की निशानी है। पुरुषों में बचपन से ही यह भावना घर कर जाती है कि आंसू केवल लाचार लोग या फिर महिलाएं ही बहाती हैं। इसीलिए वे अत्यन्त परेशानी, पीड़ा और तनाव में वे जबरदस्ती अपने आंसूओं को रोककर रखते हैं और अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं। कई बार यह पीड़ा इतनी अधिक हो जाती है कि वे आत्मघाती कदम तक उठा लेते हैं। कैलिफोर्निया के मनोविश्लेषक टैज डब्ल्यू. किन्नी का मानना है कि 'महिलाओं की तुलना में तीन गुना पुरुष शराबी इसलिए

होते हैं, क्योंकि पुरुष रोने से परहेज करते हैं।' जबकि जिस तरह प्रसन्नता, क्रोध, भय आदि स्वाभाविक हैं, उसी तरह आंसूओं का निकलना भी स्वाभाविक है, यह हमारे शरीर का एक सेफ्टी वॉल्व है। इसलिए जब आंसू बहते हैं तो उसमें शर्मिन्दा होने की आवश्यकता नहीं है। आंसू शरीर की आंतरिक प्रणाली को स्वस्थ रखने में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ऑलिवर टिविस्ट के एक उपन्यास में उसका एक पात्र मिस्टर बम्बल कहता है, 'रोना फेफड़ों को साफ करता है, चेहरे को धो देता है, आंखों का व्यायाम करवाता है और गुस्से को कम को कम कर देता है, इसलिए जी भर के रो लो।' आंसू किसी विशेष जाति या लिंग से सम्बन्धित नहीं हैं। यह सबके लिए हैं। खुशी और बड़ी कामयाबी मिलने पर स्वतः ही आंसू आंखों से निकल आते हैं। खुशी और आंसू का अद्भुत यह संगम होता है। खारे आंसू जिन्दगी को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कवि रॉबर्ट हैरिक ने तो आंसूओं को 'आंख की उदात्त भाषा' कहा है। इस भाषा का जीवन में बहुत महत्व है। आंसू बड़ी से बड़ी परेशानी को अपने साथ बहा ले जाता है और व्यक्ति को अनुभवी बना देता है।

विशेष

## कामयाबी के सूत्र

अनीता साहू

छात्राध्यापिका-बी.एड.

- छत ने कहा- ऊंचे उद्देश्य रखो।
- पंखे ने कहा- ठंडे रहो।
- घड़ी ने कहा- हर मिनट कीमती है।
- कैलेण्डर ने कहा- अप टू डेट रहो।
- खिड़की ने कहा- दुनिया को देखो।
- दरवाजे ने कहा- अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए पूरा जोर लगाओ अपने खोल से बाहर निकलो।
- शीशे ने कहा- कुछ करने से पहले अपने अंदर झांक लो।



आलेख

## सफलता का मंत्र

सुरभि तिवारी

बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

सफलता और असफलता जीवन के दो पहलू हैं, हमें जीवन में कभी सफलता प्राप्त होती है तो कभी असफलता। लाइफ में अगर आप सोचते कि हार गये तो आप हार गये। अगर आप सोचते हैं आप में हौसला नहीं है, तो सचमुच नहीं है। हम दुनिया में देखते हैं कि सफलता की शुरुआत इंसान की इच्छा से होती है। ये सब कुछ हमारी सोच पर निर्भर करता है, तरक्की करने के लिये आपकी अपनी सोच ऊँची करनी होगी। आपको अपने प्रति विश्वास लाना होगा, जीवन की लड़ाइयाँ हमेशा सिर्फ तेज और मजबूत लोग नहीं जीतते। आज नहीं तो कल जीतता वही है जिसे यकीन है कि वही जीतेगा।

**वक्त जब लेता है करवट, किसी की कुछ न चलती है  
रकीबों की नजर फिसले, न उनकी दाल गलती है,  
किसी तिनके को तिनका न कहो, ये वक्त का मंजर  
पड़े गड्ढे में कूड़े की कभी किस्मत बदलती है।**

हमें अपनी लाइफ में समय की कीमत को समझना चाहिये। उदाहरण के रूप में आइस्क्रीम हमें जिंदगी जीने का फलसफा भी सिखाती है। जरूरत है तो बस उसे समझने की। आप सभी जानते हैं कि आइस्क्रीम को अगर आपने फटाफट या यूँ कहें टाइम रहते फिनिश नहीं किया तो फिर लाख कोशिश कर लीजिये, दोबारा आप उसे खा नहीं सकते, यानी टाइम ओवर होते ही वह मेल्ट हो जायेगी और आपके पास बस रह जायेगा उसका पानी। हाँ यह बात अलग है आप आइस्क्रीम शेक का मजा जरूर ले सकते हैं- मतलब साफ है कि हम भी अगर टाइम रहते नहीं जागे, समय की कीमत को नहीं पहचाना और इसे यूँ ही बर्बाद किया तो फिर

वह समय कभी लौट कर नहीं आयेगा। यानी हमें दोबारा उसे युटिलाइज करने का मौका नहीं मिलेगा। सही कहा गया है कि वक्त कभी किसी का इंतजार नहीं करता और न किसी के लिये लौटकर वापस आता है। मतलब साफ है हम समय की महत्ता को बखूबी अहसास करते हैं और उसकी वैल्यू करते हैं तो फिर आखिर हम लाइफ के दूसरे कामों में इसे सही से क्यों नहीं इंप्लीमेंट कर पाते हैं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम हर बात का एक ऑप्शन लेकर चलते हैं कि ये नहीं तो ये हो जायेगा, ऐसा नहीं तो वैसा हो जायेगा। लेकिन यकीन मानिये जिस दिन से आप टाइम को सही तरीके से फॉलो करने लगेंगे आपको ऑप्शन की ओर नहीं देखना पड़ेगा।

तो दोस्तों ऐसे में जरूरत है अपनी आइस्क्रीम को इज्जाय करने के साथ ही टाइम की कीमत को पहचाना जाये। वक्त की कद्र करना सीखिये और गाने की खूबसूरत लाइन, 'जिन्दगी के सफर में गुजर जाते हैं जो मुकाम, वो फिर नहीं आते' को गुनगुनाते हुये जिंदगी को भरपूर इज्जाय कीजिये और हाँ अब किसी बात को टालिये मत। असफल होने पर देखें कि कहाँ पर हमसे क्या गलती हुई ? और एक साल की कीमत को समझे, हमारे देश के महान महापुरुष स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "उठो, जागो, लक्ष्य की प्राप्ति के पहले मत रुको।" और कहा भी गया है-

**असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो**

**क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो**

**जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम**

**संघर्ष का मैदान छोड़कर यूँ मत भागो तुम**

**कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती**

**कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।**



आलेख

**कन्या भ्रूण हत्या एक जघन्य अपराध**  
आकांक्षा तिवारी  
छात्राध्यापिका-बी.एड.

“कानून सबके लिए सीधा और साफ चाहिए।

माई लार्ड मुझे इंसफ चाहिए

मेरा कसूर क्या है ? जिस जुर्म की सजा देते हो

दुनिया में आने से पहले मेरी दुनिया मिटा देते हो

ये उसका मुकदमा है जिसे आने से रोका गया

अदालत को फैसला सुनाने से रोका गया।”

ये कुछ पंक्तियाँ उस बालिका की मनोदशा व्यक्त कर रही हैं जो आज कन्या भ्रूण हत्या का शिकार होती है। कन्या भ्रूण हत्या अर्थात् जन्म से पहले कन्या को मान डालने की क्रिया, जो कि सबसे अधिक अमानवीय और घृणित कार्य है। जिस गति से मानव ने विज्ञान के चमत्कारों का उपयोग किया उसी गति से इसका दुरुपयोग भी किया। अल्ट्रासाउण्ड, विज्ञान की अनूठी खोज है। जिसका प्रयोग तिथि की जाँच, बच्चे के विकास तथा वजन की जाँच, यह जानने हेतु कि क्या एक से अधिक बच्चे हैं, रक्तस्राव अथवा अन्य समस्याओं का कारण जानने के लिए निश्चित किया गया लेकिन अल्ट्रासाउण्ड की सहायता से गर्भ में पल रहे शिशु का लिंग भी जाँचा जा रहा है। ये प्रक्रिया अपराध की शकल तब लेती है जब गर्भ में बालिकाओं का पता लगाकर उनकी हत्या कर दी जाती है और इसे अंजाम देते हैं, कुछ अल्प मानसिकता वाले हमारे बन्धु।

लगभग कुछ वर्ष पूर्व कन्या भ्रूण हत्या करने एवं करवाने वालों के खिलाफ कानून बनाया गया था। तब लोगों में यह उम्मीद जगी थी कि ऐसी घटनाओं पर रोक लगेगी, लेकिन यह धंधा कहीं अधिक विकृत रूप में सामने आया। पंजाब और राजस्थान में कन्या भ्रूण हत्या के मामले राष्ट्रीय चर्चा का विषय बने। यही कारण है कि पंजाब और राजस्थान जैसे कई अन्य राज्यों का लिंगानुपात घटता जा रहा है। इन राज्यों में सिर्फ विवाह की ही समस्याएँ पैदा नहीं

हो रही हैं, अपितु बहुपति प्रथा, वेश्यावृत्ति जैसी समस्याओं को बढ़ावा भी मिल रहा है। इसका एक दुष्परिणाम यह भी है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि इस कन्या भ्रूण हत्या के कारण सृष्टि की रचना करने वाली नारी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा, तो जरा सोचिए, सृष्टि की रचना कैसे हो पायेगी ?

पुत्र की लालसा में लोग बेटियों की हत्या कर देते हैं जिसके लिए माँ-पिता, समाज और सभी अपराधी होते हैं। क्या कन्याएँ माँ-बाप के सम्मान को नहीं बढ़ाती ? क्या वह उच्च शिखर पर नहीं पहुँचती हैं ? हमारे समाज में **इन्दिरा गांधी, किरण बेदी, पी.टी. उषा, कल्पना चावला** जैसी तमाम कन्याएँ हैं, जो बड़े पदों पर सुशोभित एवं सम्मानित हैं।

कन्या भ्रूण हत्या जैसे घृणित कार्य को रोकने के लिए कई राज्यों में प्रभावी कदम उठाये गए हैं। जैसे- गुजरात में **बालिका बचाओ अभियान** चलाया गया है। केरल में साक्षरता दर सर्वाधिक है तथा लिंगानुपात भी सन्तुलित है, इसका कारण वहाँ के व्यक्तियों की समान भाव वाली सोच है। हमें अपनी मानसिकता को परिवर्तित करके इस अपराध को रोकना चाहिए।

भ्रूण में पल रही बच्ची लक्ष्मीबाई, किरण बेदी, सायना नेहवाल, महादेवी वर्मा, इन्दिरा गांधी भी बन सकती हैं। ऐसा सोचकर इसे जन्म दें और इसे धरा पर आने दें। नारी ही देश और समाज के विकास की रीढ़ है।

कन्या भ्रूण हत्या का शिकार होने वाली बच्ची की हृदय वेदना को प्रकट करती हुई ये पंक्तियाँ देखें-

“हे जननी, तू मुझको जन्म तो लेने देती

तू भी एक नारी है, फिर मुझको तो अपना लेती

क्यों मेरे जीवन का तूने इतना निर्मम अन्त किया

जग में आने से पहले क्यों मेरा तूने कत्ल किया

क्यों ऐसी विपदाएँ तूने मेरे ऊपर ढायी

हे जननी! फिर नारी बन

इस संसार में तू क्यों आयी ?”



आलेख

## जरूरत है सोच बदलने की

ओमनी गुप्ता

छात्राध्यापिका-बी.एड.

आज समाज में महिलाओं की सुरक्षा और उनके वर्तमान हालात को लेकर काफी चर्चा हो रही है। सड़क से संसद तक महिलाओं की दशा सुधारने को लेकर लोग चर्चाएँ कर रहे हैं। लेकिन क्या सच में महिलाओं की स्थिति सुधरी है ? यह सवाल अहम् है। अक्सर कई लोग महिलाओं पर गलत नजर रखते हैं, लोगों को यह समझना होगा कि महिला उपभोग की वस्तु नहीं है, लोगों को महिलाओं के बारे में अपनी सोच बदलनी होगी, अगर सोच नहीं बदल सकते, तो महिलाओं को कोसना छोड़ दें क्योंकि महिलाएँ समाज में बदलाव लाने का काम कर रही हैं।

हमारे देश में आज भी महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम है। इस पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को अपनी जगह बनाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। महिलाएँ हर क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करके आगे बढ़ रही हैं।

हाल ही में जब श्रीमती स्मृति जुबैन ईरानी को शिक्षा मंत्री बनाया गया तो लोगों द्वारा तुरन्त विरोध किया गया कि वह सिर्फ 12वीं तक ही पढ़ी है। उन्होंने 'स्नातक' भी नहीं किया है। इस आधार पर उन्हें शिक्षा मंत्री के पद से हटाया जाय। लेकिन यह जरूरी नहीं है कि रेल मंत्री का लोकोपायलट होना आवश्यक हो या परिवहन मंत्री का पायलट होना जरूरी हो तभी वह मंत्री बन सकते हैं। अगर ईरानी जी की जगह कोई पुरुष मंत्री बनता तो शायद हमारे समाज में इतना विरोध न किया जाता। आज लोगों को सिर्फ यह सोच बदलने की जरूरत है।

कुछ दिनों पहले दिल्ली में हुई एक रेप की घटना के बाद महिला सुरक्षा को लेकर काफी हल्ला हुआ। हर ओर महिला सुरक्षा पर चर्चा हुई। सरकार ने कानून में बदलाव की बात की। लेकिन सिर्फ बात करने से कुछ होगा ? नहीं, इससे कुछ नहीं होने वाला। अगर सच में महिलाओं की स्थिति बदलनी है तो इसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति की जरूरत है। चाहे सरकार हो या कोई संस्था अगर यह सोच ले कि महिलाओं संग हो रही घटनाओं को रोकने के लिए कुछ करना है, तो स्ट्रॉंग एक्शन लें। इसके लिए जरूरी है कि लोग महिलाओं को लेकर अपने दिमाग में भरे फितूर को बाहर निकालें और उन्हें उपभोग की वस्तु न समझें। जिस दिन ऐसा हो जायेगा उस दिन खुद-ब-खुद महिलाओं की स्थिति में सुधार आ जायेगा। इसके लिए हमें अपने घरों से शुरुआत करनी होगी। मुझे लगता है कि आज के लड़कों को लड़कियों से ज्यादा संस्कारों की जरूरत है। अगर हम अपने घर पर ही बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार देंगे, तो सुधार होना तय है। अगर हर कोई अपनी जिम्मेदारी निभाएगा तो समाज में महिलाओं की स्थिति जरूर बदलेगी।

सरकार को भी कठोर कानून बनाना और एक्शन लेना चाहिए जिससे लोग दोबारा कोई गलती न करें। अगर ये सारी चीजें प्रॉपर प्लानिंग से हों, तो मुझे विश्वास है कि देश में महिलाएं बेखौफ होकर अपने घरों से निकल सकेंगी और समाज में सिर उठाकर चल पाएंगी। जिस दिन ऐसा हो जायेगा उस दिन से भारत अवश्य विकसित हो जायेगा। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 2020 तक भारत को विकसित रूप में देखना चाहते हैं अगर हमारे देश में महिलाएँ सुरक्षित हैं और उनकी स्थिति अच्छी है तो भारत 2020 तक विकासशील से विकसित देश बन जायेगा।



## दानशीलता

### अमरीन अख्तर

#### बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

अभाव ग्रस्त लोगों को उनकी सहायतार्थ धन अथवा अन्य वस्तुएँ देने की प्रवृत्ति दानशीलता कहलाती है। किन्तु केवन निर्धनों के पक्ष में धन संपत्तियों का परित्याग ही दानशीलता नहीं है बल्कि अन्य लोगों के संबंध में कोई भी निर्णय लेते समय प्रेम, दया तथा समझदारी प्रदर्शित करना भी दानशीलता है। 'दानशीलता' शब्द के दोनों ही अर्थ अन्तर्सम्बन्धित हैं क्योंकि दूसरों की सहायता, मनुष्य का मनुष्य के प्रति प्रेम, दया तथा समझदारी के कारण ही की जाती है। इस प्रकार दानशीलता एक दैविक गुण है जिसे सम्पूर्ण संसार में बहुत आदर का स्थान दिया जाता है तथा मानवीय गुणों के एक महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में व्यवहृत किया जाता है।

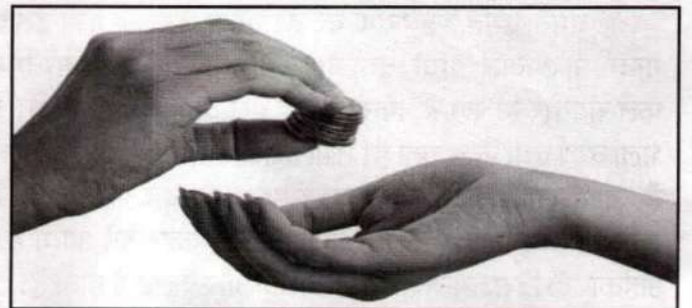
जो लोग दूसरों की सहायता करने के योग्य हैं उनका कर्तव्य है कि वे दूसरों की सहायता करें। धनी व्यक्तियों को समझना चाहिए कि उनके पास जो भी धन सम्पत्ति है वह निर्धनों की ओर से तथा उनके लिए उन्हें बनाए गए ट्रस्टी के रूप में मिली है। ईश्वर ने उन्हें निर्धनों की देखरेख के लिए उत्तरदायी बनाया है। उनको प्राप्त धन-सम्पत्तियाँ उनकी इस परीक्षा का माध्यम हैं। परन्तु जो लोग धनी नहीं हैं यदि वे भी कष्ट सहन कर के दूसरों की सहायता करते हैं तो ऐसे लोग स्वर्ग में उच्च स्थान पाने वाले हैं।

दानशीलता समाज में नाम कमाने अथवा सरकारी संस्थाओं से अपने पक्ष में लाभ अथवा हित साधने के उद्देश्य से नहीं होना चाहिए। सबसे अच्छा दान वह होता है जो गुप्त रूप से दिया जाए। सभी मुख्य धर्मों के उपदेशों में कहा गया है कि दान इस प्रकार से दिया जाए कि बाएँ हाथ को यह न पता चले कि दाएँ हाथ ने क्या दिया। इसका अर्थ यह है कि दान की राशि एवं दान पाने वाले व्यक्ति के विषय में किसी को भी जानकारी न दी जाए। यहाँ तक कि स्वयं भी इसको भूल जाएं तथा दान प्राप्त करने वाले व्यक्ति से किसी प्रकार का

लाभ प्राप्त करने अथवा उससे एहसान जताने की लेशमात्र भी इच्छा न रहे।

दान देते समय पात्र तथा अपात्र लोगों में अन्तर करना अति आवश्यक है। दानशीलता का महान उद्देश्य निर्धनता एवं कष्ट दूर करना है। महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि अधिक से अधिक लोगों की सहायता की जाए। महत्त्वपूर्ण यह है कि धनी व्यक्ति कुछ लोगों की इस प्रकार सहायता करें कि वे लोग अपने पैरों पर खड़े हो जाएं। अनेक लोगों को थोड़ी-थोड़ी सहायता करने से भिक्षा-व्यवसाय को बढ़ावा मिलता है। यदि किसी धनी व्यक्ति के पास वास्तविक जरूरतमन्द व्यक्ति अथवा व्यक्तियों तक पहुँचने का समय न हो तो उसे चाहिए कि वह किसी अच्छी पुण्यार्थ संस्था के माध्यम से ऐसे लोगों की सहायता करें। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा प्रथम उत्तरदायित्व हमारे परिवार के प्रति है। इसके बाद निर्धनों व जरूरतमंदों की खोज अपने पड़ोस, सम्बन्धियों तथा अन्य लोगों के बीच क्रमशः की जानी चाहिए। वह व्यवस्था एक ओर धन के समान वितरण में सहायता करती है तथा दूसरी ओर सामाजिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करने में भी योगदान करती है। इसके द्वारा गरीबी, आर्थिक जड़ता तथा बेरोजगारी के दुश्चक्र को तोड़ा जा सकता है। इससे शैक्षिक एवं तकनीकी श्रम शक्ति का विकास होता है जो बाद में देश के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। निर्धनों की सहायता प्रभावी माँग में वृद्धि करती है। परिणाम स्वरूप उत्पादन तथा रोजगार में भी वृद्धि होती है।

इन सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि दानशीलता अपने अंदर से लाभ के विषैले तत्त्व को बाहर निकालकर अपने आप को शुद्ध करने का साधन है। यह हमारे हृदय को दूसरों के प्रति प्रेम व अनुकम्पा से भर देता है परन्तु यह तभी संभव है जब धन कमाने के साधन व साध्य दोनों ही पवित्र हों।





आलेख

## आलस्य का रोग

प्राची निषाद

बी.ए. तृतीय वर्ष

अमेरिका के लेखक स्वेट मॉर्टन ने अपनी एक किताब में लिखा है कि आलस्य (प्रमाद) किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का सबसे बड़ा शत्रु है, क्योंकि आलस्य के कारण व्यक्ति के गुण भी क्षीण हो जाते हैं। सच तो यह है कि आलस्य का रोग जिस किसी को भी जीवन में पकड़ लेता है, तो फिर वह संभल नहीं पाता। आलस्य से देह और मन दोनों कमजोर पड़ जाते हैं। आलसी व्यक्ति जीवन पर्यन्त लक्ष्य से दूर भटकता रहता है। कहा भी गया है कि आलसी को विद्या कहाँ, बिना विद्या वाले को धन कहाँ, बिना धन वाले को मित्र कहाँ और बिना मित्र के सुख कहाँ ? अकरणीय, अकर्तव्य यानी नहीं करने योग्य काम को करना भी प्रमाद है। जो आलसी हैं, वह कभी भी अपनी आत्म-चेतना से जुड़ाव महसूस नहीं करता है। कई बार व्यक्ति कुछ करने में समर्थ होता है, फिर भी उस कार्य को टालने लगता है और धीरे-धीरे कई अवसर भी हाथ से निकल जाते हैं। तब पश्चाताप के अलावा और कुछ नहीं बचता। 'आज नहीं कल' आलसी

व्यक्तियों का जीवन सूत्र है। शायद आलसी व्यक्ति यह नहीं सोचता है कि जंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा श्रम करके, मेहनत करके, घिस-घिसकर खत्म होना कहीं ज्यादा अच्छा होता है।

मैं तो कहूँगी कि आज ही संकल्प ले- जीवन जागृति का, जागरण का। जागरण का मतलब आँखें खोलना नहीं, बल्कि अंतश्चेतना या अंतर्चक्षुओं को खोलना है। वेद का उद्घोष है कि उठो जागो और जो इस जीवन में प्राप्त करने आए हो उसके लक्ष्य के लिये जुट जाओ। जो जगकर उठता नहीं है, वह भी आलसी है। जो अविचल भाव से लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर कार्य सिद्धि तक जुटा रहता है, वही व्यक्ति सही मायने में जागृत कहलाएगा। आलसी वही नहीं है जो काम नहीं करता, बल्कि वह भी है जो क्षमता से कम काम करता है। आशय यह है जो क्षमता से अपने दायित्व के प्रति ईमानदार नहीं है, जिसमें कर्तव्य बोध नहीं है वे भी आलसी हैं। क्षमता से कम काम करने पर हमारी शक्ति क्षीण होती जाती है और हम अपनी असीमित ऊर्जा को सीमा में बांधकर उसका सही उपयोग नहीं कर पाते हैं। आलसी व्यक्ति अकर्मण्य होता है। इसलिए उसे दरिद्रता भी जल्दी ही आती है। आलसी व्यक्ति उत्साही नहीं होने के कारण जीवन में अक्सर असफलता का सामना करते हैं।

ज्ञान बोध

## व्यर्थ का एहसास

शाहिदा बानो

छात्राध्यापिका-बी.एड.

एक ऋषि के पास एक युवक ज्ञान के लिए पहुँचा। ज्ञान प्राप्ति के बाद शिष्य ने गुरु दक्षिणा देनी चाही। गुरु भी अद्भुत थे। उन्होंने गुरु दक्षिणा के रूप में वह चीज मांगी जो बिल्कुल व्यर्थ हो। शिष्य व्यर्थ चीज की खोज में चल पड़ा। व्यर्थ समझकर जब शिष्य ने मिट्टी की ओर हाथ बढ़ाया, तो मिट्टी चीख पड़ी- तुम मुझे व्यर्थ समझ रहे हो ? धरती का सारा वैभव मेरे गर्भ में ही प्रकट होता है। ये विविध रूप, रस, गंध क्या मुझसे ही उत्पन्न नहीं होते ?

घूमते-घूमते उसे गंदगी का ढेर मिला, जिसके लिए उसके मन में घृणा के भाव थे। उसने गन्दगी की तरफ हाथ बढ़ाया, गन्दगी से आवाज आयी, क्या मुझसे बढ़िया खाद धरती पर मिलेगी ? सारी फसलें मुझसे ही प्राण और पोषण पाती हैं। ये अन्न, फल सब मेरे ही रूप हैं, फिर भी तुम मुझे व्यर्थ समझ रहे हो। वह सोचने लगा- मिट्टी, गंदगी के ढेर भी इतने मूल्यवान हैं, तब भला व्यर्थ क्या हो सकता है। तभी उसके मन में आवाज आई कि सृष्टि का हर पदार्थ अपने में उपयोगी है। व्यर्थ और तुच्छ तो वह है, जो दूसरों को व्यर्थ और तुच्छ समझता है। वह अहंकार के सिवा और क्या हो सकता है। शिष्य गुरु के पास गया और उसने क्षमा माँगते हुए कहा कि वह दक्षिणा में अहंकार देने आया है। यह सुनकर गुरु प्रसन्न भाव से बोले- ठीक समझे हो वत्स! अहंकार के विसर्जन से ही विद्या सार्थक और फलवती होती है।



आलेख

## युवा असन्तोष और बदलते परिवेश में उनका दायित्व

संजना पाण्डेय

बी.ए. तृतीय वर्ष

आज का युवा वर्ग आक्रोश और क्रान्ति की भावनाओं से भरा हुआ विद्रोह की ज्वाला को जगाने के लिये उत्सुक दिखाई देता है। तोड़-फोड़ उसकी प्रवृत्ति बन गयी है। पुरानी मान्यताएं और रूढ़ियाँ जब उसके पैरों में उलझ कर उसका मार्ग अवरुद्ध करती हैं तो वह उन्हें सुलझाना नहीं चाहता अपितु अपनी भीम शक्ति का प्रयोग करके उन्हें तोड़ डालता है। वह सब कुछ तोड़ रहा है- पुराने मूल्यों को, व्यवस्था को, अनुशासन को और यहाँ तक कि अपने आपको भी। वह सबको तोड़ते-तोड़ते स्वतः ही टूट जाता है क्योंकि "जब तक समझदारी आती है, यौवन चला जाता है।"- (प्रसाद) जब तक सड़क बन नहीं जाती तब तक कंकरीट पर चलने में असुविधा उत्पन्न करती है किन्तु सड़क के बन जाने पर मन को सुख मिलता है। अभी आज का युवक वैयक्तिक स्वातंत्र्य के मूल्यों को ही स्थापित करने में लगा है। सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था में सुधार के लिये अभी उसके पास समय ही नहीं है। युग के बदल जाने पर जो संध्या काल होता है, उसमें आक्रोश अवश्यम्भावी है और यह युग सन्ध्या काल ही है।

पुरानी और नयी पीढ़ी का संघर्ष शाश्वत है। सदैव यह संघर्ष रहा है और रहेगा। अन्तर संघर्ष की कटुता और तीव्रता का है। युवक नये युग का प्रतिनिधि है और पुरानी पीढ़ी के लोग अपने पुराने युग से जुड़े हुए उसी को सत्य मानते हैं जबकि वे यह भूल जाते हैं कि जब वे युवक थे तो उनके सत्य और उनके बुजुर्गों के सत्य में अन्तर था। वही अन्तर आज भी आ गया है। सत्य शाश्वत कम ही होते हैं और युग सापेक्ष अधिक होते हैं। आज एक दशक में युग परिवर्तित हो जाता है और इतनी तीव्र गति से चलने वाले परिवर्तन में युग के साथ जुड़े रहना आवश्यक है।

आज के युवक में आक्रोश की तीव्रता है। वह पुराने को हटाकर सन्तुष्ट नहीं होता अपितु उसे तोड़ देना एवं नष्ट

कर देना चाहता है। इसका मूल कारण यह है कि चेतना का तो विकास हुआ है किन्तु उपलब्धि के नाम पर उसे केवल नारे ही मिलते हैं। इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। सन् 1967 में रुड़की विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जब दीक्षान्त समारोह भाषण देने खड़ी हुई तो इन्जीनियर की डिग्री प्राप्त करने वाले एक सहस्र युवकों ने खड़े होकर कहा, "हमें भाषण नहीं नौकरी चाहिए" और प्रधानमंत्री उसका समुचित उत्तर न दे सकीं। युवा वर्ग को दी जाने वाली शिक्षा उद्देश्य-विहीन होने के कारण व्यर्थ प्रमाणित हो चुकी है। वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाला युवक भी जब बेकारी और बेरोजगारी से ग्रस्त हो तो उसमें आक्रोश आना स्वभाविक है।

आक्रोश का एक मूल कारण यह है कि एक ओर तो उसे उपलब्धि नहीं हो रही दूसरी ओर सभी राजनैतिक दल उसे उसके अधिकारों के प्रति चैतन्य बना रहे हैं किन्तु पुरानी पीढ़ी से उसे सहानुभूति भी नहीं मिल पाती। सहानुभूति और स्नेह के भाव में वह तोड़-फोड़ का अनुचित मार्ग अपना लेता है। उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों को उनका दृष्टिकोण सहानुभूति से सुनना चाहिए।

जैसा कि हम ऊपर विवेचन कर चुके हैं, आज के युग में प्राचीन नैतिक मान्यताएं व्यर्थ हो चुकी हैं। युवा वर्ग उन नैतिकताओं के विरुद्ध संघर्ष करता है। जो शक्ति सृजन के कार्यों में लगनी चाहिए थी, वह विध्वंस में व्यर्थ हो जाती है। आज का युवक सेक्स को नैतिक मूल्यों से नहीं जोड़ना चाहता किन्तु समाज उसकी कटु आलोचना करता है।

आज का युवा वर्ग क्रुद्ध पीढ़ी का प्रतीक है। वह अमानवीय तत्त्वों से संघर्ष करता है। वह बेरोजगारी और गरीबी के संयुक्त आक्रमण का सामना करता है और गला घोटू वातावरण से निकल भागने के लिए सभी प्रकार की दीवारों को तोड़ देना चाहता है। इस स्थिति में उसे अपने माता-पिता और गुरुजनों तथा उच्च पदाधिकारियों से संघर्ष करने में भी हिचक नहीं होती।

युवा वर्ग के सामने एक बड़ा प्रश्न बेकारी और बेरोजगारी को सुलझाने का है, जो उसके वश की बात नहीं है। जब अपने हाथ में समाधान नहीं होता तो मनुष्य दैव को ही सब कुछ मान



बैठता है अथवा क्रान्ति का मार्ग अपना लेता है। चारों ओर बेकारी और बेरोजगारी के साँप उसे घेर रहे हैं और इस रहे हैं, उसके विष से वह मूर्च्छित नहीं हो रहा अपितु अपने आप को बचाने के लिए जिधर भी उसे दीवारें मिल रही हैं, वह उन दीवारों को तोड़ रहा है और अपने लिये नया मार्ग अपनाने को उत्सुक हो रहा है। आज सरकार का सर्वप्रथम यह कर्तव्य होना चाहिए कि युवा वर्ग को भटकने से रोकने के लिए वह बेकारी और बेरोजगारी जैसे प्रश्नों को सुलझाने का प्रयत्न करे। यह सत्य है कि आज के युग में युवा-वर्ग को अधिक संघर्ष करना पड़ रहा है किन्तु आज के युवा ने विध्वंस का जो मार्ग अपनाया है, वह भी उचित नहीं कहा जा सकता।

युवा वर्ग के मन में पल रहे आक्रोश भाव को शासित करने के लिए यह आवश्यक है कि सरकार, उच्चाधिकारी तथा शिक्षक वर्ग उनके प्रति उदारता और प्रेम का व्यवहार करें। वे कठोरता और दमन की भाषा से नहीं जीते जा सकते। उन्हें तो प्रेम से दबाया जा सकता है। प्रेम से तो पशु भी वश में कर लिये जाते हैं वे तो मानव ही हैं। युवा-वर्ग की समस्याओं को निकट से समझना होगा। सरकार और पदाधिकारी उस समस्या को कितनी गहराई से समझकर उसका विकल्प प्रस्तुत करते हैं, यही भारत के भविष्य का निर्माण करने वाला तत्त्व है।

युवकों की इस समस्या को सुलझाने के लिए शिक्षा में यथाशीघ्र आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। आज की शिक्षा लिपिक बनाने वाली है। उसे सोद्देश्य बनाना ही होगा। बेकारी, बेरोजगारी तथा गरीबी को मिटाने के लिए यथाशीघ्र ठोस कदम उठाने होंगे। केवल भाषणों से बेकारी दूर नहीं होगी, रोजगार नहीं मिलेगा और गरीबी नहीं मिटेगी। यह तो तभी सम्भव होगा, जब संकल्प करके कोई कदम उठाया जाएगा।

अब वह समय आ गया है, जब हमें अपने समाज में भी यथेष्ट परिवर्तन करने होंगे। विवाह में युवक-युवतियों को पूर्ण छूट देनी होगी। दहेज-प्रथा को कानूनन अपराध घोषित करना होगा तथा युवकों के प्रति मैत्री-भाव रखना होगा। सामाजिक रूढ़ियों को समाप्त करना होगा। प्राचीन जाति व्यवस्था रोगग्रस्त हो चुकी है, उसे नवीन रूप देना होगा और अन्तर्जातीय विवाहों को स्वीकार करना पड़ेगा।

युवा वर्ग ही देश के कर्णधार है, इसलिए उनकी समस्याओं को समझना भी आवश्यक है। समाज में अपेक्षित परिवर्तन करके युवकों को सामाजिक न्याय दिलाने का प्रयत्न भी किया जाना चाहिए। आशा है युवक संयमित होकर अपना अपने समाज का और अपने राष्ट्र का नवीन भवन बनाने में प्रयत्नशील होंगे तथा ध्वंसकारी प्रवृत्तियों को समाप्त कर देंगे।

दर्शन

**हताशा**

सुष्मिता पाण्डेय

छात्राध्यापिका-बी.एड.

हताशा कहती है, मैं क्यों न तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक दूँ। आखिर तुम जिस उल्लास, जिस सफलता के रंग से सराबोर होना चाहते हो, उसका वजूद मेरे बगैर कहाँ है। वह कहती है मैं तो अपन काम करती हूँ तुममें हिम्मत हो तो मुझसे उबरो, मुझे परास्त करो। सच्ची बात यह है कि हताशा का हिसाब किताब दुरस्त है। जीवन में यह मायने नहीं रखता कि तुमने कितने वार किए, यह मायने रखता है, तुमने कितना सहा। उन वारों को सहते हुए, लड़खड़ाते हुए किस तरह डटे। हताश खुद में निहित एक बाधा है, जो आपकी पहचान का पैमाना तय करती है।

एक कहावत है- हथौड़े की चोट शीशे को तोड़ देती है लेकिन लोहे को फौलाद बनाती है।

सवाल यह है कि आप हताश के चक्रव्यूह में उलझ शीशे में बदल जाते हैं या चोट खाकर लोहे में ढल जाते हैं।



‘नमामि गंगे’  
प्राचीन मूर्ति शिल्प विरासत के विशेष  
सन्दर्भ में

डॉ. मीनू अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग

‘गंगा’ का पौराणिक निवर्चन है- ‘गां गता’ अर्थात् जो पृथिवी की ओर गई है। गंगा दिव्यता की नदी है, भाव्यता की नदी है, गंगा संस्कृति और सभ्यता की नदी है। सुमित्रानन्द पंत के शब्दों में “वह विष्णुपदी, शिवमौलिसुता, सह भीष्मप्रसू औ जहनु, सुता, वह देव निम्नगा, स्वंगंगा, वह सगरपुत्रतारिणी श्रुता।” है। जगन्नाथ रत्नाकर की काव्याभिव्यंजना से गंगा ‘त्रिविक्रम के विक्रम की पताका’ और “भगीरथ के पुण्य की पताका” है।

रामायण के अनुसार गंगा हिमवान और मैना की बड़ी कन्या थीं। विष्णुपद से उत्पन्न होने के कारण उन्हें ‘विष्णुपदी’ कहा गया। आकाश, पृथिवी, पाताल- तीनों पथों को पवित्र करती हुई गमन करती है इसलिए वे ‘त्रिपथगा’ मानी गई। देवीभागवत पुराण के अनुसार गंगा राधाकृष्ण के अंग से आविर्भूत हैं। पौराणिक आख्यानों के अनुसार गंगा और सरस्वती विष्णु की पत्नियाँ थीं किन्तु शाप के कारण वे पृथ्वी लोक पर नदी रूप में आईं। जह्नु की पुत्री होने के कारण ‘जाह्ववी’ तथा राजा भगीरथ द्वारा लाए जाने के कारण ‘भागीरथी’ भी उनका नाम है।

हस्तिनापुर, कान्यकुब्ज, प्रतिष्ठानपुरी, काशी, प्रयाग, पाटलिपुत्र, चम्पा आदि प्राचीन ऐतिहासिक नगरियों के गौरवपूर्ण इतिहास इसी नदी के इर्द गिर्द रचे गए। बड़े-बड़े साम्राज्यों का वैभव विलास इन्हीं के तटों पर सम्भव हो सका। गंगा पथ से व्यापार वाणिज्य समुन्नत हुआ। भारतीय संस्कृति की सनातन धारा में गंगा देवनदी के रूप में मान्य है। गंगा नदी ही नहीं अपितु देवी ‘भगवती’ हैं। आस्था के रंग में अनेक आख्यानों, उपाख्यानों, स्तुतियों, लहरियों से गुंजित, पूजित गंगा की मानवीय कल्पना कर शिल्पियों ने भारत की आस्था और विश्वास को रंग और रूप प्रदान किया, और साहित्यिक वर्णनों की व्याख्या पाषाण जैसे कठोर उपादानों में प्रस्तुत की। फलतः गंगा के मानवीय

अंकन मंदिरों के प्रवेश द्वारों पर तथा स्वतन्त्र रूप से भी मूर्ति शिल्प में किए जाने की परम्परा शुरू हुई।

तारापद भट्टाचार्य ने शालभजिकाओं को नदी देवप्रतिमाओं का आधार माना। कुमारस्वामी का अनुमान है कि सांची की शालभजिकाएँ ही नदियों के मानवीय विग्रह अंकन का आधार बनी होगी। अमरावती के शिल्प में मकरारूढ़ देवी को नदी देवी का रूपांकन माना गया। द्वार के चौखट पर गंगा यमुना के मानवीय अंकन की परम्परा गुप्त काल से प्रारम्भ हुई। मध्यप्रदेश में उदयगिरि की गुफा सं. 6 की भित्ति पर गंगा और यमुना जलकुम्भ लिए अपने-अपने वाहन-मकर और कूर्म के साथ-प्रवाहित नदियों के बीच सागर तक जाते हुए दिखाई गई हैं, यहाँ सागर में सागर देवता वरुण को भी दिखाया गया है। पाषाण पर भी शिल्पी की कल्पना कवि की तरह लयात्मक हो गई है। लगभग 500 ई. की बेसनगर की गंगा की मृण्मूर्ति में गंगा मकर वाहन पर त्रिभंग मुद्रा में, वृक्ष के नीचे खड़ी है। गुप्त कालीन देवगढ़ के दशावतार मंदिर में प्रवेश द्वार पर दाहिनी ओर ऊपर की ओर मकरारूढ़, घट लिए छत्र के नीचे गंगा का अंकन है। उ.प्र. में बरेली जिले में अहिच्छत्र नामक स्थान से शिव मंदिर के द्वार पर एक ओर उत्कीर्ण गुप्तकालीन गंगा की मृण्मूर्ति में गंगा को घट लिए दिखाया गया है। फतेहपुर में लदगवाँ से गंगा के मानवीय विग्रह के अंकन मिलते हैं। प्रतीहार काल में प्रारम्भिक चरण में द्वार स्तम्भ के केन्द्रीय निचले भाग में गंगा अपने वाहन मकर के साथ घट लिए प्रदर्शित की गई तो अन्तिम चरण के मंदिरों में द्वार अभिमुखी नदी मानवीय विग्रह घट उठाए चित्रित किए गए। चालुक्यकाल और राष्ट्रकूट काल में भी गंगा यमुना के मानवीय विग्रहों के अंकन की परम्परा पर्याप्त विकसित रही। अजन्ता की एक गुफा के बाहर द्वार चौखट के दोनों ओर ऊपरी छोर पर ही मकर पर खड़ी, फल से लदे वृक्षों के नीचे देवी प्रदर्शित हैं। एलोरा की गुफा संख्या 21- रामेश्वर गुफा के उ.प्र. स्तम्भ पर गंगा यमुना के अंकन हैं। मकरवाहिनी गंगा का बायाँ हाथ एक छोटे यक्ष पर टिका है जिसे ओ. सी. गांगुली ने गंगा पुत्र कहा है। एलोरा की ही गुफा सं. 16 में राष्ट्रकूट कालीन कैलाश मंदिर में मध्य में गंगा, बायीं ओर यमुना और दाहिनी ओर सरस्वती को क्रमशः मकर, कूर्म और गज पर आरूढ़ दिखाया गया है। नदी देवियों का यह संयोजन महत्त्वपूर्ण है।

इलाहाबाद में गंगा के प्राचीन मानवीय विग्रहों के उदाहरण



ज्ञात हैं। इलाहाबाद संग्रहालय में कौशाम्बी के नवीं सदी के सूर्य मंदिर के चौखट पर दाहिनी द्वार शाखा पर, रामनाथपुर से प्राप्त द्वारतोरण के दाहिने खण्ड पर, भीरपुर में खुले खेत में नष्टप्राय दसवी सदी के प्राचीन मंदिर के द्वार स्तम्भ पर, गढ़वा स्थित बारहवीं सदी के पुराने मंदिर के द्वार पर मकरारूढ़ त्रिभंग मुद्रा में, घट लिए गंगा के मानवीय अंकन मिलते हैं। छिड़ी में नए मंदिर के द्वार के दोनों ओर की दीवार पर प्राचीन नष्ट हो चुके मंदिर के फलक को लगा दिया गया है जिस पर एक ओर गंगा त्रिभंग मुद्रा में अपने प्रतिहारी के साथ खड़ी दिखाई गई है। प्रारम्भिक मूर्तियों में नदी देवी के ऊपर वृक्ष शाखाएँ दिखाई गईं, आगे चलकर वृक्ष का स्थान छत्र ने ले लिया, जैसे देवगढ़ की नदी प्रतिमा। छत्र राजनीतिक साम्राज्यिक समप्रभुता का प्रतीक था। पुनश्च छत्र कमल की आकृति में बदल गया जैसे बिलासपुर में खरोद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर की नवीं दसवीं सदी की प्रतिमा में। कमल भारतीय संस्कृति का, धार्मिकता का प्रतीक था।

महाविद्यालय में स्थापित 'धरोहर' संग्रहालय एवं कला वीथिका में गंगा का मूर्ति फलक है। यह इलाहाबाद संग्रहालय में संरक्षित खजुराहों के मंदिर के द्वार स्तम्भ पर उत्कीर्ण अंश की प्रतिकृति है, इसमें मकरारूढ़ गंगा घट लिए मानवीय रूप में प्रदर्शित हैं। यह धरोहर भारतीय संस्कृति की उस विचारधारा का वाहक है जिस परम्परा में मंदिरों के द्वार पर पार्श्व भागों में नदी देवियों को दिखाने की परम्परा थी, नदियाँ देवतुल्य, मोक्षदायिनी और पुण्य तोया थी, नदियों के जल पवित्रता के द्योतक थे। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में पवित्रता और स्वच्छता को, एतदर्थ जल को, तत्पश्चात् देव नदियों को धार्मिक आस्था के परिप्रेक्ष्य में देखा गया और नदियों को देवमंदिरों में मानवीय रूप में प्रतिष्ठापित करने की परम्परा हुई। हिन्दू विश्वास के अनुसार गंगा में स्नान से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। गंगा अपनी पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है। देवालय में प्रवेश से पूर्व पवित्रता और भक्ति भाव जरूरी है। इसी प्रतीकात्मकता को दर्शाने के लिए द्वार चौखटों पर गंगा-यमुना के अंकन किए गए रहें होंगे। अग्नि पुराण में शिव की उपासना से पूर्व गंगा यमुना को द्वार पर पूजने का वर्णन मिलता है। प्रतिमा शास्त्र में घटधारिणी देवी के रूप में नदियाँ बनाई गईं। विष्णुधर्मोत्तर

पुराण में कहा गया है कि नदियाँ सशरीर अपने-अपने वाहनों सहित त्रिभंग मुद्रा में हाथों में पूर्ण कुम्भ लिए दिखाई जाए- "सरिता सशरीराणां वाहनानि प्रदर्शयेत् । पूर्णकुम्भकराः कार्यास्था नमित जानवः।।" तदनुसार कलाकार ने अपने कुशल हाथों से मिट्टी में और पाषाण जैसे कठोर उपादान में भी गंगा के मानवीय रूप को अभिव्यक्ति दी। कालिदास ने कुमारसम्भव में शिव विवाह के समय देवता के दोनों ओर चर्वर लिए गंगा और यमुना की मूर्तियों का जिक्र किया है- "मूर्ते च गंगायमुने तदानीं से चामरे देवमसौ...।"

गंगा का वाहन मकर है। अग्नि पुराण में 'मकरे जाह्वी' और 'कूर्मगा यमुना' का उल्लेख है। परम्परागत रूप से मकर एक जलीय प्राणी है। मकर से तात्पर्य - बारह राशियों में एक मकर राशि, आठ निधियों में एक निधि- मकर निधि, कामदेव का प्रतीक चिह्न- मकरध्वज, मकरकुण्डल के रूप में आभूषण, जलदेवता वरुण का वाहन- मकर। मकर भारतीय संस्कृति में गंगा के मानवीकृत रूप का भी वाहन स्वीकार कर लिया गया और प्रायः उपलब्ध गंगा प्रतिमाएँ मकरारूढ़ ही दिखाई गईं। पूर्णकुम्भ गंगा मूर्तिशिल्प की दूसरी प्रमुख पहचान है।

गंगा- सुरसरिता, देवनदी, स्वर्ग की शाश्वती प्राण धारा, जो विश्व के जटाजूट में स्वर्ग से उतरी है। "अनन्त पंचभूत ही शिव की जटाएँ हैं, भूतों में प्राण का अवतार, यही गंगा के अवतरण का रहस्य है।" शैव धर्म में गंगाधर शिव की जटाओं पर गंगा का अंकन किया गया। कवि पद्माकर ने गंगालहरी में इस स्वरूप को इस प्रकार व्यक्त किया है- "संभु पर ज्योति जटाजूटन अपार है। संभु जटाजूटन पै चन्द की छुटी है छटा, चन्द में छटान पै छटा है गंगाधार की।" एलोरा की गंगाधर शिव के साथ पार्वती और ऊपर गंगा है, एक चौड़ी लम्बवत रेखा जलधारा के रूप में नीचे गिरते हुए प्रदर्शित है जिसे शिव अपनी जटा की दाहिने हाथ से आगे की ओर विस्तार कर उस जलधारा को ग्रहण कर रहें हैं। धरोहर संग्रहालय एवं कला वीथिका में नेपाल से प्राप्त 1026 ई. का एक मूर्तिफलक है जिसमें शिव-पार्वती के साथ अन्नपूर्णा और गंगा का भी अंकन है। कला के इतिहास में यह अपने तरह का विरल अंकन है। शिव के मस्तक के ऊपर चतुर्भुजी गंगा मानवी रूप में, दोनों हाथों से कुम्भ लिए हुए, उत्तानापाद रूप से मानो स्वर्ग से अवतरण की मुद्रा में है, कुम्भ से मानों जल की धारा शिव के मस्तक पर गिर रही है। गंगा ने शिव की जटाओं में बसेरा बसा



लिया है, पार्वती शिव के साथ है, उन्हे गंगा पर शिव का लगाव भला क्यों भाया ? गंगा को जटाओं में धारण करने के कारण शिव 'गंगाधर' कहलाए। यह प्रतिमा विशिष्ट और विरल है और पौराणिक आख्यान को कला में अभिव्यक्ति देने का प्रयास प्रतीत होती है। पुराणों में गंगा को पार्वती की सौत, शिव की प्रिया, त्रिलोचन की जटा से निकलने वाली कहा गया है। ब्रह्म पुराण में आख्यान है कि महेश्वर की जटा में रहने वाली जलदेवी को पृथ्वी पर लाने वाले दो व्यक्ति थे- गौतम ओर भगीरथ। जब ब्रह्मा के कमण्डलु का जल शिव की जटाओं में गंगा बन आया तब शंकर की प्रीति गंगा में अधिक हो गई, शंकर ने जटा में गंगा को छिपा लिया, उस समय उमा गंगा को सिर पर प्रतिष्ठित देखकर इस बात को सहन न कर सकीं। जटाजूट में स्थित गंगा को बार-बार देख कर गौरी ने शंकर से उन्हें हटा देने को कहा। लेकिन रसिक शंकर ने उत्तम रस देने वाली गंगा को नहीं हटाया। गौरी ने विनायक, जया और स्कन्द से कुछ उपाय करने को कहा ताकि गंगा पृथिवी पर चली जाए। अकाल पड़ने पर गौतम ऋषि का ही आश्रम बचा रहा। गौतम की ख्याति सुनकर गणेश, स्कन्द ओर जया के प्रयासों से गौतम ऋषि ने त्रिलोचन शिव की स्तुति करके उन्हें गंगा को छोड़ने को कहा। शंकर की जटा से निकल कर गंगा का एक अंश पृथिवी पर आया, गौतम के द्वारा लाए जाने के कारण उसका नाम 'गौतमी' भी पड़ा। दूसरा अंश जो शिव की जटा में रह गया था उसे भगीरथ द्वारा लाने के कारण '**भगीरथी**' कहा गया। वस्तुतः कहा जा सकता है कि भगीरथ कुशल यांत्रिकी के जानकार- जिन्होंने हिमालय में ऐसे स्रोत का पता लगाया जिसके ग्लेशियर कहीं से रुके थे, उसे निकालने की राह उन्होंने बनाई।

राजा भगीरथ द्वारा गंगा को पृथिवी पर लाए जाने की कथा-गंगावतरण का दृश्यांकन महाबलीपुरम में पल्लव युगीन पाषाण शिल्पियों के हस्तालाघव की अनूठी विरासत है। लम्बे पाषाण पर उत्कीर्ण सातवीं शताब्दी के इस दृश्य में अस्थिमात्र अवशिष्ट भगीरथ गंगा को हिमालय से भूतल पर लाने के लिए एक पैर पर खड़े होकर तपस्या में निमग्न हैं। एक लम्बवत् रेखा द्वारा सम्पूर्ण दृश्य मध्य से दो भागों में विभक्त है, टेढ़ी-मेढ़ी लम्बवत् रेखा ऊपर से नीचे की ओर

गंगा के अवतरण के मार्ग को अभिव्यक्त करता है।

ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित काशी पट्ट पर गंगावतरण जीवन्त हो उठा है और पंडितराज जगन्नाथ की गंगा लहरी का स्मरण करा देता है।

गंगा का नाम **जाह्वी** भी है। पौराणिक कथाओं के अनुसार स्वर्ग से धरती पर अवतरित गंगा के आगे आगे राजा भगीरथ चल रहे थे। उनके पीछे गंगा का प्रबल प्रवाह बह रहा था। संयोगवश भगीरथ के मध्यभाग में ही जह्नु का यज्ञमण्डल और आश्रम पड़ गया। भगीरथी के प्रबल प्रवाह में महामुनि जह्नु की यज्ञस्थली और आश्रम बह गया। जह्नु ने क्रोध के वशीभूत भगीरथी के भीषण प्रवाह का क्षण भर में पान कर लिया। भगीरथ का साहस एक बार तो टूटा पर प्रार्थना से प्रसन्न जह्नु ने फिर से गंगा की धार पृथ्वी पर गिरा दी और जह्नु की पुत्री के रूप में गंगा 'जाह्वी' कहलाई। दक्षिण भारत में चालुक्य काल में पड़दकल में गंगा का अंकन भगीरथ, और जह्नु के साथ मिलता है।

पद्म पुराण में तीर्थयात्रा से सम्बद्ध कुछ नियम दिए गए हैं। इसमें कहा गया है कि "गंगा के जल में थूकना, मलमूत्र, कूड़ा करकट डालना, गंदा जल डालना, गंगा के किनारे शौच महापाप है।" श्रीमद्भागवत के अनुसार यमुना में कालिय नाग द्वारा व्याप्त जलीय प्रदूषण को समाप्त करने के लिए कृष्ण ने यमुना में गिरी गंद को निकालने के बहाने नदी को प्रदूषणमुक्त किया। श्रीमद्भागवत के महानायक श्रीकृष्ण सर्वोत्कृष्ट पर्यावरणविद् कहे जा सकते हैं।

कवि कैलाश गौतम की काव्य अभिव्यक्ति में "आज गंगा उदास है।" भारतीय सांस्कृतिक विरासत में गंगा संस्कृति है, गंगा राष्ट्रीयता है, गंगा लोक कल्याण के लिए, पवित्रता के लिए, तृप्ति के लिए, संतरण के लिए भू पर अवतरित हुई है तो आज गंगा निश्चेष्ट क्यों है ? **भूपेन हजारिका** अपने गीत के माध्यम से गंगा से पूछते हैं-

'विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार, करे हाहाकार,

निःशब्द सदा, ओ गंगा तुम, ओ गंगा क्यों बहती हो ?

इतिहास की पुकार, करे हाहाकार, ओ गंगा की धार !

निर्बल जन को, सबल संग्रामी, समग्रोगामी, बनाती नहीं हो क्यूँ ?

गंगे जननी, नवभारत में भीष्मरूपी सुतसमरजयी जनती नहीं हो क्यूँ ?"



आलेख

## शिक्षा, शिक्षक एवं विद्यार्थी

इंदु  
छात्राध्यापिका-बी.एड.

किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा एक अनिवार्य आवश्यकता है। इसके बिना जीवन अपूर्ण एवं नीरस होता है। जीवन तो पशु-पक्षियों में भी होता है। वे भी खाते-पीते हैं, सोते-जागते हैं। नित्य क्रिया करते हैं। फिर भी वे मानव से भिन्न क्यों। जाहिर सी बात है कि शिक्षा वह वस्तु है जिसके कारण मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न होता है।

शिक्षा का संवाहक शिक्षक, समाज का महत्वपूर्ण अंग होता है। शिक्षक ही किसी व्यक्ति को व्यक्ति कहलाने लायक बनाता है। बच्चा जब जन्म लेता है तो हाड़-मांस-चर्म का एक पुतला मात्र होता है। उसमें न तो कोई संस्कार होते हैं न ही सांसारिक ज्ञान। किन्तु वही बालक, माता-पिता रूपी, शिक्षकों के सम्पर्क में रहकर, बोलना, चलना एवं खाना सीख जाता है। वास्तव में माता-पिता व्यक्ति के प्रथम शिक्षक होते हैं।

शिक्षक का हृदय नारियल के फल के सदृश होता है। वह बाहर से दिखने में कठोर किन्तु अन्दर से अत्यन्त कोमल एवं मधुरता लिए होते हैं। वह छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए ही कठोर होने का नाटक करता है। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि कबीरदास जी ने अपने एक सुप्रसिद्ध दोहे में कहा है-

**गुरु कुम्हार शिशु, कुम्भ है गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।**

**अन्दर हाथ सराहि दे, बाहर बाहै चोट।।**

शिक्षक एवं शिक्षार्थी का सम्बन्ध बहुत व्यापक है। यह केवल स्कूलों तक ही सीमित नहीं होता है। अपितु जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका अस्तित्व पाया जाता है। उदाहरण के लिए- यदि कोई व्यक्ति किसी को हल चलाना सिखाता है तो वह किसान उस व्यक्ति का गुरु होता है और वह व्यक्ति उसका शिष्य। यदि कोई दर्जी किसी को कपड़ा सिलना

सिखाता है तो वह भी उसका शिक्षक है। इसी तरह यदि कोई नाई को बाल काटना सिखाता है तो वह उसका शिक्षक है। कहने का मतलब यह है कि जहाँ कहीं भी कोई कुछ सीखता एवं सिखाता है वहीं शिक्षा का अस्तित्व होता है और शिक्षक एवं शिक्षार्थी का सम्बन्ध बन जाता है।

शिक्षकों का समाज में अद्वितीय स्थान है। इनका मूल्य सर्वोपरि है। बच्चे या विद्यार्थियों के मन में शिक्षकों के प्रति जो आस्था होती है वह कभी-कभी माता-पिता के प्रति भी नहीं दिखती है। उदाहरण के लिये-यदि बालक स्कूल गया और उसके शिक्षकों ने भूलवश एक सवाल गलत लगवा दिया। बच्चे ने सवाल को श्यामपट्ट से उतार लिया। घर आया (बच्चा), उसके पिता ने जब सवाल देखा तो सवाल गलत था। उसने बेटे से कहा- बेटा यह सवाल तुम्हारे गुरु जी ने गलत लगवाया है। बच्चे ने कहा- नहीं, मेरे गुरु जी कभी गलत सवाल लगा ही नहीं सकते आप गलत कह रहे हैं। तो यह है समाज में शिक्षक का आदर। यह है समाज में शिक्षकों का मूल्य।

अब सवाल यह है कि जो शिक्षक, समाज में इतना महत्वपूर्ण है, इतना आदरणीय है क्या वह अपनी जिम्मेदारी से भटक रहा है ? जो समाज में उसके दायित्व है क्या वह उनका निर्वहन बखूबी कर रहा है ? क्या जो सम्मान और आदर शिक्षकों को पहले था वह आज भी है ? निश्चित रूप से कुछ अन्तर आया है। शिक्षार्थियों का वह समर्पण भाव अब नहीं दिखता। इस अर्थ प्रधान युग में शिक्षण एक व्यवसाय मान लिया गया है। शिक्षा अब बेहद औपचारिक हो गयी है। शिक्षक अब इसलिए पढ़ाते हैं क्योंकि सरकार उन्हें वेतन देती है, वे इसलिए नहीं पढ़ाते कि यह उनका शौक है अथवा यह देश सेवा का काम है। शिक्षकों की साख दिनोंदिन गिर रही है। उन्हें अपना सम्मान बचाने के लिए कुछ करना होगा। उन्हें अपने दायित्व को देशसेवा का दायित्व समझना होगा और उसे बखूबी निभाना होगा।





स्मारिका लोकार्पण करते हुए मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट के माननीय न्यायमूर्ति श्री वी.गोपाल गौड़ा। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायमूर्ति डॉ. डी.वाई. चन्द्रचूड़, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन.आर. फारुकी और अम्बेडकर वि.वि. दिल्ली के कुलपति प्रो. श्याम वी. मेनन



अध्यक्षीय उद्बोधन - डॉ. डी.वाई. चन्द्रचूड़  
माननीय मुख्य न्यायमूर्ति इलाहाबाद उच्च न्यायालय



स्वागत एवं रिपोर्ट प्रस्तुति के साथ  
माननीय न्यायमूर्ति श्री अरुण टंडन चेयरमैन, 'दामोदरश्री' कमेटी



विशेष

## 'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह - 2014



सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी और एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में संकल्पित यह परम विशिष्ट सम्मान है। सारस्वत खत्री पाठशाला एवं उससे संचालित शिक्षण संस्थाओं (नवीन शिशु वाटिका, टैगोर पब्लिक स्कूल, शिवचरण दास कन्हैया लाल इंटरमीडिएट कॉलेज तथा सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय) के उन्नायक स्मृतिशेष प्रो.दामोदर दास खन्ना की स्मृति को समर्पित है यह सम्मान। इस राष्ट्रीय सम्मान के लिये उच्च शिक्षा स्तर पर 'अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता' के आयोजन का निर्णय सोसायटी द्वारा दो अक्टूबर 2011 से लिया गया है। वर्ष 2014 के 'दामोदर श्री' राष्ट्रीय सम्मान के प्रथम सत्र में भारत सरकार की पूर्व सचिव डॉ. मंजू शर्मा मुख्य अतिथि थीं। समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे- सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के माननीय न्यायमूर्ति श्री वी. गोपाल गौड़ा। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायमूर्ति डॉ. डी.वाई. चन्द्रचूड़ ने इस समारोह की अध्यक्षता की। समारोह के विशिष्ट अतिथि थे - इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.एन.आर.

फारूकी। 'दामोदर श्री' व्याख्यान माला के अन्तर्गत चतुर्थ व्याख्यान के लिये विशिष्ट अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित थे - प्रो.श्याम वी.मेनन (कुलपति, अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली)। दामोदर श्री राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान - 2014 के निबन्ध का विषय था - 'परिवर्तन की बयार' (Winds of Change) इस प्रतियोगिता में उ.प्र. के अतिरिक्त दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल, केरल, कर्नाटक, गुजरात, बिहार, आंध्र प्रदेश, सिक्किम, तमिलनाडु, झारखंड, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थानों से 327 निबन्ध प्राप्त हुए। इन निबन्धों का मूल्यांकन तीन चरणों में किया गया।

प्रथम एवं द्वितीय चरण के निर्णायक मंडल के सम्मानित सदस्य थे-

माननीय न्यायमूर्ति श्री ए.पी.साही (इलाहाबाद उच्च न्यायालय, इलाहाबाद), प्रो.आर.के.नायडू (पूर्व अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, इ.वि.वि.), प्रो.आर.सी.त्रिपाठी (पूर्व निदेशक, जी.बी.पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान प्रो.के.के.भूटानी (निदेशक-UPTech), प्रो. यू.सी. श्रीवास्तव (जन्तु





विज्ञान विभाग, इ.वि.वि.), प्रो.पूनम मित्तल (डिपार्टमेंट ऑफ बायोकेमेस्ट्री, इ.वि.वि.), प्रो. मनमोहन कृष्ण (अर्थशास्त्र विभाग, इ.वि.वि.), प्रो.जे.एन.भार्गव (डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स एन्ड बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, इ.वि.वि.), प्रो.मृदुला त्रिपाठी (संस्कृत विभाग, इ.वि.वि.), प्रो.अनिता गोपेश (जन्तु विज्ञान विभाग, इ.वि.वि.), प्रो.नमिता पाण्डेय (मनोविज्ञान विभाग, इ.वि.वि.) और डॉ.भारती दास (रक्षा अध्ययन एवं स्त्रैतजिक विभाग, इ.वि.वि.)।

इन निर्णायकों द्वारा सभी निबन्धों का आकलन कर दस श्रेष्ठ निबन्धों का चयन किया गया। जो दस प्रतिभागी चुने गये उनके नाम हैं – प्रतीक धाम (सिमबॉयसिस इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया एन्ड कम्प्यूनिकेशन, पूणे), अमृतेन्दु घोषाल (शोध छात्र अंग्रेजी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी), रविशंकर मेहता (बी.टेक, इलेक्ट्रिकल एन्ड कम्प्यूनिकेशन इंजीनियरिंग, ट्रिपल आई टी, इलाहाबाद), अनामिका मिश्रा (बी.ए.एल.एल.बी.ऑनर्स तृतीय वर्ष, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, दिल्ली), ईशानी मुद्गल (बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष मैट्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय), चारुल पंत (बी.टेक.चतुर्थ वर्ष, वी.आई.टी.यूनिवर्सिटी, वेल्लूर), अंकित पाठक (शोध छात्र, राजनीति विज्ञान, इ.वि.वि.), आकाश सिंह (एम.ए.फाइनेल, दर्शनशास्त्र, इ.वि.वि.), गरिमा सिंह (बी.ए.एल.एल.बी.आनर्स, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, भोपाल, म.प्र.) और अंबिका तिवारी (एम.ए. हिन्दी, इ.वि.वि.)। इन सभी प्रतिभागियों को 12 अक्टूबर 2014 को महाविद्यालय परिसर में निबन्ध प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। इन्हें निबन्ध प्रस्तुति के साथ-साथ निर्णायकों के प्रश्नों और जिज्ञासाओं का भी समाधान करना था।

तीसरे और अन्तिम चरण के निर्णायक मंडल में दो चरणों के निर्णायकों

के अतिरिक्त अन्य दो सम्मानित निर्णायकों को भी रखा गया। उनके नाम हैं— डॉ.जी.सी.श्रीवास्तव, आई.ए.एस.(रिटायर्ड), कुलाधिपति, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, और श्री विभूति नारायण राय आई.पी.एस.(रिटायर्ड)पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय-हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।

अंतिम चरण में पुरस्कार के लिए जिन पाँच प्रतिभागियों का चयन किया गया उनके नाम हैं—

1. अंकित पाठक – 'दामोदर श्री' सम्मान एवं ₹ 1 लाख नगद पुरस्कार।
2. अमृतेन्दु घोषाल – प्रथम उपजेता – ₹ 51 हजार का नगद पुरस्कार।
3. गरिमा सिंह – द्वितीय उपजेता – ₹ 31 हजार का नगद पुरस्कार।
4. अनामिका मिश्रा – सर्वश्रेष्ठ महिला प्रतिभागी – ₹ 31 हजार का नगद पुरस्कार।
5. ईशानी मुद्गल – सर्वश्रेष्ठ स्नातकवर्गीय प्रतिभागी – ₹ 21 हजार का नगद पुरस्कार।

इन पांच पुरस्कारों के अतिरिक्त फातिमा जाफरी को विशेष सक्षम प्रतिभागी (डिफरेंटली एबिल्ड) घोषित किया गया और ₹ 11 हजार नगद प्रदान किया गया।

इस अवसर पर 'स्मृति सम्मान' पत्रिका का लोकार्पण भी किया गया।



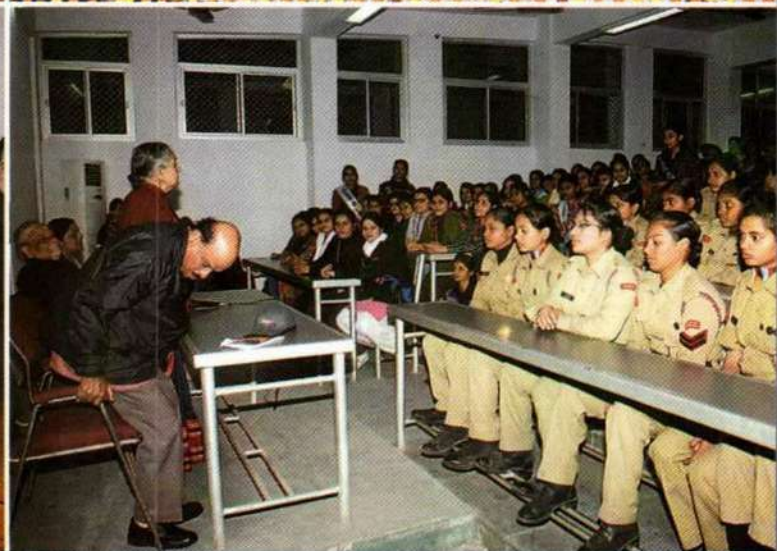
प्रमो 2014-15  
पुरस्कार एवं छात्राएं



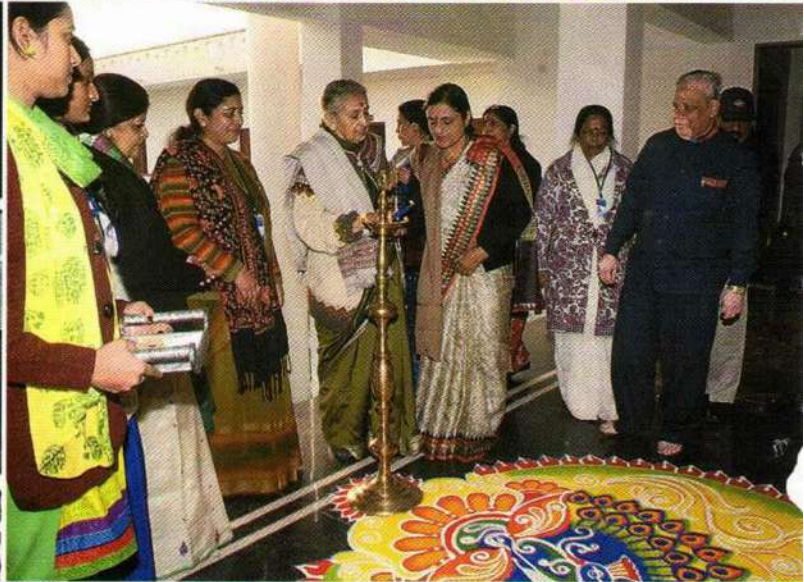


प्रमो 2014-15

# नैक पीयर टीम के साथ









**NAAC ACCREDITATES  
S. S. K. GIRLS' DEGREE COLLEGE,  
ALLD WITH 'A' GRADE WITH A 3.46  
CGPA**

[Rewarding experience]

**Dr. Rita Chauhan**

**Co-ordinator : Steering Committee**

The Standing Committee constituted by THE Executive Committee (NAAC), met on 4th March, 2015 approved the declaration of the Accreditation results of 143 institutions all over the country. Among these S. S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad stands IVth best in the country and tops in U.P. with 3.46 Cumulative Grade Point ( CGPA ) IN 4.00 point scale. As per the latest Accreditation status, an institution scoring 3.01 to 4.00 GGPA will get a Letter Grade 'A' and Performance Descriptor 'Very Good'. Under the new Grading System, CGPA reflects the quality status of the Higher Education Institutions.

It gives me immense pleasure to write my experiences for Re-accreditation (Cycle-II) for further quality sustenance, enhancement and improvement of the College. This exercise has provided us an opportunity to review and analyse the institutional progress after the first accreditation (Cycle-I) and further strengthened in our quest for quality in the times to come. An iconic women institution, the College is striving to carve a niche for itself on the women empowerment map by adopting innovative initiatives , acquiring new skills and employing new techniques.

The Management and Principal of the College decided to constitute Steering Committee for execution of the following details :

- Filing 'LETTER OF INTENTION' ( LIO) with NAAC for Cycle-II accreditation .
- Preparation & Filing of SELF STUDY REPORT (SSR) with NAAC.
- Uploading all information at College Website as per NAAC. Guidelines.
- Gathering and processing all data, information required for SSR.
- To act as facilitator for PEER TEAM VISIT of NAAC.

Steering Committee was constituted with three members :

- Dr. Rita Chauhan [Associate Prof.- Education].....  
Co-ordinator
- Dr. Lalima Singh [Associate Prof.- Sociology].....  
Member
- Dr. Soni Srivastava [ Assistant Prof.-Zoology].....  
Member

After submitting the LOI , we started working towards the preparation of SSR. Together with the Management, Principal, Staff and supporting staff, the whole process of preparing and submitting the SSR was initiated. I would like to express my thanks to Management, Principal of the College, who reposed faith in me in preparing the SSR. I am deeply indebted to them for their unfailing support, co-operation, guidance, inter-personal interactions, suggestions, plan of action during the entire period of preparation of SSR. The SSR was prepared with utmost honesty and sincerity as per norms set by NAAC. The cautious effort was made to involve a broader heterogeneous group of faculty members in the preparation of the collaborative and collective venture of the SSR. Profile of the College, Criterion wise analytic report, Cumulative Evaluation of the departments and SWOC (strengths, weaknesses, opportunities, challenges). The Re- accreditation SSR reflects our post accreditation efforts in scaling new heights and achieving excellence and success in various fields. Preparation of SSR was a herculean task. This SSR is the result of the perseverant grit and passion of the teaching and non-teaching staff of the College, who worked day and night. I extend my thanks to the Management Committee and I also thank the entire teaching community who have contributed in preparing the SSR. Last but not the least I thank the members of supportive staff for their inputs in the preparation of SSR. I also wish to record my heartfelt thanks to all those who directly or indirectly supported me in preparing the SSR.

After the submission of SSR we were eagerly looking forward to welcoming the Peer Team and hope they will appreciate our efforts. On 14th November, 2014 we received the message from Mr. Ponmudiraj [Assistant Advisor, NAAC] that with reference to the Accreditation of our College , the Peer Team comprising of the following members is scheduled to visit our college from 18th-20th December, 2014.

- Prof. [Mrs] Bharti Ray [ Former Pro-VC, University of Calcutta]—Chairperson
- Dr. M.A. Sudhir [Department of Education – Central University of Kerala] --- Member Co-ordinator
- Prof. Deepti Bhalla [Professor – Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi] --- Member
- Dr. Dharmadhikari N. S. [Former Principal – Kholeswar Mahavidyalaya, Beed, Maharashtra] --- Member

After receiving the message of Peer Team visit an urgent meeting of teachers was held with the Principal and Management. Certain instructions / guidance were given to teachers towards preparation of the College for Peer Team visit. Faculty members were entrusted with the following responsibilities with their team members :

- Scrutinizing the SSR -- Dr. Alpana Agrawal
- Co-ordination --- Dr. Rita Chauhan
- College Profile Presentation-- Dr. Rita Chauhan & Dr. Soni Srivastava



- Reception, Documentation & Finance — Mrs Gunjan Sharma
- Cultural Programme --- Dr. Asha Upadhyaya
- Library --- Dr Rachna Anand Gaur
- IQAC --- Dr. Rita Chauhan
- Health Service Cell --- Dr. Archana Tripathi
- Grievance Cell, Interaction with Students — Dr. Lalima Singh
- Computer Centre --- Ms. Shilpi Srivastava
- Museum --- Dr. Meenu Agrawal
- Extension Services & Alumni Association — Dr. Jyoti Kapoor
- Interaction with Parents --- Dr. Ritu Jaiswal
- Eco-club ---- Dr Archana Jyoti
- Interaction with Society, Community & Management, Wall Magazine [Arts] -- Dr. Manjari Shukla
- Placement & Counselling --- Dr. Rita Chauhan & Dr. Soni Srivastava
- Research Cell, U G C --- Dr. Neerja Sachdeva
- Sports --- Dr. Sandhya Arora
- N S S -- Dr. Preeti Singh
- N C C, Rangering --- Dr. Rekha Rani
- Wall Magazine [Science] --- Dr. Deepa Srivastava
- Wall Magazine [Commerce] --- Dr. Meena Chaturvedi
- Wall Magazine [B.Ed.] -- Dr. Surendra Kumar
- Art Gallery --- Mrs. Sangeeta Gautam

All the Teacher Educators of B. Ed. , Teachers of Science Faculty, Music, Painting , Office Management & Secretarial Practices were entrusted to prepare their labs for the observation. The information of NAAC Peer Team visit was soon displayed on all notice boards of the College.

Steering Committee organised orientation meeting separately with students of various faculties, administrative and technical staff, alumni and parents to inform that NAAC Peer Team is scheduled to visit our College from 18th to 20th December, 2014. NAAC is an autonomous organisation established in 1994 by the UGC with headquarter at Bangalore. Our College volunteered for Assessment & Accreditation by NAAC and a Peer Team comprising of eminent experts will be visiting our College to acquaint themselves with the strengths and weaknesses of the institution with reference to quality assurance. The visit is neither an inspection nor an attempt to solve any grievances. The process is to validate the SSR and help the institution in Quality Assurance.

Under the supervision of Dr. Lalima Singh boarding

and lodging arrangements were made in Hotel Yatrik. The College enjoyed the graceful and momentous occasion of the visit of esteemed NAAC Peer Team. The process of assessment adopted by the team was fair and transparent. The Peer Team spent three days on 18th , 19th and 20th of December in our College. On day one the Peer Team was received by the Principal and staff of the College at 9.00 a.m. in the campus and was given a warm welcome by NCC Wing. The Peer Team was first taken to the Principal's office, where Dr. Soni Srivastava presented overall growth and development of the College through power point and the Team Members interacted with Dr. Rita Chauhan on various points of presentation. During three days team visited all the departments and concerned labs, interacted with teaching and non- teaching, Students, Alumni, Parents, Community / Society members, Governing Body / Management/ University Representatives. They also visited all the support services & facilities. A grand cultural programme was organised for the Peer Team in which the students of the college displayed their talents and their diverse cultural backgrounds in Drama, Vocal and Instrumental Music and Dance.

Three day visit of NAAC Peer Team concluded with an Exit Meeting held in the Conference Room of the College. The welcome address for the Exit Meeting was presented by the Principal Dr. Shipra Sanyal, who highlighted the role that College has been playing in shaping the destiny of the women. Speaking on the occasion of the Exit Meeting, Prof. Bharti Ray, Chairperson of the team, shared her observation with College Community . She appreciated our qualified and committed Faculty, supportive and caring Management, healthy student teacher relationship, negligible dropout rate, strategic planning for future growth and IT literate non-teaching staff. For the quality enhancement of our institution she strongly recommended to apply for autonomous status. She also made certain other recommendations, e.g., introducing of a few PG courses, few more UG courses and few corporate need based courses, coaching for competitive examinations, strengthening the placement cell, etc. Proposing the vote of thanks Dr. Rita Chauhan said that NAAC Peer Team visit provoked us to do SWOT analysis of our institution and consequently helped us to march towards excellence. She appreciated the role that was played by different stakeholders ( the supportive Management, the tireless Teaching and Non- teaching staff, the vibrant Student community, the sincere Alumni and the loyal Parents ) the in the successful completion of this academic activity.

The NAAC Assessment and Accreditation is extremely rewarding experience where the entire College participates in introspection, self evaluation and self assessment. It helps to strengthen the competence, creativity and collegiality in the College. NAAC presents not only Accreditation in accordance with internationally accepted standards but also creates a highly motivated and charged atmosphere and promises a bright future.



## साहित्यिक मीडिया और राष्ट्र निर्माण

डॉ. आशा उपाध्याय

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

मीडिया (जन संचार माध्यम) मन बनाता है। इस वाक्य को एक उक्ति की तरह लेने पर यह सवाल भी उठता है कि किसका मन! साधारण-सा उत्तर होगा- मनुष्य का मन, मानव समूह का मन, देश का मन। यदि यह निर्मित सकारात्मक है तो फिर मीडिया अपनी सही भूमिका में है। लेकिन मीडिया यदि मन दूषित करे, नकारात्मकता और अराजकता को बल दे तब क्या होगा! अनर्थ होगा। अमेरिकी प्रेस की आजादी से सम्बन्धित कमीशन ने करीब तीस साल पहले कहा था- "जनसंचार माध्यम विचार और बहस की सुविधा बढ़ा सकते हैं लेकिन उसका गला भी घोट सकते हैं। ये सभ्यता के विकास को बढ़ावा दे सकते हैं, लेकिन उसे रोक भी सकते हैं। वे मानव जाति को भ्रष्ट व अविवेकी भी बना सकते हैं। सब कुछ चयन पर निर्भर करता है कि कैसा समाचार दिया जाय और कैसा न दिया जाय, दिया भी जाय तो किस मौके पर दिया जाय। क्या तथ्य है, क्या नहीं, यह बताने की शक्ति राज्य के मातहत नहीं होनी चाहिए लेकिन यही शक्ति पूँजी केन्द्रीयकरण के हाथ में पहुंच जायेगी तो उसका भयंकर दुरुपयोग संभव है।"

किसी समाज को रचनात्मक, प्रगतिशील और शोषणविहीन बनाना मीडिया का वास्तविक दायित्व होता है। मीडिया अपनी सकारात्मक भूमिका से ही किसी देश का मानसिक निर्माण कर सकता है, उसे जनतांत्रिक और लोकोन्मुख बना सकता है। भारत की मीडिया ने इस देश के मन को बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है और इसमें भी साहित्यिक मीडिया (पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट) की अग्रणी भूमिका रही है। आम जन, किसानों, मजदूरों, युवाओं को जागृत करने से लेकर देश की आजादी के स्वर को मुखर करने में तमाम पत्र-पत्रिकाओं ने अपने कर्तव्य का सम्यक् निर्वहन किया है।

हमारे देश की मीडिया का इतिहास रहा है कि उसने एक विदेशी साम्राज्य से लोहा लिया और अपने रचनात्मक दायित्वों को भी निभाया, चाहे वह विशुद्ध समाचार वाला मीडिया रहा हो या साहित्यिक तेवर वाली पत्रकारिता! ....

थोड़ा पीछे चलकर देखते हैं। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जो 'इतिहास' और विवरण सामने आते हैं वे एक नये भारत के निर्माण की गति और दिशा की ओर साफ संकेत करते हैं। इन्हीं साहित्यिक स्रोतों से चला चलता है कि 1857 की क्रांति का एक मात्र कारण केवल गाय और सुअर की चर्बी के कारतूस नहीं थे और न ही यह केवल धर्म और दीन का मामला था। यह मामला 1757 में प्लासी युद्ध से लेकर 1857 तक यानी पूरे 100 साल के सर्वांगीण शोषण का था। अंगरेजों के खिलाफ विद्रोह की आग पहले से जल रही थी, इसका प्रमाण भूषण की ये पंक्तियां हैं-

करनाट हबस फिरंग हूँ विलायत  
बलख रुम अरितिय छतिया दलति है  
पेसकसें भेजति विलायत पुर्तगाल  
सुनि के सहमि जात कर्नाटक थली है।  
गोंडवानों तिलंगानों फिरंगानों करनाट  
रुहिनालो रुहियन हिये हहरत हैं  
बिलखि बदन बिलखात बिजैपुरपति  
फिरत फिरंगिन की नारी फरकत हैं।।

पद्माकर प्रेम और शृंगार के कवि हैं, लेकिन उन्होंने भी दौलतराय सिंधिया को अंगरेजों से लड़ने के लिए ललकारा-

मीनागढ़ बंबई सुमंद मंदराज, बंग  
बंदर को बंद करि बंदर बसावेगो  
कहे पद्माकर कसकि काश्मीर हूँ को  
पिंजरसो घेरि के कलिंजर छुड़ावेगो

हिन्दी की यह आक्रामक मुद्रा तत्कालीन लेखन के साथ-साथ बाद की साहित्यिक पत्रिकाओं में भी रही। वास्तव में उस दौर के रचनाकार और साहित्यिक पत्रिकाएं एक ओर आजादी के भाव को तरंगायित कर रहे थे तो दूसरी ओर नये भारत के निर्माण की जमीन भी तैयार कर रहे थे। यही काम आजादी के बाद भी तमाम साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने किया और देश को विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने में अप्रतिम योगदान दिया। ऐसे कवियों में ग्वाल कवि, घासीराम, बाबा दीनदयाल गिरि, राम कवि, राजस्थानी कवि मीसण सूरजमल आदि के नाम प्रमुख हैं।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग की पत्रकारिता को देखें तो उसमें एक तरफ देश के स्वतंत्रता संघर्ष का रोमांच था तो दूसरी ओर भाषा को संस्कार देने का। इस युग की पत्रकारिता में अंग्रेजों के कुचकों से जनता को आगाह करने के साथ-साथ उन्हें



अधिकारों के प्रति जागरूक करने का स्वर भी मिलता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'कविवचन सुधा' में पत्र के रूप में जो यात्रा-विवरण दिया है वह तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का जीता जागता दस्तावेज है। उन्होंने एक तरफ 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के माध्यम से 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' इसे आम जन को समझाने का प्रयास किया तो दूसरी ओर 'बालबोधिनी' पत्रिका द्वारा स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए स्पष्ट किया कि कैसे हम स्त्री सशक्तीकरण पर विशेष ध्यान देकर ही देश को विकास और उन्नति के पथ पर ले जा सकते हैं। उन्होंने 'बालबोधिनी' में लिखा है- "विद्वानों को तो मूर्ख का साथ अच्छा नहीं लगता और नीतियों में कहा भी है कि बन्दरों और रीछों के साथ वन-पर्वतों में फिरना अच्छा पर मूर्खों के साथ स्वर्ग में इन्द्र के भवन में भी रहना अच्छा नहीं। उस पर विशेष यह है कि अपने को बड़ा चतुर और रसिक लगाते हैं पर घर में मूर्ख स्त्री को देखकर लाज नहीं करते.....मनुष्य पाठशाला में चाहे जितना पढ़े, मातृशक्ति के बिना कभी उसकी विद्या फलदायिनी नहीं होती।"

भारतेन्दु के 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन' के अतिरिक्त आनन्द कादम्बिनी (प्रेमघन), 'भारत मित्र' (बालमुकुन्द गुप्त), 'हिन्दी प्रदीप' (बालकृष्ण भट्ट), 'सरस्वती' (महावीर द्विवेदी) के अंक एवं लेख भी सामाजिक आर्थिक सरोकारों से युक्त हो राष्ट्र के विकास में सहायक हो रहे थे।

अब तक के अनुसंधानों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 1857 की घटना ने करीब 50 साल तक साहित्यिक पत्रकारिता को सहमाए रखा। भारतेन्दु अपनी पत्रिकाओं में इस दौर की व्याख्या यों करते हैं-

**कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जनबल नासी**

**जिन भय सिर न उठाय सकत कहू भारतवासी।।**

लेकिन इस दौर में भी पं. बाल कृष्ण भट्ट और बाल मुकुन्द गुप्त ने अपनी वही तेवर बनाये रखा, जो 1857 के रचनाकारों का अंगरेजों के प्रति था। 1882 में बाल कृष्ण भट्ट ने लिखा- "हमारा कथन है कि राजभक्ति और प्रजा का हित दोनों का साथ कैसे निभ सकता है। जैसे हँसना और गाल फुलाना, बहुरी चबाना और शहनाई बजाना एक संग नहीं हो सकता, ऐसे यह भी असंभव है।" अंगरेजों के आगे

नतमस्तक हो चुके कुछ बड़े लोगों पर वह कटाक्ष करते हैं- "बनारस, अलीगढ़ आदि स्थानों में दो-एक ऐसे महापुरुष कुलबोरन उपज खड़े हुए हैं जो स्वार्थ लम्पटता के आगे देश के हित पर कुल्हाड़ा चला रहे हैं।" ऐसी ही निर्ममता बालमुकुन्द गुप्त ने अपनी कविताओं और लेखों में दिखायी है। गुप्त जी ने अपने 'शिवशम्भु का चिह्न' में लार्ड कर्जन की जो धुनाई की है, वैसी धुनाई तो शायद ही किसी रचनाकार ने अपने समय के राजनायकों की आज़ादी के बाद भी नहीं की होगी।

प्रताप नारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' पत्रिका में सांस्कृतिक निबन्धों के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक, राजनीतिक विषयों से जुड़े लेखों को रख कर इस नवनिर्माण की शक्ति का विस्तार किया। 'चाँद' पत्रिका राष्ट्र-नव निर्माण की दिशा में एक सशक्त प्रयास माना जा सकता है। इस पत्रिका का चाहे 1927 का अछूत अंक हो या 1928 का फांसी अंक अथवा चांद का स्त्री शिक्षा पर आधारित अंक हो सभी अंक सामाजिक सरोकारों से जुड़ने के साथ-साथ अर्थ तन्त्र को भी मजबूती प्रदान करने में सक्षम थे। 'समालोचक' पत्रिका को चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, गोपालराम गहमरी और बालमुकुन्द गुप्त जैसे अनेक लेखकों ने अपनी रचना से समृद्ध कर भारत में नवजागरण का संदेश दिया। पदुमलाल पुत्रालाल बख्शी, आचार्य शिवपूजन सहाय और प्रेमचन्द ने अपने लेखों से छुआछूत, स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार, बालविवाह का विरोध, विधवा विवाह का समर्थन जैसे अनेक मुद्दों पर सुधारपरक लेखों द्वारा समाज को सचेत किया।

प्रेमचन्द का स्पष्ट मानना था कि पत्रकारिता को अपना हथियार बनाने के पीछे उनका उद्देश्य मनुष्यत्व को ऊपर उठाना और मनुष्य के मन में ऊँचा विचार पैदा करना है। उन्होंने 'माधुरी और हंस' पत्रिका के लेखों और अपने सम्पादकीय द्वारा राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक पराधीनता से मनुष्य को आजाद कराया। ऐसी आजादी ही राष्ट्र को सही दिशा में ले जाती है।

निराला की पत्रिका 'मतवाला' का तो यह मोटो ही था- **अमिल गरल शशि-सीकर राग विराग भरा प्याला, पीते हैं जो साधक उनका प्यारा है यह मतवाला** इस पंक्तियों में ही छिपा था- साहित्य, संस्कृति, समाज, राजनीति और अर्थनीति का अभिनव पाठ। कर्मकांड और शोषण के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करने में निराला की यह पत्रिका प्रमुख थी। उन्होंने अपनी



रचनाओं के द्वारा भारतीय युवकों को संदेश दिया कि वे चाटुकारिता से दूर रहकर अपने भीतर अन्याय और उत्पीड़न के विरुद्ध आग जलायें-

**चूम चरण मत चोरों के तू**

**गले लिपट मत गोरों के तू**

**झटक पटक झंझट को झटपट झोंक भाड़ में मान।**

**आप आप अब न कर अपर को**

**बना बाप मत वंचक नर को**

**अगर उतरना पार चाहता दिखा शक्ति बलवान।।**

गणेश शंकर विद्यार्थी, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, महादेवी वर्मा और शिवदान सिंह चौहान जैसे अनेक साहित्यकारों ने अकाल, महामारी, टैक्स, किसानों को निर्धनता, स्वदेशी, स्त्री शिक्षा पर बल आदि कई मुद्दों पर सीधे और सरल ढंग से लेख लिखकर भारत को जागरूक करने की ईमानदार कोशिश की। ये सभी रचनाकार देश के नवनिर्माण और अपने दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे।

सन् 1948 से 1974 के बीच दैनिक पत्रों के साथ-साथ हजारों साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र-पत्रिकाओं ने साहित्य, राजनीति, समाज, शिक्षा, स्त्री अधिकार, स्त्री शिक्षा, किसान मजदूर, दलित, पिछड़ा, फिल्म, खेल, संस्कृति, धर्म आदि के विविध पक्षों पर समाज को जागरूक करने का काम किया। इन पत्र-पत्रिकाओं में कुछ प्रमुख नाम हैं- अन्तराल निकष, कल्पना, हिन्दी शंकर्स वीकली, सम्मेलन पत्रिका, साहित्य सन्देश, आलोचना, समीक्षा, कादम्बिनी, नवनीत, अनुसंधान, अभिनव भारती, हिन्दी अनुशीलन, सारिका, निहारिका, माया, लोक संस्कृति, कला सुमन, योजना, बाल भारती, पराग, नन्दन, धर्मयुग, हिन्दुस्तान, हंस आदि। ये पत्र-पत्रिकाएं जीवन के सभी सन्दर्भों से जुड़ी थीं।

हम हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को एक 'मिशन' के रूप में देख सकते हैं। जिसमें शीत युद्ध, बांग्लादेशी युद्ध, आपातकाल आदि का चित्रण भारतीय जन-मानस को आत्म मंथन करने के लिए विवश करते हैं। रांगेय राघव, निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय और नासिरा शर्मा के

लेखों ने भारतीय जनता को राष्ट्रीय चेतना से युक्त करने के साथ ही देश के विकास पर सोचने के लिये भी विवश किया। राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद साम्राज्यवादी, व्यक्तिवादी और शोषणमूलक मान्यताओं के खिलाफ पत्र-पत्रिकाओं ने पूरी तरह से कार्य किया। मंहगाई, सांस्कृतिक विचलन, बढ़ती आबादी, भ्रष्टाचार, जाति प्रथा आदि का विरोध और देश को सुदृढ़ता प्रदान करने में इनका अप्रतिम योगदान है। अम्बिका प्रसाद बाजपेयी, विजय सिंह पथिक, वियोगी हरि, देवीदत्त शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी, पांडेय बेचन शर्मा उग्र और अज्ञेय जैसे अनेक रचनाकारों ने भारत और यहां के विभिन्न समाजों को आत्म निर्भर और आत्म सम्मानी बनाने में अपनी लेखनी की पूरी ताकत झोंक दी। इन्होंने सामाजिक आदर्शों से प्रतिबद्ध एवं राष्ट्र नवनिर्माण से सम्पृक्त पत्रकारिता की। इन पत्रकारों ने न्याय, सामाजिक समता, आर्थिक समानता, अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य और रचनात्मक प्रवृत्तियों के पक्ष में अपनी कलम चलायी और कवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्ति 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय अर्पित हो मेरा मनुज काय' को चरितार्थ करने का प्रयास किया। भारत पर चीन हमले ने पत्रकारिता को नयी दृष्टि दी। पत्रकारों ने अपनी प्रौढ़ दृष्टि का परिचय देते हुए देश में नये साहस, उल्लास और संभावनाओं की खोज की और भारत के निर्माण में उनकी दृष्टि अधिक विवेकशील और सतर्क हुई।

हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास के बिना भारत की आजादी और आजादी के बाद भारत के नवनिर्माण का इतिहास नहीं लिखा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि आजादी की लड़ाई के दौरान लोग पत्रकार, साहित्यकार और स्वाधीनता सेनानी- ये तीनों भूमिकाएं एक साथ निभाते थे। आजादी के बाद की पत्रिकाओं और पत्रों ने भी लगभग यही तेवर बनाये रखा और नये भारत के निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज के अधुनातन जनसंचार माध्यमों (मीडिया) में भी यही प्रवृत्ति देखने को मिलती है। पत्र-पत्रिकाएं हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक और मानवीय चेतना की दैनन्दिनी होती हैं। समानता और भाईचारा की भावना का प्रसार उनका मुख्य लक्ष्य होता है। वेब पत्रिकाएं हो या लघु पत्रिकाएं सभी इन उद्देश्यों को पूरा करने में तत्पर हैं।



जिजीविषा

## जीवन संघर्ष और हम

अनीता साहू

छात्राध्यापिका-बी.एड.

एक युवती अपने पिता के पास पहुँची और बोली कि वह अपने जीवन में कुछ विशेष नहीं कर पा रही है। जब उसे लगता है कि उसकी एक समस्या समाप्त हो गई, उसी समय दूसरी सिर उठा लेती है। लड़की के पिता उसे रसोई में ले गए। उन्होंने तीन बर्तनों में पानी भरा और आंच पर रख दिया। उन्होंने पहले बर्तन में आलू डाले, दूसरे बर्तन में अंडे और तीसरे में कुछ कॉफी बीन्स। वह वहीं खड़े हो गए और बेटी को भी कहा कि वह कुछ देर इंतजार करे। करीब 20 मिनट बाद उसके पिता ने बर्नर बंद कर दिए। इसके बाद उन्होंने तीनों बर्तन एक-एक कर उतारे और लड़की के सामने रख दिए। फिर उन्होंने आलू, अंडों और कॉफी बीन्स को अलग-अलग बर्तन में निकाल कर रख दिया और अपनी बेटी से बारी-बारी से उसे देखने को कहा और पूछा कि क्या परिवर्तन नजर आ रहा है? लड़की बोली आलू पक कर नरम हो गये हैं, अण्डे पक कर कड़े हो गए हैं और अंत में कॉफी पीने को कहा।

लड़की ने पिता जी से पूछा कि इस सबका क्या

मतलब हुआ? पिता जी ने उत्तर दिया कि आलू, अण्डे और कॉफी बीन्स के सामने भी गर्म पानी में उबलने की चुनौती आ खड़ी हुई थी, लेकिन उन सब ने उसका सामना किया, अलग-अलग ढंग से। आलू अपने कच्चे रूप में सख्त और मजबूत होते हैं, लेकिन खौलते पानी में उबल कर वह नरम और कमजोर पड़ गए। अंडे कमजोर होते हैं, उनका बाहरी खोल भीतर के तरल को बचा कर रखता है।

उबाले जाने के बाद उनका अंदरूनी तरल सख्त हो गया और उसे सुरक्षा की जरूरत नहीं रही। वहीं कॉफी बीन्स हालांकि सख्त होती है, परन्तु पानी में उबलने के बाद उन्होंने पानी का रंग बदल उसे नया स्वाद दिया।

'तुम क्या बनना चाहती हो?' लड़की के पिता ने पूछा 'जब विपरीत परिस्थितियाँ तुम्हारे सामने आ खड़ी होती हैं, तुम कैसे उनका सामना करोगी? तुम आलू हो, अंडा हो या फिर कॉफी बीन्स यह तुम्हें सोचना है?'

कहानी बताती है कि जीवन में हमारे सामने कई तरह की परिस्थितियाँ आती हैं, परन्तु जीवन का लक्ष्य ही होना चाहिए परिस्थितियों के अनुसार बदलना, जिसके जरिए ही हमारे अंदर चीजों को सकारात्मक तरीके से देखने की क्षमता विकसित होती है।

कौआ कौआ ही रहता है, गरुड़ नहीं बनता।

जीवन मंत्र

### अमूल्य कथन

शालिनी आनन्द

बी.ए. प्रथम वर्ष

- ♦ ईर्ष्या असफलता का दूसरा स्वरूप है। ईर्ष्या करने से अपना ही महत्त्व कम होता है। आप कार्य में सफल हों ईर्ष्या नहीं होगी।
- ♦ जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है, वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है।
- ♦ मनुष्य गुणों से उत्तम बनता है, न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। जैसे ऊँचे महल के शिखर पर बैठकर भी

- ♦ बुद्धि, कुलीनता, इन्द्रियनिग्रह, शास्त्रज्ञान, पराक्रम, अधिक न बोलना, शक्ति के अनुसार दान और कृतज्ञता- ये आठ गुण पुरुष की ख्याति बढ़ा देते हैं।
- ♦ ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति को सत्य तथा असत्य में एक को चुनने की शक्ति देता है, यह मनुष्य पर है कि वह किसको चुनता है।
- ♦ कार्य करना जीवन के आनन्द के लिए आवश्यक है, कार्य करते समय मनुष्य अपने दुखों को भी भूल जाता है।



प्रमो 2014-15

# शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएं - झलकियाँ





## शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएं - झलकियाँ



विशिष्ट, प्रतिभावान और संवेदनशील मानव संसाधन विकसित करने के उद्देश्य से अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 1975 में स्थापित एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय कला, विज्ञान, वाणिज्य तथा बी.एड.संकाय में अध्ययनरत लगभग 3000 छात्राओं को स्वावलम्बी और विवेकशील बनाने हेतु निरन्तर प्रयासरत है।

छात्राओं की ऊर्जा को संरचनात्मक दिशा देने में गम्भीर शैक्षिक वातावरण और छात्र सहयोगी सेवाओं का अत्यन्त महत्त्व है। महाविद्यालय में अध्ययन की सुविधा हेतु वातानुकूलित, कम्प्यूटरीकृत श्यामनाथ कक्कड़ पुस्तकालय में लगभग 25000 पुस्तकें, अनेक संदर्भ ग्रन्थ, समाचार पत्र, उच्चस्तरीय पत्रिकाएं, जर्नल्स और श्रेष्ठ उपन्यास उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त बी.एड. की छात्राध्यापिकाओं को स्वाध्याय के लिये प्रेरित करने हेतु विभागीय पुस्तकालय की भी व्यवस्था है। न्यूनतम मूल्य में छात्राओं को फोटोकॉपी की सुविधा भी पुस्तकालय द्वारा दी जाती है। छात्राओं को DELNET एवं INFLIBNET के माध्यम से Online e-books पढ़ने की सुविधा भी प्राप्त है। निर्धन छात्राओं को Book Bank द्वारा भी पुस्तकें दी जाती हैं।

अकादमिक प्रतिभा को सम्मान प्रदान करना शैक्षिक उन्नयन की अनिवार्य कड़ी है। दिनांक 21.11.2014 को पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा 'संवाद यात्रा' कार्यक्रम में वार्षिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वाली छात्राओं का विवरण इस प्रकार है - कला संकाय की श्रेया त्रिपाठी को मनोहर दास खन्ना स्वर्ण पदक,

विज्ञान संकाय की दीपिका श्रीवास्तव को डॉ.मधु टण्डन स्मृति स्वर्ण पदक एवं रामभूषण मेहरोत्रा स्वर्ण पदक, वाणिज्य संकाय की गौरांगना खन्ना को गायत्री राजनारायण धवन स्वर्ण पदक, बी.एड.संकाय की अपर्णा माथुर शर्मा को अशोक मोहिले स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। महाविद्यालय के समस्त संकायों की छात्राओं में सर्वतोमुखी छात्रा के रूप में श्रीमती अपर्णा माथुर शर्मा को प्रेसीडेन्ट स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। बी.कॉम. प्रथम वर्ष की अनम फातिमा, द्वितीय वर्ष की शिवि मेहरोत्रा एवं तृतीय वर्ष की गौरांगना खन्ना को सत्र 2013-14 की वार्षिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर एस.के.पी. सोसायटी द्वारा 11000 की छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। इसके अलावा नेहा मेहरोत्रा को विशिष्ट पुरस्कार के रूप में तथा NCC की दुर्गेश नन्दिनी एवं ज्योति पाण्डेय को विशेष उपलब्धि के लिये 1100-1100 की धनराशि चेक द्वारा प्रदान की गई।

महाविद्यालय में दिनांक 19.2.2014 को तीन दिवसों के लिये आई राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद (NAAC) टीम की अध्यक्ष प्रो. श्रीमती भारती रे और समन्वयक सदस्य डॉ.एम.ए.सुधीर, प्रो.दीप्ति भल्ला-सदस्य, डॉ. धर्माधिकारी एन.एस.-सदस्य द्वारा प्रत्येक संकाय में वर्ष 2013-14 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। बी.ए.प्रथम वर्ष की एमन इफतेखार, द्वितीय वर्ष की नम्रता मिश्रा एवं तृतीय वर्ष की श्रेया त्रिपाठी ने, बी.एस-सी.प्रथम वर्ष की तस्बीहा ताब जरीन, द्वितीय वर्ष की तनु रिया एवं तृतीय वर्ष एवं बायोटेक्नोलॉजी में दीपिका श्रीवास्तव ने, बी.कॉम प्रथम वर्ष की अमन फातिमा, द्वितीय वर्ष की स्वाति द्विवेदी, तृतीय वर्ष की गौरांगना खन्ना ने





एवं बी.एड. में अपर्णा माथुर शर्मा ने प्रथम स्थान अर्जित कर पुरस्कार प्राप्त किया। अधिशासी निकाय के कोषाध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्रबन्धक, श्री दिलीप मेहरोत्रा ने प्रत्येक वर्ष में द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया। कला संकाय में बी.ए. प्रथम वर्ष की सफीना खातून व सोनिश अली, द्वितीय वर्ष की शुभ्रा पाण्डेय व तहरीन फातिमा अंसारी व तृतीय वर्ष की सविता द्विवेदी व हिमानी शर्मा ने क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार विज्ञान संकाय में प्रथम वर्ष की सैयदा फौजिया इकबाल व फरहीन सिद्दीकी, द्वितीय वर्ष की सारा हसन व ऐश्वर्या पाण्डेय तथा तृतीय वर्ष की आलिया शमशाद नकवी व अफ़शीन बेगम ने द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर सम्मान प्राप्त किया। वाणिज्य संकाय में प्रथम वर्ष की सायमा अमन व नाजिश फातिमा, द्वितीय वर्ष की सुष्मिता जायसवाल व शिवि मेहरोत्रा तथा तृतीय वर्ष की श्वेता सिंह राठौर व रितिका श्रीवास्तव ने क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर सम्मान प्राप्त किया। बी.एड. संकाय में आकांक्षा भट्ट ने द्वितीय व निदा तारिक हफीज ने तृतीय स्थान प्राप्त कर सम्मान प्राप्त किया।

अनुशासन सफलता का मुख्य आधार है। इसी विचार के अनुरूप महाविद्यालय में अनुशासन व्यवस्था हेतु प्रॉक्टोरियल बोर्ड में सत्र के प्रारम्भ में ही मतदान विधि से छात्र परिषद का गठन किया गया। प्रेसीडेन्ट के रूप में अंकिता यादव, वाइस प्रेसीडेन्ट काशिफा इतरत, सेक्रेटरी, सोनिश अली एवं ज्वाइंट सेक्रेटरी के रूप में मेघना सिंह का चुनाव किया गया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक संकाय से पाँच छात्र प्रतिनिधियों का चयन किया गया है, जिनकी सहायता से छात्राओं में आइडेन्टिटी कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, हेलमेट तथा वेशभूषा सम्बन्धित निर्देशों का पालन सुनिश्चित कराया गया। इस वर्ष प्रोक्टोरियल बोर्ड द्वारा Traffic Rules Awareness Programme भी आयोजित कराया

गया, जिसमें Traffic Police के अधिकारियों ने छात्राओं को सड़क सुरक्षा के सम्बन्ध में जानकारी दी।

छात्राओं की कल्याण नीतियों के सफल कार्यान्वयन हेतु महाविद्यालय में छात्र कल्याण परिषद कार्यरत है, जिसका उद्देश्य छात्राओं की समस्याओं का निस्तारण करना तथा उनकी रचनात्मक और सृजनात्मक प्रतिभा को विकसित करना है। इस वर्ष छात्राओं के सर्वांगीण विकास और करिअर निर्माण हेतु रोजगारपरक कार्यशाला एवं व्याख्यान का आयोजन परिषद द्वारा किया गया। छात्राओं के मनोरंजन तथा उनमें निहित प्रतिभा को मंच प्रदान करने हेतु फ्रेशर फंक्शन एवं फेयरवेल का भी आयोजन किया गया। छात्राओं के लिए संगोष्ठी एवं परिचर्चा के साथ-साथ शैक्षिक भ्रमण का भी परिषद द्वारा आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में Placement Cell के अन्तर्गत अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। दिसम्बर माह में आयोजित कार्यशाला का विषय था- Job Opportunities in Banking Sector कार्यशाला में श्री अमित जेतली, ग्रुप डायरेक्टर, Eduskill Technology pvt.Ltd. ने Banking Sector में Job opportunities के बारे में छात्राओं को जानकारी दी। जनवरी माह में दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं। पहली कार्यशाला का विषय था - Bio Science Job opportunities: Biotech Industries Need You. इसमें छात्राओं को Biotechnology के क्षेत्र की Top Industries के बारे में बताया गया। द्वितीय कार्यशाला का विषय था - NASS COM & NAC-Tech जिसमें मि.शौकत (T.C.S) ने छात्राओं को NAC-Tech Online Exams को बारे में जानकारी दी। इसमें छात्राओं को बताया गया कि उक्त परीक्षा में जिन छात्राओं का स्कोर 60% से अधिक होगा उन्हें NCL, TCS, Wipro, Infosys, Cognizant आदि कम्पनियों में नौकरी मिल सकती है।

महाविद्यालय विस्तार कार्य समिति का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को



सामाजिक सरोकारों से जोड़कर निर्धन, उपेक्षित और अक्षम जन के जीवन स्तर में सुधार एवं उत्थान हेतु समुचित प्रयास करना है। इसके अन्तर्गत सितम्बर माह में अशिक्षित प्रौढ़ नागरिकों हेतु साक्षी भारद्वाज, शायना परवेज, रीतिका जायसवाल, मानसी श्रीवास्तव द्वारा स्लेट, मोबाइल, लैपटॉप द्वारा साक्षरता एवं शिक्षा अभियान चलाया गया। नवम्बर माह में विस्तार कार्य परियोजना से संबंधित शिक्षक वर्ग एवं छात्राओं ने राजअन्ध विद्यालय के छात्र छात्राओं से मिलकर उनकी शिक्षा के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की तथा उनकी अन्य समस्याओं का निराकरण करने का आश्वासन दिया। जूनियर हाईस्कूल के छात्र छात्राओं को महाविद्यालय की प्रज्ञा मिश्रा व संजना पाण्डेय ने सामान्य ज्ञान, प्रज्ञा मिश्रा, अर्चिता पाण्डेय व सविता पाण्डेय ने स्वास्थ्य संरक्षण एवं स्तुति श्रीवास्तव, ज्योति मिश्रा, सोनाली, निधि दास एवं आस्था मालवीय ने गायन का प्रशिक्षण दिया। वैशाली वर्मा, रेनू पाण्डेय, श्रेया श्रीवास्तव फरहीन खान ने छात्र-छात्राओं को खाद्य सामग्री वितरित की। बाल दिवस के अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के बच्चों को परिसर में एकत्रित कर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। "दीप से दीप जले, पढ़े सब बढ़े सब" इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बी.ए.तृतीय वर्ष की ज्योति सिंह ने प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को बाल शिक्षा साक्षरता, सामान्य ज्ञान व गायन का प्रशिक्षण दिया। महाविद्यालय छात्राओं में सामाजिक सेवा भाव एवं मानवीय गुणों को विकसित करने के उद्देश्य से संबंधित शिक्षिकाओं और छात्राओं द्वारा करेली स्थित कुष्ठ आश्रम जाकर दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुएं तथा खाद्य सामग्री का वितरण किया गया और उन्हें स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का प्रयास भी किया गया।

**महिला सहायता प्रकोष्ठ** के अन्तर्गत **चित्रकला विभाग** की छात्राओं द्वारा 'महिला सशक्तीकरण एवं महिला जागरूकता' विषय पर बनाये गये चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय नियम व निर्देश सम्बन्धी सूचनाओं के आदान प्रदान एवं छात्र सहयोगी सेवाओं तथा अकादमिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्राओं की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिए एवं कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा बी.एड.संकाय में अलग अलग शिक्षक-अभिभावक संघ की बैठक आयोजित की गई। बैठक में अभिभावकों से छात्राओं की 75% उपस्थिति की अनिवार्यता, हेलमेट व लाइसेंस की अनिवार्यता, शिक्षण कें माध्यम संबंधी कुछ विषयों में होने वाली कठिनाइयां व विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों के सम्बन्ध में विचार विमर्श किया गया। अभिभावकों द्वारा दिये गये परामर्श से अधिशासी निकाय के सदस्यों को भी अवगत कराया गया। डॉ.मधु टंडन बी.एड.संकाय में शिक्षक-अभिभावक संघ

की बैठक में सर्वसम्मति से प्रशिक्षक अभिभावक संघ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, संयुक्त सचिव एवं कोषाध्यक्ष जैसे विभिन्न पदाधिकारियों का चयन किया गया। सफल जीवन के लिए स्वास्थ्य का महत्त्व असंदिग्ध है।

छात्राओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के प्राथमिक निराकरण व चिकित्सीय परामर्श हेतु महाविद्यालय में **स्वास्थ्य सेवा प्रकोष्ठ** क्रियाशील है। महाविद्यालय हेतु नियुक्त डॉ.वन्दना राज छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण और परामर्श हेतु परिसर में सत्र पर्यन्त सुलभ रहीं। सितम्बर माह में डॉ.वन्दना राज ने छात्राओं को 'स्वस्थ जीवन शैली और स्वास्थ्य' विषय पर व्याख्यान देकर लाभान्वित किया। अन्य अवसर पर डॉ.मीरा भार्गव द्वारा 'महिलाओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं एवं उनका निराकरण' विषय पर व्याख्यान दिया गया। नवम्बर माह में 'स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. धीरेन्द्र, डॉ.मनीष राज, श्री शारिक मुहम्मद एवं डॉ.वन्दना राज द्वारा छात्राओं का नेत्र परीक्षण, दंत परीक्षण करने के साथ-साथ अन्य सामान्य स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का भी निराकरण किया गया।

महाविद्यालय छात्राओं के व्यक्तित्व विकास और अंगरेजी संभाषण कौशल को विकसित करने के उद्देश्य से 'Spoken English and Personality Development' सर्टिफिकेट कोर्स संचालित किया गया।

करिअर निर्माण और व्यक्तित्व विकास सम्बन्धित मूल्यवान अनुभव और परामर्श साझा करने का मंच पुरा छात्रा संगठन सांस्कृतिक और अकादमिक कार्यक्रमों द्वारा निरन्तर छात्राओं के मार्गदर्शन में संलग्न है। स्नातक अन्तिम वर्ष की छात्राएं परीक्षा परिणाम आने के बाद अपना नामांकर कराकर इस संगठन की सदस्य बनती हैं। सत्र के प्रारम्भ में पुरा छात्राओं की बैठक आयोजित कर पुराछात्रा प्रतिनिधियों का नामांकन किया गया। पुराछात्राओं को कम्प्यूटर शिक्षा की सुविधा, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा परास्नातक प्रवेश परीक्षा आदि की निःशुल्क काउंसिलिंग सुविधा प्रदान की गई।

महाविद्यालय की छात्र सहयोगी सेवाओं के सुचारु संचालन तथा उच्च कोटि की अकादमिक गतिविधियों के फलस्वरूप राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद द्वारा महाविद्यालय को 'A' ग्रेड प्राप्त हुआ। महाविद्यालय विकास में संलग्न अधिशासी निकाय, दी सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी, शिक्षक, गैरशिक्षक वर्ग, तथा छात्राओं के समवेत प्रयास से प्राप्त यह परिणाम भावी विकास यात्रा में निष्ठा तथा प्रतिबद्धता हेतु प्रेरक का कार्य करेगा। जिससे महाविद्यालय उपलब्धियों के नवीन मानक स्थापित कर अपने गौरव में वृद्धि करेगा।



# अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ





### अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ

विद्यार्थी जीवन में अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभागिता व्यक्तित्व विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसी उद्देश्य से महाविद्यालय की छात्राओं ने सत्र पर्यन्त महाविद्यालय तथा अन्य संगठनों में आयोजित गोष्ठी, संवाद, कार्यशाला, प्रश्नमंच, निबन्ध प्रतियोगिताओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता कर व्यक्तित्व विकास के साथ साथ महाविद्यालय की प्रगति में भी योगदान दिया।

राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय में 'नवोत्कर्ष कार्यक्रम' में आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं में विजय प्राप्त कर महाविद्यालय टीम ने तृतीय स्थान अर्जित कर शील्ड प्राप्त की।

विभिन्न प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों का विवरण इस प्रकार है:-

छात्रा का नाम	कक्षा	प्रतियोगिता	स्थान
प्रज्ञा मिश्रा	बी.ए.तृतीय वर्ष	वाद विवाद	तृतीय
काशिफा इतरत	बी.ए.द्वितीय वर्ष	वाद विवाद	द्वितीय
निधि चौरसिया	बी.ए.द्वितीय वर्ष	पोस्टर	द्वितीय
संजना पाण्डेय	बी.ए.तृतीय वर्ष	(संस्कृत) निबन्ध	द्वितीय
काशिफा इतरत	बी.ए.द्वितीय वर्ष	(अंग्रेजी) निबन्ध	द्वितीय
सोनिश अली	बी.ए.द्वितीय वर्ष	(अंग्रेजी) निबन्ध	सान्त्वना



राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय में आयोजित 'हिन्दी उत्सव' में महाविद्यालय की 10 छात्राओं ने निबन्ध प्रविष्टियां भेजी, जिसमें वाणिज्य संकाय की प्रथम वर्ष की छात्रा अजीता सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद के जन्तु विज्ञान विभाग तथा बायोटेक रिसर्च सोसायटी द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालय विजय प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रतिभागिता की। जिसमें सरोज-लालजी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष की सैयदा फौजिया इकबाल ने प्रथम तथा बी.एस-सी. प्रथम वर्ष की महिमा सिंह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।



सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, जन्तु विज्ञान तथा बायोटेक रिसर्च सोसायटी द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 14 छात्राओं ने भाग लिया, जिसमें बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष की फिरदौस फातिमा ने द्वितीय तथा बी.एस-सी.तृतीय वर्ष की ऐश्वर्या पाण्डेय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित मिनि रिसर्च पी.पी.टी. प्रेजेन्टेशन में महाविद्यालय की बी.कॉम.तृतीय वर्ष की स्वाति द्विवेदी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज द्वारा ही आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में महाविद्यालय की बी.कॉम.तृतीय वर्ष की ऐमन हुसैन व फरीहा फातिमा ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

त्रिवेणिका संस्कृत परिषद द्वारा आयोजित संस्कृत सामान्य ज्ञान प्रश्न मंच प्रतियोगिता में महाविद्यालय की



छात्राओं – संजना पाण्डेय, नीतू मिश्रा व प्रीति साहू ने भाग लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

श्री रामचन्द्र मिशन द्वारा आयोजित ऑल इण्डिया निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में महाविद्यालय की बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा अजीता सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

'रूपशिल्प' ललित कला संस्थान, इलाहाबाद द्वारा दिसम्बर माह में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय की चित्रकला विभाग की छात्राओं ने भाग लिया और बी.ए.तृतीय वर्ष की छात्रा विजेता प्रजापति ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

IAPT Kanpur के तत्वावधान में National Graduate Physics Examination की परीक्षा नवनिर्मित केन्द्र एस. एस.खन्ना महिला महाविद्यालय में सम्पन्न हुई, जिसमें महाविद्यालय की बी.एस-सी. भौतिकी की 35 छात्राओं ने प्रतिभागिता की। इसमें प्राप्तांक का उच्चतम दस प्रतिशत का प्रमाणपत्र निम्न चार छात्राओं ने प्राप्त किया—

1	पूजा सिंह	बी.एस-सी.द्वितीय वर्ष
2	शोफाली केसरवानी	बी.एस-सी.तृतीय वर्ष
3	अंजली चावला	बी.एस-सी.द्वितीय वर्ष
4	बीना सिंह	बी.एस-सी.द्वितीय वर्ष



हिन्दुस्तानी एकेडमी में आयोजित व्यंग्य लेखन प्रतियोगिता में बी.एस-सी.प्रथम वर्ष की शिवांगी कुशवाहा तथा शिवांगी जायसवाल ने प्रतिभागिता की।

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित स्वरचित काव्य / कहानी प्रतियोगिता में कला संकाय की छात्रा रागिनी पाण्डेय ने भाग लिया।

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज द्वारा आयोजित एक दिवसीय अन्तर्महाविद्यालयीय मानवाधिकार प्रशिक्षण कार्यक्रम में महाविद्यालय की 14 छात्राओं ने प्रतिभागिता की एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किया। आर्य कन्या डिग्री कॉलेज में प्रकाशचन्द्र जुगमन्दर दास अग्रवाल लोकहित ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 10 छात्राओं ने प्रतिभागिता की। इनमें से रेनू पाण्डेय, प्रज्ञा मिश्रा, रितु कपारिया व नेहा पाण्डेय ने आयोजक संस्था की ओर से प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

United Nations Information Centre for India and Bhutan के सहसंयोजन में श्रीरामचन्द्र मिशन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 19 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर रन फार यूनिटी के पश्चात् आयोजित कार्यक्रम में सरदार पटेल के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया। इस विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसका परिणाम निम्नवत रहा—

नाम	कक्षा	स्थान
सोनिश अली	बी.ए.द्वितीय वर्ष	प्रथम
काशिफा इतरत	बी.ए.द्वितीय वर्ष	द्वितीय
शिवि मेहरोत्रा	बी.ए.तृतीय वर्ष	तृतीय
गौरांगना खन्ना	बी.एड.	सांत्वना
अरीबा फातिमा अंसारी	बी.एड.	सांत्वना



विजेताओं को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. इन्दिरा मेहरोत्रा द्वारा प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्रदान किया गया।

महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र विभाग में सत्र के प्रारम्भ में दर्शनशास्त्र की "समकालीन दशा और दिशा" विषय पर व्याख्यान



## प्रश्न 2014-15

का आयोजन किया गया। जिसमें दर्शनशास्त्र में छात्राओं के घटते रुझान के कारण का विश्लेषण करते हुये छात्राओं को बताया गया कि कैरियर निर्माण हेतु दर्शनशास्त्र आधार का काम करता है। विषय का अध्ययन छात्राओं में विश्लेषणात्मकता, तार्किकता तथा अर्थ की गहनता ग्रहण करने की क्षमता विकसित करता है जो किसी भी विषय को समझने के लिये आवश्यक है।

गांधी अध्ययन संस्थान, छात्र कल्याण परिषद तथा दर्शन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में स्लोगन राइटिंग, पोस्टर पेन्टिंग तथा पेन्टिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। विषय था – गांधी जीवन दर्शन। विजित प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। दर्शन विभाग में अन्तरमहाविद्यालय प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रपत्र लेखन का विषय था—

1. हिंसा की वर्तमान त्रासदी में गांधी के अहिंसा सिद्धान्त की प्रासंगिकता।
2. सामाजिक विषमता के परिदृश्य में गांधी का समाजदर्शन।
3. वर्तमान संदर्भ में गांधी के नैतिक सिद्धान्तों की उपादेयता।
4. गांधी का अराजकतावाद।

प्रतियोगिता परिणाम इस प्रकार है—

छात्र/छात्रा का नाम	स्थान	महाविद्यालय
अंजलि कुशवाहा	प्रथम	एस.एस.खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज
शुभम दूबे	द्वितीय	सी.एम.पी.डिग्री कॉलेज
किशन कुमार साहनी	तृतीय	ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज
प्रभाश दूबे	सान्त्वना	सी.एम.पी.डिग्री कॉलेज



बी.ए.तृतीय वर्ष की छात्राओं के मध्य 'धर्म निरपेक्षता और भारतीय समाज तथा धर्मान्तरण और नैतिकता' विषय पर विचार अभिव्यक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

संस्कृत विभाग द्वारा अन्तरमहाविद्यालयीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था – 'देश की एकता और अखण्डता के मूल में संस्कृत भाषा और साहित्य'। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा—

छात्रा का नाम	कक्षा	महाविद्यालय	स्थान
स्वाति त्रिपाठी	बी.ए.तृतीय वर्ष	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय, फाफामऊ, इलाहाबाद	प्रथम
दीक्षा मालवीय	बी.ए.द्वितीय वर्ष	राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय	द्वितीय
ऋतम्भरा मिश्रा	बी.ए.प्रथम वर्ष	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय, फाफामऊ, इलाहाबाद	तृतीय
संजना पाण्डेय	बी.ए.तृतीय वर्ष	सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय	सान्त्वना

समाजशास्त्र विभाग द्वारा बी.ए. प्रथम की छात्राओं का विषय मूल्यांकन मापनी द्वारा सामाजिक विषयों से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान का परीक्षण किया गया। इन्हीं छात्राओं द्वारा 'स्वच्छता' से सम्बन्धित स्व मापनी का निर्माण एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उसका प्रयोग कराया गया। बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा 'बालश्रम' पर प्रोजेक्ट कार्य कराया गया। बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं के मध्य 'नारी सशक्तीकरण' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता तथा 'भ्रष्टाचार' विषय पर आलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई।

अंग्रेजी विभाग द्वारा अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था—"The Relevance of Teaching English" बी.ए. प्रथम व द्वितीय वर्ष की छात्राओं के बीच Extempore Speech Competition" का आयोजन किया गया। छात्राओं की विषय सम्बन्धित उपन्यासों में रूचि विकसित करने के उद्देश्य से अनेक – A Passage to India, David Copperfield, Pride and Prejudice तथा Macbeth आदि Film भी



दिखाई गई।

**प्राचीन इतिहास विभाग** में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन और स्त्रैतजिक विभाग के प्रो. आर. के. टण्डन ने इलाहाबाद संग्रहालय में 'आयुधों का अध्ययन भारतीय इतिहास के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर व्याख्यान दिया और इलाहाबाद संग्रहालय में रखे पुराने आयुधों की Power Point Presentation द्वारा जानकारी प्रदान की। बी.ए.तृतीय वर्ष की लगभग 20 छात्राओं ने 'कला एवं स्थापत्य-युगयुगीन कला' विषय पर प्रोजेक्ट बनाए।

**प्राचीन इतिहास एवं मध्यकालीन इतिहास विभाग** के संयुक्त तत्त्वावधान में 'Rare Manuscript: Source of History' विषय पर कार्यशाला व प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी इलाहाबाद के क्षेत्रीय अभिलेखागार एवं पांडुलिपि विभाग के सौजन्य से आयोजित थी। प्रदर्शनी का उद्घाटन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के **प्राचीन इतिहास विभाग** के प्रो. एच.एन.दूबे ने किया। डॉ.ए.के.अग्निहोत्री ने पांडुलिपियों के महत्व पर प्रकाश डाला और प्रमुख पांडुलिपियों की जानकारी पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन द्वारा दी। उन्होंने दुर्लभ पांडुलिपियों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

**मध्यकालीन इतिहास विभाग** में सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व और राष्ट्रीय एकता में उनके योगदान पर एक प्रोजेक्ट कार्य भी छात्राओं से कराया गया। विभाग द्वारा ही 'आजादी के बाद भारत की प्रगति कितनी' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

**चित्रकला विभाग** द्वारा अक्टूबर माह में 'दिवाली डेकोरेशन' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने फूलदान, दीपक, तोरण, पूजा की थाल की सजावट, वॉल हैगिंग इत्यादि बनाई एवं प्रदर्शित की। नवम्बर माह में बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्राओं हेतु C.D. Show का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को चीन और जापान की चित्रकला की जानकारी दी गई। दिसम्बर माह में नैक टीम विजिट के दौरान महाविद्यालय की आर्ट गैलरी में चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें पिछले पाँच वर्षों में बी.ए.तृतीय वर्ष की छात्राओं द्वारा बनाये गये लगभग 65 चित्रों को प्रदर्शित किया गया।

**ऑफिस मैनेजमेन्ट एण्ड सेक्रेटेरियल प्रैक्टिसेज विभाग** में बी.ए.तृतीय वर्ष की छात्राओं ने पाठ्यक्रम के विषयों पर Power Point Presentations तैयार किये। बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने विषय से सम्बन्धित मॉडल तैयार किये। छात्राओं ने ICA द्वारा आयोजित 'Excel ka Don' प्रतियोगिता एवं Methodox द्वारा आयोजित कार्यशाला 'Operation of Smartclasses' में भी सक्रिय सहभागिता की।

**संगीत विभाग** द्वारा सत्र भर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे स्वतंत्रता दिवस, शिक्षक दिवस, दामोदर श्री राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह तथा वार्षिकोत्सव, गणतन्त्र दिवस तथा नैक पीयर टीम विजिट, पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के आगमन पर गणेश वंदना, देशगीत, गुरु वंदना, नृत्य-नाटक आदि की मोहक प्रस्तुति की गई। सरस्वती पूजा के अवसर पर विभाग की छात्राओं द्वारा भजन एवं सरस्वती वंदना की प्रस्तुति की गई।

**सरोज-लाल जी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय के अन्तर्गत भौतिक विज्ञान विभाग** में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ.विवेक कुमार तिवारी, 'मानव जागृति और विज्ञान की प्रगति' पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। विभाग द्वारा महिला वैज्ञानिकों के योगदान पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें विजेता प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

**जन्तु विज्ञान विभाग** द्वारा 'विश्व ओजोन दिवस' के उपलक्ष्य में एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था - \*Ozone Layer Depletion' A

इसमें विभाग की कुल 33 छात्राओं ने भाग लिया।

**जन्तु विज्ञान विभाग तथा बायोटेक्नोलॉजी विभाग** द्वारा संयुक्त रूप से दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय था 'Isolation and Identification of Microorganism from Different Sources' इस कार्यशाला में विभाग की 40 छात्राओं ने भाग लिया। दिसम्बर माह में विभाग द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय था 'Analysis of Water Samples Collected from different sites of Allahabad' इस कार्यशाला में छात्राओं ने different water samples की qualitative & quantitative analysis किया।



## प्रश्नी 2014-15

रसायन विज्ञान विभाग में बी.एस-सी.प्रथम वर्ष की छात्राओं हेतु चार्ट व मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 15 मॉडल व 30 चार्ट, प्रदर्शित किये गए। बी.एस-सी.द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने विषय से सम्बन्धित प्रोजेक्ट तैयार कर उनका display किया। विभाग में बी.एस-सी.तृतीय वर्ष की 20 छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर Power Point Presentations तैयार कर उन्हें प्रस्तुत किया।

रसायन विज्ञान विभाग व इको क्लब के संयुक्त तत्वावधान में नवम्बर माह में 'Environmental Problems' विषय पर Power Point Presentation का आयोजन किया गया। जिसमें वाणिज्य और विज्ञान संकाय की 10 छात्राओं ने भाग लिया। दिसम्बर माह में 'Avoid use of Polythene' विषय पर इको क्लब द्वारा एक Slogan Display का आयोजन किया गया, जिसमें सभी संकायों की छात्राओं ने आकर्षित Slogan बनाकर उन्हें प्रदर्शित किया।

वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा 'Dimensions in Botany' विषय पर चार्ट पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, इसमें तीनों वर्षों की छात्राओं ने भाग लिया। विभाग द्वारा 'Plants and Human welfare' विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें छात्राओं ने Power Point Presentation द्वारा प्रपत्र प्रस्तुत किये। छात्राओं द्वारा महाविद्यालय एवं आस-पास के क्षेत्र में वनस्पतियों का Survey किया गया, जिससे उन्हें प्राकृतिक वनस्पतियों के बारे में जानकारी मिली।

गणित विभाग द्वारा National Board for Higher Mathematics द्वारा आयोजित 'Madhava Mathematics Competition' में छात्राओं ने भाग लिया। बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने Hydrodynamics विषय पर चार्ट तैयार किए। बी.एस-सी.तृतीय वर्ष की छात्राओं ने Real Analysis विषय पर चार्ट तैयार किए।

वाणिज्य संकाय में समय-समय पर विशेषज्ञ शिक्षकों के व्याख्यान आयोजित किये गये। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डिपार्टमेन्ट ऑफ कामर्स एण्ड बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन से आमंत्रित प्रो.अरुण कुमार ने बिजनेस और कॉमर्स के क्षेत्र में 'Time Management' विषय पर तथा प्रो.रमेन्दु रॉय ने 'Major changes in Indian Companies Act' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान देकर छात्राओं को लाभान्वित किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के MONIRBA से आमंत्रित डॉ.आर.के.सिंह ने 'Accounting and Finance' विषय पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वाणिज्य संकाय द्वारा Prof.G.C.Agarwal Memorial Paper Writing and Quiz Competition - 2014 आयोजित किया गया, जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अतिरिक्त समस्त संघटक महाविद्यालयों की टीम ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं:-

प्रश्नमंच प्रतियोगिता :-

संस्थान	टीम	परिणाम
एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय	स्वाति द्विवेदी श्रेष्ठा श्रीवास्तव महे तलत	प्रथम
जगत तारन महिला महाविद्यालय	शालिनी पाठक शाम्भवी राय श्रेयांसी द्विवेदी	द्वितीय
ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज	आनन्द जायसवाल रवि पर्वा आनन्द मिश्रा	तृतीय
इलाहाबाद विश्वविद्यालय	प्रशान्त जायसवाल पंकज कुमार सुजाता केसरी	सान्त्वना
इलाहाबाद डिग्री कॉलेज	साक्षी गुप्ता स्वधा द्विवेदी अवंतिका निशाद	सान्त्वना



प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता -

विषय - PPP: A Tool for Economic Development

नाम	संस्थान का नाम	परिणाम
वर्तिका श्रीवास्तव	जगत तारन महिला महाविद्यालय	प्रथम
शाम्भवी राय	जगत तारन महिला महाविद्यालय	द्वितीय
शोभना वर्मा	एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय	तृतीय
अजीता सिंह	एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय	सान्त्वना
सदफ फातिमा	एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय	सान्त्वना

प्रतियोगिता के सभी विजित प्रतिभागियों को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो.रमेन्दु राय द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया।

राष्ट्र निर्माण में कुशल व प्रतिबद्ध शिक्षक वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः किसी भी संस्थान द्वारा योग्य शिक्षिकाएं निर्मित करने का दायित्व शिक्षण कार्य के साथ-साथ अन्य गतिविधियों के संचालन से ही पूर्ण हो सकता है। इसी विचार के अनुरूप डॉ.मधु टंडन बी.एड.संकाय में सितम्बर माह में छात्रा संसद का गठन एवं सूक्ष्म शिक्षण कार्य का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् 30 दिनों का अभ्यास शिक्षण सफलता पूर्वक कराया गया। नवम्बर माह में छात्राओं को उपलब्धि परीक्षण का निर्माण करना सिखाया गया तथा शिक्षक - अभिभावक संघ का गठन किया गया। दिसम्बर माह में पाँच दिवसीय गाइडिंग शिविर एवं SUPW कार्यशाला आयोजित की गई। जनवरी माह में सेमिनार कक्षाएं एवं शिक्षक सहायक सामग्री कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें छात्राध्यापिकाओं को विभिन्न विषयों से सम्बन्धित शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण करना सिखाया गया। सत्र के अन्त में मुख्य अभ्यास शिक्षण सफलता पूर्वक सम्पन्न कराया गया।

व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष को कलात्मक और सुरुचिपूर्ण बनाने का सशक्त माध्यम सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए महाविद्यालय में सांस्कृतिक समिति के निर्देशन में छात्राओं द्वारा स्वतंत्रता दिवस, शिक्षक दिवस, दामोदरश्री राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह पर गणेश वंदना व सरस्वती वंदना की मोहक प्रस्तुति की गई। महाविद्यालय में पूर्व राष्ट्रपति माननीय ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के आगमन पर सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव व नैक पीयर टीम के आगमन पर उनके स्वागत हेतु राग मिश्र भैरवी पर आधारित सरस्वती वंदना, राग शिवरंजनी व तीन ताल में निबद्ध फ्यूजन द्वारा छात्राओं ने अपनी कला तथा योग्यता को प्रदर्शित किया, जिसमें सितार, तबला, पखावज व सिंथेसाइजर के युगल वादन ने दर्शकों के दिल के तार को झंकृत कर दिया। नृत्य नाटिका 'कलाकार का स्वप्न' के माध्यम से प्रदेशों की लोक कलाओं को एक सूत्र में पिरोकर भारत की महान अतुल्य संस्कृति से परिचित कराने का प्रयास किया गया। शेक्सपीयर द्वारा लिखित 'मेकबेथ' नाटक के संक्षिप्त रूपान्तरण ने दर्शकों के दिलों को छू लिया।

महाविद्यालय का अकादमिक और सांस्कृतिक वातावरण अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और दायित्वबोध महाविद्यालय को निरन्तर प्रगति पर अग्रसर करता रहे-समस्त गतिविधियों का यही उद्देश्य है।



प्रतिमान

## अच्छी शख्सियत बनाने के तरीके

इन्दु

छात्राध्यापिका-बी.एड.

- जिम्मेदारी स्वीकार करें।
- औरों की परवाह करें।
- सबकी जीत के बारे में सोचें।
- अपने शब्दों को सावधानी से चुनें।
- आलोचना और शिकायत न करें।
- मुस्कराएँ और दयालु बनें।
- दूसरों के व्यवहार का सही अर्थ निकालें।
- अच्छे श्रोता बनें, उत्साही बनें।
- ईमानदारी से प्रशंसा करें।
- अपनी गलती को स्वीकार करें।
- तर्क करें पर तकरार न करें।
- पीठ पीछे बातें न करें।
- अपने वादों को वचनबद्धता में बदलिए।
- अहसान तो माने, लेकिन दूसरे से अहसानमन्द होने की उम्मीद न करें।
- भरोसेमन्द बनें और ईमानदार एवं वफादार मन में मैल न रखें।
- विनम्र बनें और दूसरों की भावना को महसूस करें।
- हँसने-हँसाने की आदत डालें और खुशमिजाज बनें।
- दूसरों का मजाक न उड़ाएँ और न ही नीचा दिखायें।
- दोस्त पाने के लिए दोस्त बनें।

कविता

माँ

गरिमा

छात्राध्यापिका- बी.एड.

समुन्द्र ने कहा- माँ एक सीप है, जो औलाद के लाखों राज अपने सीने में छुपा लेती है।

बादल ने कहा- माँ एक धुन है, जिसमें हर राग नुमाया होता है।

शायर ने कहा- माँ एक ऐसी गजल है, जो हर सुनने वाले के दिल में उतर जाती है।

माली ने कहा- माँ एक बाग का वह पुष्प है

जिसके दम से सारे हुस्न का दम कायम है।

भगवान ने कहा- माँ मेरी तरह से कीमती और नायाब तोहफा है।

औलाद ने कहा- माँ ममता की वह दासताँ है

जिसको कोई बदल नहीं सकता।

मैंने कहा- माँ दुनिया की वह अमूल्य चीज है

जिसे दुनिया मिटा नहीं सकती।

## हमारा देश

ममता कुमारी मोर्य

छात्राध्यापिका- बी.एड.

शान्ति हो सौहार्द हो

हर आशियाँ आबाद हो

रास्ते में हो फूल

हर मोड़ पर एक बाग हो

ज्ञान का हो पुष्प संचित

हर हृदय बेदाग हो

देश हो खुशहाल मेरा

ना कहीं पर आग हो।।



रिसर्च स्टडी

**शर्मनाक और विवादास्पद बयानों का असर**  
(एक अध्ययन : बलात्कार जैसी घटनाओं पर दिए जाने वाले बयानों का)

डॉ. रीता चौहान

एसोसिएट प्रोफेसर : शिक्षाशास्त्र

प्रस्तुत अध्ययन को एक ऐसा संवाद बनाने का प्रयास किया गया है कि बलात्कार जैसी जघन्य घटनाओं पर बोलते समय लोग ध्यान रखें कि उनके शब्दों से उनकी सोच और नजरिया समाज तक पहुँचता है और समाज को आहत कर सकता है। विभिन्न मंचों से, टेलीविजन पर, मीडिया रिपोर्टर से बात करते समय पब्लिक फेस वाले लोगों द्वारा ऐसे विवादास्पद और शर्मनाक बयान दिए जाते हैं कि महिला अधिकारों के प्रयासों की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लग जाते हैं। समाज का असली चेहरा बड़ा कुत्सित नजर आने लगता है।

महिलाओं के शील सम्मान की बढ़ती हुई असुरक्षा एवं बलात्कार की निर्मम जघन्य घटनाएं विसंगति से बढ़ रही हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार भारत में 2011 में 23,582, 2012 में 24,923 तथा 2013 में 33,707 बलात्कार की घटनाएं दर्ज हुईं। 2013 में की दर्ज घटनाओं के अन्तर्गत मध्य प्रदेश में 4,335, महाराष्ट्र में 3,063, राजस्थान में 3,285, उत्तर प्रदेश में 3,050, असम में 1,937, पश्चिम बंगाल में 1,685, दिल्ली में 1,636, आंध्र प्रदेश में 1,635, छत्तीसगढ़ में 1,380, केरल में 1,221, झारखण्ड में 1,204, बिहार में 1,128, कर्नाटका में 1,030, हरियाणा में 971, तमिलनाडु में 923, पंजाब में 888, गुजरात में 732, जम्मू एवं कश्मीर में 378, हिमाचल प्रदेश में 250 तथा उत्तराखण्ड में 22 केस दर्ज हुए। एशियन सेण्टर फॉर ह्यूमन राइट्स (ACHR), नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के एक रिपोर्ट के अनुसार 2001 से 2011 के मध्य 48,838 चाइण्ड रेप केस दर्ज हुए।

सामाजिक प्रतिकार और अवमानना के भय से बलात्कार के अधिकांश मामले दर्ज ही नहीं कराए जाते। टेक्सास विश्वविद्यालय की शोध छात्रा मदिहा कर्क की थीसिस 'Understanding Indian and Pakistani culture Prospectives and Analysing U.S. News Coverage of, Mukhtar Mai and Jyoti Singh Pandey के अनुसार 54% बलात्कार की घटनाएं दर्ज नहीं कराई जातीं। 17 जून 2009 के इंडिया टुडे में प्रकाशित मिहिर श्रीवास्तव के लेख में दावा किया गया है कि भारत में 90% रेप के मामले दर्ज नहीं कराए जाते। परिवार द्वारा अपनी इज्जत बचाने की कोशिश के अतिरिक्त अन्य भी कारण हो सकते हैं, जैसे- बलात्कार पीड़िता और उसके परिवार का मानसिक ट्राuma से गुजरना, पुलिस का तरीका और कार्यवाही का अझेल होना आदि। यह तो जगजाहिर है कि एक सामान्य पुलिसवाले को संवेदनशीलता से न तो बात करने का तरीका आता है और न ही सलीका। छः महीने की बच्ची से लेकर प्रौढ़ावस्था की महिलाएं शिकार हो रही हैं, आयु कोई मायने नहीं रखती। गाँव, कूचों, शहरों, कस्बों सभी जगह बलात्कार की घटनाएं घट रही हैं। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से लेकर उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर की महिलाएं, शिक्षित व अशिक्षित सभी वर्गों की महिलाएं इस पैशाचिक और पाशविक अत्याचार का शिकार हो रही हैं। मानसिक रूप से विकसित व विकलांग महिलाएं भी नहीं बच पा रही हैं। माँ की कोख से लेकर, घरों में, दफ्तरों में, सड़कों पर कहीं भी महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं।

कुछ बहुचर्चित घटनाओं का उल्लेख करना सर्वथा औचित्यपूर्ण होगा, जिनकी वजह से एक खास तरह की घृणा और गुस्से का जनज्वार उठा, पूरे समाज में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर विशेष संवेदनशीलता देखने की मिली। 2012 में असम के चिरंग जिले में रूलिंग पार्टी के एक नेता को गाँव वालों ने बलात्कार की चेष्टा में रंगे हाथ पकड़ा, युवती की चीख-पुकार सुनकर गाँव वाले इकट्ठा हो गए थे। 9 जुलाई, 2012 को असम की राजधानी गुवाहाटी की सड़क पर एक लड़की के साथ पचास लोगों ने बर्बर ढंग से यौन दुराचार किया। 16 दिसम्बर 2012 को हुए दिल्ली गैंग रेप केस ने पूरे भारत को हिलाकर रख दिया। 23 साल की ज्योति सिंह



पाण्डेय का चलती बस में गैंग रेप हुआ। हर तबके, हर वर्ग के, हर उम्र के लोग सड़कों पर उतर आए। मार्च, 2013 में एक स्विस दम्पति ओरछा से आगरा तक साइकिल यात्रा कर रहा था, आठ स्थानीय लोगों ने पुरुष के हाथ-पैर बांध दिए और उनतालीस वर्षीया महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया। अप्रैल 2013 में दिल्ली में पाँच वर्षीया बालिका बलात्कार का शिकार बनी। इस लड़की को अस्पताल में देखने आई भाजपा की नेता सुषमा स्वराज ने कहा था- 'मैंने बगल वाले कमरे में एक और पाँच वर्षीया लड़की को देखा, वह भी रेप पीड़िता हैं।' 6 नवम्बर, 2013 को एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर अश्विन ताबरेकर ने अपनी पत्नी की तेरह वर्षीया भतीजी को बलात्कार का शिकार बनाया। 2013 में ही दक्षिण मुम्बई में बाइस वर्षीया फोटो जर्नलिस्ट के साथ शक्ति मिल कम्पाउण्ड में पांच लोगों ने सामूहिक बलात्कार किया। अप्रैल, 2014 में असम में एक सिक्यूरिटी गार्ड ने सात वर्षीया लड़की के साथ दुराचार किया। मई, 2014 में उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले में 14 और 16 साल की दो नाबालिग लड़कियों को गैंग रेप के बाद एक पेड़ से लटका दिया गया।

तमाम मंचों से, न्यूज चैनलों और अखबारों में, ट्विटर पर बलात्कार जैसे घिनौने वारदात के लिए सख्त कानून की माँग बुलंद होती रहती है, महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और गौरव की रक्षा की चिन्ता दिखाई देती है। सरकार के प्रयास, नीतियों और इच्छा शक्ति पर बहस किया जाता है। महिलाओं की वैचारिक संसाधनों की कमजोरियों को दूर करने की बात कही जाती है, ताकि वे स्वयं को तथा अपनी शक्तियों को पहचानने में सक्षम हो सकें। मर्दवादी ज्यादतियों के नाक पर भी प्रहार करने की कोशिश की जाती है। परन्तु इस बात को भी अनेदखा नहीं किया जा सकता कि कुछ जाने-माने नेता, सरकारी अफसर या अन्य लोग असंवेदनशील या आपत्तिजनक बयानबाजी करते रहते हैं, जिसमें स्त्री-पुरुष की संवेदनशक्ति के बीच नैसर्गिक अन्तर के अतिरिक्त एक कुटिल अन्तर भी झलकने लगता है। कभी-कभी तो ऐसी बातें कह दी जाती हैं कि लगता है कि महिला वर्ग को छला जा रहा है। बलात्कार जैसे मुद्दे का विश्लेषण इस प्रकार होने से लगता है कि कहने वाला अतिशय आदर्शवादिता से पीड़ित नज़र आता है, उनके अन्दर वस्तुपरक यथार्थवादी दृष्टिकोण विकसित ही नहीं हुआ। महिलाओं के खिलाफ यौन अपराधों की जटिलता को सही परिप्रेक्ष्य में समझते ही नहीं। ये लोग उदार मानवीय मूल्यों से परे रह कर औरत को दायम दर्जे का होने का एहसास कराते रहते हैं। बदायूँ रेप केस में चौतरफा आलोचना झेलने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा था- 'गूगल सर्च करके देखिए, बदायूँ की तरह घटनाएँ अन्य स्थानों पर भी मिलेंगी।' इसी सिलसिले में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव ने एक टी वी रिपोर्टर से कहा था- 'आप अपना काम कीजिए, मैं अपना काम करूँगा।' समाजवादी पार्टी के ही वरिष्ठ नेता, अखिलेश यादव के चाचा, राम गोपाल यादव ने उत्तर प्रदेश में बढ़ती रेप की घटनाओं का कारण टी वी चैनलों पर दिखाई जा रही अभद्रता, अश्लीलता और हिंसा को बताया। उन्होंने यह भी कहा कि बहुत सी जगहों पर, जब लड़की और लड़के बीच संबंध उजागर हो जाते हैं तो इसे रेप कह दिया जाता है। मुलायम सिंह यादव ने तो यहाँ तक कह दिया था कि 'क्या रेप करने वाले लड़कों को फांसी दे देनी चाहिए। लड़के हैं, गलती हो जाती है।' जनता दल यूनाइटेड के नेता शरद यादव ने तो सारी हदें पार करके बयान दे दिया - सेक्स स्वाभाविक चीज है, जैसे पानी पीना है, सांस लेना है, खाना खाना है, पन्द्रह-बीस दिन में नौजवानों को चाहिए। अब ये बात सच्ची नहीं, मानने को तैयार है देश.....पाखंड करता है।' दिल्ली में, राजनारायण पर आयोजित एक गोष्ठी में शरद यादव ने यह बयान दिया था। इससे भी आगे जाकर तत्कालीन कोयला मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने कहा था- 'बीबी जब पुरानी हो जाती है, मजा नहीं देती।' 2013 में केन्द्रीय गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने महाराष्ट्र के भंडारा जिले के रेप केस पर विवादास्पद बयान संसद में ही दे दिया था। 21 जुलाई, 2014 को उत्तर प्रदेश के गवर्नर अजीज कुरैशी ने टी वी न्यूज चैनल पर कहा था- 'यदि महिलाओं की सुरक्षा के लिए पूरी पुलिस फोर्स लगा दी जाए, तब भी रेप की घटनाएँ नहीं रुक सकतीं, केवल ईश्वरीय हस्तक्षेप से ही इस तरह के अपराधों को चेक किया जा सकता है।'

शर्मनाक बयानबाजी में धर्मगुरु भी पीछे नहीं रहते। शिया धर्मगुरु कल्बे जब्बाद का बयान है- 'लीडर बनना औरतों का काम नहीं है, उनका काम लीडर पैदा करना है, कुदरत या अल्लाह ने उन्हें इसलिए बनाया है कि वो घर संभालें, अच्छी नस्ल को पैदा करें।' रामजन्म भूमि न्यास के अध्यक्ष राम गोपाल दास का कहना है- 'महिलाओं को अकेले मंदिर, मठ, देवालय नहीं जाना चाहिए,



अगर वे मंदिर, मठ या देवालय जाती हैं तो उन्हें पिता, पुत्र या भाई के साथ जाना चाहिए, नहीं तो उनकी सुरक्षा को खतरा है।'

बलात्कार जैसे जघन्य अपराध की बात होने ही कुछ नामी-गिरामी लोग महिलाओं के पहनावे को ही कोसने लगते हैं। इस सिलसिले में पंचायतों के विवेकहीन फरमान अक्सर आते रहते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बलात्कार जैसे जटिल प्रक्रिया पर एकांगी तर्क लागू करने लगते हैं। बिना सुविचारित और सुचिन्तित ढंग से बोलने लगते हैं। लड़की के पहनावे, मोबाइल, देर शाम तक नौकरी या घर से बाहर रहने को बलात्कार का कारण बताने लगते हैं। इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि इस तरह के विवादास्पद और शर्मनाक बयानों से क्या समाज के प्रति महिलाओं की आस्था तो नहीं घायल होती। इस तरह के बयान क्या अपराधियों के हौसले बुलंद नहीं करते ? क्या इससे नारी सुरक्षा के प्रावधानों के ऊपर से विश्वास तो नहीं डगमगाता ? एक ओर सरकार विकास का ढिंढोरा पीट रही हैं, दूसरी ओर ऐसे बयान आते हैं कि अपनी योग्यता और उत्कृष्टता से स्त्री का विश्वास उठने लगता है। सी.बी.आई. प्रमुख रंजीत सिन्हा ने 'Sports Ethics' पर आयोजित एक पैनल डिस्कशन में यह तक कह डाला था- 'यदि आप रेप से बचाव नहीं कर सकते तो इसका आनन्द लीजिए।' इस तरह के बयान देने वाले लोग किसी खास वर्ग के नहीं होते, बल्कि विभिन्न राजनैतिक दलों के लोग, पंचायत के सदस्य, समाजसेवी, धार्मिक रहनुमा, विभिन्न समुदायों की अगुवाई वाले सभी होते हैं। एन डी टी वी (15 जुलाई, 2014) की रिपोर्ट के अनुसार बिहार के कला, संस्कृति और युवा मामलों के मंत्री विनय बिहारी ने मोबाइल फोन और मांसाहारी भोजन को रेप का कारण बताया। 2 जुलाई, 2014 को तृणमूल कांग्रेस के नेता तपस पाल ने कहा- 'यदि कोई विपक्षी तृणमूल कांग्रेस की किसी लड़की, किसी पिता, किसी बच्चे को छूता है, तो मैं उसके पूरे परिवार को बर्बाद कर दूंगा। मैं अपने लड़कों को कहूंगा, कि वे उनका बलात्कार करेंगे, बलात्कार करेंगे। मध्य प्रदेश के भाजपा नेता बाबू लाल गौड़ ने हिन्दी फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी का उदाहरण (2007 में हॉलीवुड के एक मशहूर अभिनेता ने एक कार्यक्रम के दौरान स्टेज पर शिल्पा शेट्टी का चुम्बन लिया था, शिल्पा शेट्टी को इसमें कुछ गलत नहीं लगा था।) देते हुए कहा था- 'जब तक व्यक्ति स्वयं नहीं चाहेगा उसे कोई छू नहीं सकता।' मुम्बई के पूर्व पुलिस कमिश्नर सत्यपाल सिंह का कहना था कि जिन देशों के पाठ्यक्रम में सेक्स शिक्षा होती है, वहाँ महिलाओं के विरुद्ध अपराध बढ़ रहे हैं।

राजस्थान के अंजुमन मुस्लिम पंचायत ने फरमान जारी किया कि लड़कियों को अपने घर से बाहर मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए या किसी शादी समारोह में नाचे न, इससे लड़कों के साथ उनका संबंध नहीं होगा।' पंचायत ने नौजवानों को 'लव मैरेज' के खिलाफ चेतावनी दी, लव मैरेज करने वालों के परिवार पर रु. 51,000 का जुर्माना लगाया जाएगा। जमात-ए-इस्लामी हिन्द के महासचिव नुसरत अली ने वक्तव्य दिया था कि सहशिक्षा को समाप्त कर दिया जाना चाहिए और शिक्षा के सभी स्तरों पर महिलाओं के लिए पृथक शिक्षा की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। ऐसे ही कितने ही विवादास्पद बयान आए दिन सुनने को मिलते हैं। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक या अन्य लोग जिन्हें जनसामान्य भली-भाँति जानता और पहचानता है, जिनकी बातें गौर से सुनी जाती हैं, अपने इस तरह के बयानों से समाज में खलबली मचाते रहते हैं। बलात्कारी को दोष देने के बजाय लड़की के कपड़ों, खाने, तौर-तरीकों को गलत ठहराते रहते हैं। इस तरह के विचारों वाला देश या लोग विकास और आधुनिकीकरण की मुख्य धारा से कैसे जुड़ पाएंगे ? परम्परा के नाम पर बहके हुए ये लोग समाज को क्या दिशा देंगे ? आलोचना, भर्त्सना, थू-थू सुनने के बाद भी इस तरह की बयानबाजी रुकती ही नहीं।

प्रस्तुत अध्ययन यह जानने का प्रयास है कि इस तरह के बयानों के लिए शिक्षित महिलाएं और पुरुष क्या दृष्टिकोण रखते हैं। क्या महिलाओं और पुरुषों के दृष्टिकोण में अन्तर होता है ? इस अध्ययन के लिए 30 पुरुषों और 30 महिलाओं का चयन किया गया। महिलाओं को समूह 1 में तथा पुरुषों को समूह 2 में रखा गया। चयनित सभी सदस्य प्रौढ़ वर्ग के थे, सभी उच्च शिक्षा प्राप्त और नौकरीपेशा व मध्यवर्गीय सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे। विवादित और शर्मनाक बयानों के प्रति, अध्ययन के लिए चयनित, पुरुष और महिलाओं की सोच व दृष्टिकोण जानने के लिए 30 प्रश्नों की एक प्रश्नावली तैयार की गई। उत्तर देने के लिए तीन विकल्प दिए गए- हाँ/नहीं/कह नहीं सकते। प्रश्नावली के निर्देश में विवादित और शर्मनाक बयानों को उदाहरण सहित स्पष्ट करते हुए कहा गया कि प्रत्येक प्रश्न का उत्तर किसी एक विकल्प के नीचे (✓) का निशान लगाकर दें।



## प्रश्न 2014-15

प्राप्त आँकड़ों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है-

प्र.सं. प्रश्न

1. इस तरह के बयान देने वाले लोगों को क्या आप विकृत अड़ियल रुख वाला मानते हैं ?
2. क्या आपकी दृष्टि में अपनी राजनीति को चमकाने के लिए इस तरह के बयान दिए जाते हैं ?
3. इस तरह के बयान देने वाले लोगों को क्या आप सामान्य लोग मानते हैं ?
4. इस तरह के बयानों को क्या महज लपफाजी माना जाना चाहिए ?
5. इस तरह के बयान देने वाले लोग क्या मानवीय चेतना से शून्य होते हैं ?
6. इस तरह का बयान देने वालों को क्या इस बात का एहसास नहीं होता कि पुराने नियम नई पीढ़ी पर नहीं थोपे जा सकते ?
7. क्या इस तरह के बयानों के कारण महिलाएं अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में हिचकती हैं ?
8. इस तरह के बयान क्या महिलाओं के सार्वजनिक जीवन पर कुठाराघात हैं ?
9. इस तरह के बयान क्या महिलाओं को बनावटी जीवन जीने के लिए मजबूर कर सकते हैं ?
10. क्या इस तरह के बयान महिलाओं में हीन भावना पैदा कर सकते हैं कि वे स्वाधीनता का उपभोग करने की क्षमता नहीं रखती ?
11. इस तरह के बयान क्या महिलाओं के जीवन पर सेंसर लगाने का उपकरण बन सकते हैं ?
12. इस तरह के बयान क्या समुदाय में महिलाओं के लिए असंवेदनशीलता बढ़ा सकते हैं ?
13. क्या इस तरह के बयान स्त्री के व्यक्तित्व के विकास में बाधा डाल सकते हैं ?
14. क्या इस तरह के बयान महिलाओं की निजता पर प्रहार करते हैं ?
15. क्या इस तरह के बयान रुढ़िवादी

समूह	हाँ	नहीं	कह नहीं सकते
1	25	x	5
2	20	10	x
1	17	8	5
2	27	x	3
1	9	18	3
2	5	20	5
1	27	x	3
2	29	x	1
1	12	9	9
2	16	11	3
1	26	x	4
2	27	x	3
1	17	11	2
2	8	12	10
1	28	x	2
2	21	8	1
1	16	12	2
2	10	10	10
1	17	6	7
2	14	8	8
1	17	10	3
2	6	20	4
1	18	4	8
2	19	3	8
1	12	3	15
2	4	20	6
1	21	6	3
2	12	16	2
1	19	x	11



- परम्पराओं को मजबूत करते हैं ?
16. क्या इस तरह के बयान महिलाओं को निराशा की ओर ले जा सकते हैं ?
17. क्या इस तरह के बयान जन सामान्य की सोच कर असर डाल सकते हैं ?
18. इस तरह के बयान क्या यौन हिंसा पीड़ित महिलाओं में अपराध बोध भर सकते हैं ?
19. क्या पढ़ी-लिखी महिलाएं इस तरह के बयानों का प्रतिकार करने का साहस जुटा पाती हैं ?
20. इस तरह के बयान क्या महिला यौन हिंसा के खिलाफ अभियान को कमजोर बनाते हैं ?
21. इस तरह के बयानों का असर लेकर क्या अभिभावक अपनी बेटियों पर अधिक पाबंदी लगाने लगते हैं ?
22. इस तरह के बयानों के खिलाफ प्रशासन में अपनी भूमिका निभाने की इच्छा शक्ति दिखाई पड़ती है ?
23. क्या इस तरह के बयान महिलाओं और पुरुषों में टकराहट बढ़ा सकते हैं ?
24. इस बयानों को बीमार लोगों का बयान मानकर क्या महिलाएं अनसुना कर पाती हैं ?
25. क्या ऐसे बयानों से महिलाओं के संघर्ष में साथ देने वाले लोग हतोत्साहित हो सकते हैं ?
26. क्या इस तरह के बयानों के कारण बहुत से लोग लड़की का पैदा होना दैवीय दुर्भाग्य मानने लगते हैं ?
27. क्या इस तरह के बयान कम उम्र में बेटियों की शादी को बढ़ावा देते हैं ?
28. क्या आप इस तरह के बयानों को महिलाओं के प्रति क्रूरता का व्यवहार मानते हैं ?
29. क्या इस तरह के बयान अविवाहित नौकरी पेशा महिलाओं को अधिक असुरक्षा का एहसास कराते हैं ?
30. क्या इस तरह के बयान महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में सोचने में हतोत्साहित करते हैं ?

2	12	15	3
1	21	x	9
2	15	10	5
1	17	10	3
2	12	15	3
1	18	5	7
2	10	12	8
1	6	20	4
2	12	10	8
1	21	5	4
2	11	15	4
1	27	3	x
2	21	6	3
1	2	27	1
2	6	24	x
1	15	6	9
2	10	10	10
1	6	20	4
2	10	17	3
1	21	6	3
2	12	10	8
1	28	2	x
2	21	7	2
1	17	7	6
2	12	10	8
1	26	x	4
2	28	2	x
1	20	10	x
2	18	10	2
1	19	3	8
2	21	7	2



प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि-

1. अधिकांश महिलाएं और पुरुष मानते हैं कि इस तरह के बयान देने वाले अड़ियल रुख से होते हैं।
2. 57% महिलाओं और 90% पुरुषों की दृष्टि में अपनी राजनीति चमकाने के लिए ऐसे बयान दिए जाते हैं।
3. 60% से अधिक महिलाएं और पुरुष इस तरह के बयान देने वाले लोगों को सामान्य नहीं मानते।
4. 90% से अधिक महिलाएं और पुरुष इस तरह के बयानों को महज लफ्फाजी मानते हैं और मानते हैं कि इस तरह के बयान देने वाले लोगों को यह एहसास ही नहीं होता कि पुराने नियम नई पीढ़ी के ऊपर लागू नहीं किए जा सकते।
5. 57% महिलाएं मानती हैं कि इस तरह के बयानों के कारण महिलाएं अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पातीं। जबकि 40% पुरुष मानते हैं कि इन बयानों का महिलाओं की भावनात्मक अभिव्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
6. 93% महिलाएं तथा 70% पुरुष मानते हैं कि इस तरह के बयान महिलाओं के सार्वजनिक जीवन पर कुठाराघात हैं।
7. 50% से अधिक महिलाओं तथा 50% से कम पुरुषों के अनुसार इस तरह के बयान महिलाओं को बनावटी जीवन जीने को मजबूर करते हैं।
8. 50% से कुछ अधिक महिलाएं और 50% से कुछ कम पुरुष मानते हैं कि इस तरह के बयान महिलाओं में हीन भावना पैदा कर सकते हैं कि वे स्वाधीनता का उपभोग करने की क्षमता नहीं रखतीं।
9. 57% महिलाएं मानती हैं कि ये बयान महिलाओं के जीवन पर सेंसर का उपकरण बन सकते हैं, जबकि 67% पुरुष ऐसा नहीं मानते।
10. 60% महिलाओं और पुरुषों के अनुसार इस तरह के बयान समुदाय में महिलाओं के प्रति असंवेदनशीलता बढ़ा सकते हैं।
11. 50% महिलाएं कह नहीं सकतीं कि इस तरह के बयान महिलाओं के विकास में बाधा डाल सकते हैं या नहीं, जबकि 67% पुरुष ऐसा नहीं मानते।
12. इस तरह के बयानों को 70% महिलाएं, महिलाओं की निजता पर प्रहार मानती हैं, जबकि 53% पुरुष ऐसा नहीं मानते।
13. 63% महिलाएं और केवल 40% पुरुष मानते हैं कि इस तरह के बयान रूढ़िवादी परम्पराओं को मजबूत करते हैं।
14. 70% महिलाओं और 50% पुरुषों के अनुसार इस तरह के बयान महिलाओं को निराशा की ओर ले जा सकते हैं।
15. 56% महिलाएं मानती हैं कि इस तरह के बयान जन सामान्य की सोच पर असर डाल सकते हैं, जबकि 50% पुरुष ऐसा नहीं मानते।
16. 57% महिलाओं के अनुसार यौन पीड़ित महिलाओं में अपराध बोध भर सकते हैं, जबकि केवल 33% पुरुष ही ऐसा मानते हैं।
17. 67% महिलाएं मानती हैं कि पढ़ी-लिखी महिलाएं भी इस तरह के बयानों का प्रतिकार करने का साहस नहीं जुटा पातीं, जबकि केवल 33% पुरुष इस बात से सहमत हैं।
18. 70% महिलाओं और केवल 37% पुरुषों के अनुसार इस तरह के बयान महिला यौन हिंसा के खिलाफ अभियान को कमजोर बनाते हैं।
19. 90% महिलाओं और 70% पुरुषों का मानना है कि इस तरह के बयानों का असर लेकर अभिभावक अपनी बेटियों पर अधिक



पाबंदी लगाने लगते हैं।

20. 80% से अधिक महिलाओं और पुरुषों के अनुसार इस तरह के बयानों के खिलाफ प्रशासन में अपनी भूमिका निभाने की इच्छा शक्ति नहीं दिखाई पड़ती।
21. 50% महिलाएं मानती हैं कि इस तरह के बयान महिलाओं और पुरुषों में टकराहट बढ़ा सकते हैं, जबकि 33% पुरुष मानते हैं कि बढ़ा सकते हैं, जबकि 33% ही पुरुष मानते हैं कि नहीं बढ़ा सकते, 33% पुरुष इस संबंध में कुछ कह नहीं सकते।
22. 67% महिलाओं 57% पुरुषों का मानना है कि इन बयानों को बीमार लोगों का बयान मानकर महिलाएं अनसुना नहीं कर पातीं।
23. 70% महिलाओं के अनुसार ऐसे बयानों से महिलाओं के संघर्ष में साथ देने वाले लोग हतोत्साहित हो सकते हैं। जबकि केवल 40% पुरुष ही ऐसा मानते हैं।
24. 93% महिलाएं और 70% पुरुष मानते हैं कि इस तरह के बयानों के कारण बहुत से लोग लड़की पैदा होने को दैवीय दुर्भाग्य मानने लगते हैं।
25. क्या इस तरह के बयान कम उम्र में बेटियों की शादी को बढ़ावा देते हैं ? इस प्रश्न पर 57% महिलाओं और 40% पुरुषों ने 'हाँ' में उत्तर दिया, 20% महिलाओं और 27% पुरुषों का उत्तर था- 'कह नहीं सकते'।
26. 86% से अधिक महिलाएं और 93% से अधिक पुरुष इस तरह के बयानों को महिलाओं के प्रति क्रूरता का व्यवहार मानते हैं।
27. 60% से अधिक महिलाएं और पुरुष मानते हैं कि इस तरह के बयान अविवाहित नौकरीपेशा महिलाओं को अधिक असुरक्षा का एहसास कराते हैं।
28. 63% से अधिक महिलाओं और पुरुषों के अनुसार इस तरह के बयान महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में सोचने में हतोत्साहित करते हैं।

दुनिया भर में औरतों को बराबरी पर लाने की बहस चल रही है, तब हमारे यहाँ बलात्कार की घटनाओं पर शर्मनाक और विवादास्पद हरकत और क्या हो सकती है। महिलाओं के प्रति इससे ज्यादा असंवेदनशीलता हरकत और क्या हो सकती है ? बलात्कार के लिए दोषी बलात्कारी को न ठहरा कर तिरस्कार और अपराधबोध से महिलाओं को भर दिया जाता है। महिलाएं इस स्थितियों का विरोध करने का साहस भी नहीं जुटा पातीं। यह सोचना पड़ेगा कि कब तक महिलाओं के मुद्दे इस तरह के बेढब बयानों के दंश झेलते रहेंगे। इस तरह के बयान देने वालों को यह नहीं भूलना चाहिए कि इससे उनकी महिला विरोधी प्रवृत्ति भी उजागर होती है। परम्पराओं और रूढ़ियों को भोगती महिलाओं को अपनी स्थिति का भान कराना समय की माँग है।

इस अध्ययन से स्पष्ट पता चलता है कि इस तरह के बयान कोई मामूली बात नहीं है, ये समाज और आधी आबादी को इसने वाले फन होते हैं। लड़कियों से जीने का अधिकार भी छीन सकते हैं। लड़कियों से अपने दिमाग से सोचने, सपने देखने और कल्पना करने का अधिकार छीन लेते हैं। तमाम अधिकार और आरक्षण की बात करने से पहले उनकी संवेदनाओं के साथ खिलवाड़ करना बन्द होना चाहिए। उनकी भावनाओं की कद्र करना चाहिए उनकी सुरक्षा का कर्तव्य ऐसे निभाया जाना चाहिए। जिससे उनकी भावनाएं आहत न हो, संवेदनाएं बिखर न जाएं, घुटन और बंदिशें न महसूस हों।



## जीवन क्या है

तौकीर फात्मा रिजवी

बी.कॉम प्रथम वर्ष

जीवन चुनौती है - मुकाबला करो।  
 जीवन वरदान है - इसे स्वीकारो।  
 जीवन पीड़ा है - इसे क्रीड़ा बनाओ।  
 जीवन संग्राम है - इसे जीतो।  
 जीवन कर्तव्य है - इसे निभाओ।  
 जीवन सुअवसर है - लाभ उठाओ।  
 जीवन रहस्य है - इसे सुलझाओ।  
 जीवन यात्रा है - पूरी करो।  
 जीवन क्रीड़ा है - खेलो।  
 जीवन प्रतिज्ञा है - पूर्ण करो।  
 जीवन संघर्ष है - विजयी बनो।  
 जीवन विषाद है - प्रसाद बनाओ।  
 जीवन लक्ष्य है - प्राप्त करो।  
 जीवन प्रेम है - अनुभव करो।  
 जीवन प्रश्न है - उत्तर दो।  
 यूरोप कहता है - जीवन संघर्ष है।  
 भारत कहता है - जीवन सरल है और रहस्यमय भी है।

## आत्मविश्वास

ममता कुमारी मौर्य

छात्राध्यापिका- बी.एड.

मिल ही जायेगी तुझे मंजिल

ऐ राही बात मान

अपने कदमों को निरन्तर

उस राह में जाने तो दे।

मुश्किलें भी तोड़ देंगी दम, तुम्हारे सामने

अपने इरादों को तू

फौलाद बन जाने तो दे।

दुनिया का वो काम क्या

जो तुझसे हो सकता नहीं

अपने ही ऊपर तुझे

विश्वास आ जाने तो दे।।

## अनमोल वाणी

इन्दु

छात्राध्यापिका-बी.एड.

- माँ के ममत्व की एक बूँद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठा होती है।
- कर्तव्य ही ऐसा आदर्श है, जो कभी धोखा नहीं दे सकता।
- जब क्रोध आये तो उसके परिणाम पर विचार करो।
- यदि मानव सीखना चाहे तो उसकी हर एक भूल उसे कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती है।
- संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं शिक्षा सबसे बढ़कर है।
- ज्ञान ही वास्तविक सोना अथवा हीरा है।
- भगवान ने बुद्धि की कोई सीमा निर्धारित नहीं की।
- अपनी अज्ञानता का अहसास होना ज्ञान की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है।
- विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं।
- आपको असफल करके भी ईश्वर आपके प्रयत्न और परिश्रम को पुरस्कृत करते हैं।
- पिता के शब्दों से पवित्र मंत्र नहीं हैं।
- जिस प्रकार थोड़ी-सी वायु से आग भड़क सकती है, उसी प्रकार थोड़ी-सी मेहनत से किस्मत चमक सकती है।



## सर्व सत्ये प्रतिष्ठितम् (सत्यम्)

शिवांगी पाण्डेय  
बी०ए० प्रथम वर्ष

यद् वस्तु यथा अस्ति, तस्य तेन एव रूपेण कथनं सत्यं भवति। एतत् विपरीतं तु असत्यं भवति। सत्यस्योपरि एव संसारस्य स्थितः अस्ति। यदि कोऽपि सत्यं न वदेत् तदा संसारस्य लौकिक व्यवहारः कथं सिध्यते। यदा सत्येत् बिना लौकिकः व्यवहारः एवं न सिध्यति तदा पारलौकिकवस्तु कथं भविष्यति एतस्यां अवस्थायां सर्व सत्ये प्रतिष्ठितम् इति कथनं सत्यं एव। अत एव जिह्वायाः उपयोगः सत्य भाषणे अवस्थायां कर्तव्यम्।

जीवने सत्यस्य यादृशी आवश्यकता भवात् तादृशी अन्यस्य कस्य अपि वस्तुनः नास्ति। यदि समाजे कोऽपि सत्यं न वदेत् तदावय अन्यस्योपरि विश्वासं कथं करिष्यामः। विश्वासेन विना तु समाजे कमपि कार्यं न भविष्यति असत्य-वादिनः पुरुषस्य कोऽपि विश्वासं न करोति।

यः पुरुष सत्य एवं वदति स निर्भीकः भवति। तस्य हृदयं सर्वदा प्रसन्नं भवति। सर्वे जनाः तस्य आदरं कुर्वन्ति। सत्यवादी कस्य अपि निन्दां न करोति। असौ कदापि दुष्कर्माणि न करोति। शुभ कर्मणां च स्वस्य परस्य देशस्य समाजस्य च लाभं एव करोति इत्थं एव करोति इत्थं सत्येन लौकिक पारलौकिकं च कल्याण भवति।

अर्थात् सत्येन सदृशः अन्यः कोऽपि धर्मो न अस्ति। मिथ्या सदृश च किं अपि पापं न भवति। अस्माकं प्राचीनेषु ग्रन्थे रूधनेकेषां सत्यवादिनां उदाहरणानि सन्ति। यैः सत्येन न केवलं स्वस्य अपितु समाजस्य राष्ट्रस्य च महकल्याण कृतम्। तेषां नामानि अद्यापि सम्मान पूर्वक स्मर्यन्ते।

महाराजस्य हरिश् चन्द्रस्य नाम को न जानाति, येन सत्यस्य रक्षणाय स्वराज्य व्यक्तम्। पत्निं पुत्रं च दासौ

अकरोत्। स्वयमपि च चाण्डलस्य दासः अभवत्, परं सत्य न त्यक्तवान्।

न केवलं प्राचीन काले अपितु आधुनिकेऽपि काले महात्मना गांधिना सत्य मार्गानुसरणेन स्वतन्त्रता प्राप्ता। एवं स्थितेः स्पष्ट एवं यत् सत्यात् परः धर्म नास्ति। यदि सत्यस्य एतादृशं महत्वं नास्ति तदा एते महानुभावाः सत्यस्य। कृते कथं सुखं त्यक्त्वा दुखं अंगीकृतवन्तः।

असत्यस्य भाषणेन सदृशं अन्यत् पातकं अपि नास्ति। असत्य भाषणेन समाजस्य महतीहानिः भवति यदि। समाजे कोऽपि सत्यं न वदेत् तदा तु न्यायस्य मूलिच्छेद एव भवेत्। सर्वे च कपट व्यवहारिणाः भवेयुः येन केन प्रकारेण अपि च स्वार्थ साधने तत्पराः भवेयुः। येन च समाजे व्यवस्थायाः नाम अपि शेषं न भवेत् अतः मिथ्या सदृशः पातकं अपि नास्ति।

अब्दिगात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यन्ति।

अतः संसारे साफल्यं इच्छता, विजय इच्छता व पुरुषेण सत्यस्य पालनं कर्तव्यम्। मनसा, वाचा कर्मणा च सत्यस्य अनुष्ठानं लौकिकस्य पारलौकिकस्य च विजयस्य साधनं अस्ति। अतएव सत्यस्य महत्वं सर्वैः अंगीकृतम् उक्तं च सत्यपूता वदेद् वाचं मनः पूतं समाचरेत्।

ये केऽपि मानवाः जीवने साफल्यं लब्धवन्तः तैः सर्वैः एव सत्य मार्गानुसरणेन एव सफलता अधिगता। रामस्य विजयं, रावणस्य पराजयं, युधिष्ठिरस्य विजयं, दुर्योधनस्य पराजयं च को न जानाति। अधुना अपिकाले महात्मना सत्यस्य महिम्ना एव इंगलैण्डियाः पराजिताः बारं-बारं असफलतां लब्ध्वापि महात्या सत्य न त्यक्तवान् अन्ये च स्वोद्देश्यं पूरितवान्। परतन्त्रता पाशमुक्तां च भारतमातरं अकरोत्। इत्थं सत्य एव कथ्यते यत् सत्यस्य एव जय भवति असत्यस्य तु कदापि न भवति। अतः एव सविचार्य एव उक्तम्

सत्यमेव जयते नानृतम् इति ॥



## स्त्रीपुरुषयोः समाधिकारः

कु. ननकी देवी  
बी.ए. प्रथम वर्ष

स्त्रियः पुरुषाश्च मिलित्वा समाजस्य निर्माणं कुर्वन्ति, समाजस्य परिवारस्य च भारं वहन्ति। परन्तु समाजस्य कल्याणं तदा एव भवति यदा स्त्रीपुरुषयोः समभावो भवेत् । समभावस्य अयं भावः न नवीनः अपितु प्राचीनकालादेव प्रचलितः अस्ति। प्राचीन काले यथा पुरुषाः यथा पुरुषा विद्वांसः भवन्ति स्म तदैव स्त्रियाः अपि विदुष्यः भवन्ति स्म, यथा गार्गी, अपाला, लोपामुद्रा, सावित्री, भारती तथैवान्याः अपि बहव्यः विदुष्यः आसन् ।

वैदिकवाङ्मये नार्यः मन्त्रदृष्टयः अभवन् , यथा- अपाला - घोषा - रोमगा - विश्ववारा - लोपा मुद्रा - सावित्री - प्रभृतयः। पुरा सामूहिकयज्ञेषु युद्धेषु च स्त्रियाः भागं गृहणन्ति। स्म। गार्गी, ब्रह्मवादिनी, तीक्ष्णबुद्धिः अध्यात्मतत्त्वस्य विवेचिका च अभवत् । सा याज्ञवल्क्येन सह शास्त्रार्थमकरोत् तथा याज्ञवल्क्यं निरुत्तरम् अकरोत्। याज्ञवल्क्यपत्नी मैत्रेयी अपि प्रज्ञावती सूक्ष्मविवेचिका परमतत्त्वचिन्तने दक्षा चासीत् आचार्यमण्डनमिश्रस्य पत्नी भारती अतीव विदुषी साक्षात् सरस्वत्यवतारभूता आसीत् । तस्याः वैशिष्ट्यमिदं यत् आचार्यशङ्करेण सह सा मण्डनमिश्रस्य शास्त्रार्थं निर्णायिकाऽभवत् । यदा मण्डनमिश्रः पराजितोऽभवत् तदा स्वयमपि सा शास्त्रार्थ शङ्करेण सह कृतवती। आधुनिके समाजेऽपि स्त्रियः पुरुषस्य समकक्षां प्राप्तुं मग्नसराः सन्ति। दृश्यतां तावत् - विमान चालने, चन्द्रगमने जलयानचालने ताः अग्रेसरन्ति। साम्प्रतं मनुष्याणां जीवनदृष्टिः परिवर्तिता। पुरुषवत् स्त्रियः अपि सार्वजनिकराजकीयसेवासंलग्नाः दृश्यन्ते। व्यापारे आपणेष्वपि तासां संख्या पुरुषापेक्षया अन्यूना। सम्प्रति राजनीतौ अपि स्त्रियाः पुरुषैः सार्धं सहयोगितया प्रगतिं कुर्वन्ति। ताः पार्श्व विधायक- सांसदेत्यादीनि पदानि चालं कुर्वन्ति भाषणेऽपि तासाम् ओजस्विता अवलोक्यते। किं

बहुना, राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्रि मन्त्रि - प्रभृतीनि महत्त्वपूर्णानि पदानि भूषयन्त्यः गौरवं लभन्ते। को नाम न जानाति - सरोजिनी नायडु - विजयलक्ष्मी पण्डित - सुचेताकृपलानी - पद्मजा नायडु - इन्दिरा गान्धी- अरूणाआसफ अली प्रभृतीनां स्त्रीरत्नानां नामानि ? क्रिकेट - बालीबाल, टेनिसेत्यादिषु - पाश्चात्यक्रीडाक्षेत्रेष्वपि नवाः युवतयः बालिकाश्च देशान्तरेषु गत्वा विजयं प्राप्य जगति भारतस्य मानं वर्धयन्ति। आधुनिके समये तु कबड्डीभारतोलनसदृशीषु भारतीयक्रीडास्वपि ताः स्पर्धन्ते। सम्पन्नयाम्। ओलम्पिकक्रीडा प्रतिस्पर्धायां भारोत्तोलने कर्णमल्लेश्वरी पदकं प्राप्तवती। शिक्षाक्षेत्रेऽपि युवतयः प्राध्यापकाचार्यपदेषु प्रतिष्ठिताः सन्ति। केवलं न कुलपतिपदं प्रत्युत मन्त्रि पदमपि ताः भूषयन्ति। स्त्रीपुरुषयोः अयं समभावः समाधिकारो वा नूनमेव समाजस्य प्रगतिपथं पुष्पाति।

## प्रहेलिकाः

इन्दु

छात्राध्यापिका-बी.एड.

1. न तस्यादिः न तस्यान्तः मध्ये यः तस्य तिष्ठति।  
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद् वद।।  
(उत्तर- नयनम्)
2. प्रकाशः शीतलः यस्य यः कलाभिः च वर्धते।  
तापं हरति सर्वेषां चकोरस्य प्रियः स कः।।  
(उत्तर-चन्द्रः)
3. वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः  
त्रिनेत्रधारी न च शूत्रपाणिः  
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी  
जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः।।

(उत्तर-नारिकेलः)



## शतबुद्धि-सहस्रबुद्धि-कथा

मधु केशरी  
बी.ए. प्रथम वर्ष

कस्मिंश्चिद् जलाशये शतबुद्धिः सहस्रबुद्धिश्चेति द्वौ मत्स्यौ निवसतः स्म। तयोः एकबुद्धिनामकेन मण्डूकेन मित्रताऽभवत् । कदाचिज्जालहस्ताः धीवराः तं जलाशयमुपगताः तेषु एको धीवरः अवदत्-एतस्मिन् जलाशये बहवो मत्स्याः सन्ति अतः तान् ग्रहीतुं श्वोडत्र जालं क्षेप्यामः। तच्छ्रुत्वा मत्स्याः दुःखिनः अभवन् । तेषु मण्डूकः प्राह-भोः शतबुद्धे। श्रुतं धीवरोक्तं भवता। ततः किं कर्तव्यम् ? पलायनमवष्टम्भो वा। सहस्रबुद्धिः अवदत् - मित्र ! मा भैषीः । केवलं वचनश्रवणादेव न भेतव्यम् ।

सर्पाणां च खलानां च सर्वेषां दृष्टचेतसाम् ।

अभिप्राया न सिध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत ।।

शतबुद्धिरपि अकथयत् साधु उक्तं तपया। त्वां सहस्रबुद्धिः असि। तप सदृशी बुद्धिः कस्यापि नास्ति। वचनमात्रेण स्वजन्मस्थानं न त्याज्यम् ।

अहं त्वां सुबुद्धिप्रभावेण रक्षयिष्यामि। मण्डूक आह-भोः। मम त्वेका एव बुद्धिः। अहं तू अत्र न स्थास्यामि। अन्यं जलाशयं गमिष्यामि। एवमुक्त्वा सः अन्यजलाशयं गतः। ततः प्रभाते धीवरैः आगत्य जालमध्ये मत्स्य-कूर्म-मण्डूक कर्कटादयो निगृहीताः। शतबुद्धिसहस्रबुद्धिमत्स्यौ अपि निगृहीतौ। अपराहणे सुखं गच्छत्सु धीवरेषु एकस्य स्कन्धे अरोपितं शतबुद्धिम् अपरस्य हस्ते प्रलम्बमानं सहस्रबुद्धिं चालोक्य मण्डूकः स्वपत्नीमकथयत् -

शतबुद्धिः शिरस्थोडयं लम्बते च सहस्रधीः।

एकबुद्धिरह भद्रे! क्रीडामि विमले जले।।

## पञ्चशील-सिद्धान्ताः

प्रीती सिंह  
बी.ए. प्रथम वर्ष

पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्ताः। महात्मा गौतमबुद्धः एतान् पञ्चापि सिद्धान्तान् पञ्चशीलमिति नाम्ना स्वशिष्यान् शास्ति स्म। एत एवायं शब्दः अधुनापि तथैव स्वीकृतः। इमे सिद्धान्ताः क्रमेण एवं सन्ति- (1) अहिंसा (2) सत्यम् (3) अस्तेयम् (4) अप्रमादः (5) ब्रह्मचर्यम् इति।

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्। परमथ इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगकारणानि, विश्व-बन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति। राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरू- महोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य

एवाभवत् । यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ। आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः। एवं च व्यवस्थिताः-

1. किमपि राष्ट्रं कस्यचनान्यस्य राष्ट्रस्य आन्तरिकेषु विषयेषु क्रीदृशमपि व्याघातं न करिष्यति।
2. प्रत्येकराष्ट्रं परस्परं प्रभुसत्तां प्रादेशिकीमखण्डताञ्च सम्मानयिष्यति।
3. प्रत्येक राष्ट्रं परस्परं समानतां व्यवहरिष्यति।
4. किमपि राष्ट्रमपरेण नाक्रंस्यते।
5. सर्वाण्यपि राष्ट्राणि मिथः स्वां स्वां प्रभुसत्तां शान्त्या रक्षिष्यन्ति।

विश्वस्य यानि राष्ट्राणि शान्तिमिच्छन्ति तानि इमान् नियमानङ्गीकृत्य परराष्ट्रैस्साद्धं स्वमैत्रीभावं दृढीकुर्वन्ति।



### आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः

अम्बिका लाम्बा  
बी.ए. द्वितीय वर्ष

याज्ञवल्क्यो मैत्रेयीमुवाच- मैत्रेयि! उद्यास्यन् अहम् अस्मात् स्थानादस्मि। तत्तस्तेडनया कात्यायन्या विच्छेद करवाणि इति। मैत्रेयी उवाच-यदीयं सर्वा पृथ्वी वित्तेन पूर्णा स्यात् तत कि तेनाहममृता स्यामिति। याज्ञवल्क्य उवाच नेति।

यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात् । अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति। सा मैत्रेयी उवाच-येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम् ? यदेव भगवान् केवलममृतत्वसाधनं जानाति तदेव मे ब्रूहि। याज्ञवल्क्य

उवाच-प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे। एहि, उपविश, व्याख्यास्यामि ते अमृतत्वसाधनम् ।

याज्ञवल्क्य उवाच-न वा अरे मैत्रेयि। पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति। आत्मनस्तु वै कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे, जायायाः कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु वै कामाय जाया प्रिया भवति। न वा अरे, पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रिय भवति। न वा अरे, सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय सर्वं प्रियं भवति।

तस्माद् आत्मा वा अरे मैत्रेयि। द्रष्टव्यः दर्शनार्थं श्रोतव्यः, मन्तव्य, मन्तव्यः निधिध्यासितव्यश्च। आत्मनः खलु दर्शनेन इदं सर्वं विदितं भवति।

### तीर्थराजः प्रयागः

संजना पाण्डेय  
बी.ए. तृतीय वर्ष

प्रयागः सर्वेषु तीर्थेषु श्रेष्ठः अस्तिः, अतः अयं तीर्थानां राजा तीर्थराजः अस्ति। अत्र ब्रह्मा श्रेष्ठं यागम् अकरोत् । प्राचीनकालेडत्र बहवः अश्वमेधादयः यज्ञाः सम्पन्नाः अभवन् , अतोडस्य नाम प्रयागोडस्ति। अकबरः अस्य नाम स्वकीयस्य इलाही धर्मस्य अनुसारेण 'इलाहाबाद' इति अकरोत् । प्रयागः उत्तर प्रदेशराज्येडस्ति । अतएव गङ्गा-यमुना-सरस्वतीनां तिसृणां नदीनां सम्मेलनं भवति। आसां नदीनां पवित्रे सङ्गमं अनेकलक्षाः जनाः स्नानं कुर्वन्ति, आत्मानं च पावयन्ति।

प्रतिद्वादशवर्षम् अत्र कुम्भपर्वः, भवति। अक्मिन् पर्वणि देशस्य सुदूरेभ्यः भागेभ्यः आगत्य तीर्थयात्रिणः सङ्गमं स्नानं कुर्वन्ति। सङ्गमे च स्नात्वा विदुषां महात्मनां च उपदेशामृतं शृण्वन्ति।

प्रयागः विविधविद्यानां प्रमुखं केन्द्रम् अस्ति। अत्र प्रयाग-विश्वविद्यालये ज्ञानविज्ञानादीनां शिक्षा दीयते यत्र सहस्रशः विद्यार्थिनः ज्ञानार्जनाय सुदूरेभ्यः देशेभ्यः आगच्छन्ति।

उत्तरप्रदेशराज्यस्य उच्चन्यायालयः, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, हिन्दी साहित्य सम्मेलनम्, प्रसिद्धम् आनन्दभवनम् च अत्र विराजन्ते। भारतवर्षस्य त्रयः प्रधानमन्त्रिणः अत्र जन्म अलभन्त।

अन्तस्थो महर्षेः भारद्वाजस्य आश्रमः, सम्राटो अशोकस्य स्तम्भो, अकबरस्य दुर्गश्च अस्य ऐतिहासिकं महत्त्वम् कथ्यन्ति। अत्रत्या छात्राः राष्ट्रस्य स्वतंत्रता संग्रामे महत् कार्यं अकुर्वन् । भारतवर्षस्य उत्तरप्रदेश राज्ये प्रयाग विशिष्टं स्थानं अस्ति। एवं गङ्गायमुना-सरस्वतीनां पवित्र सङ्गमं स्थितस्य भारतीय संस्कृते केन्द्रस्य च महिमानं वर्णयम् । अक्षयवटश्चापि अत्रैव विद्यते। एवं अस्य स्थानस्य पवित्रता सम्यक् ख्याताश्चि।



वर्धमानः महावीरः

कु. ननकी देवी  
बा.ए. प्रथम वर्ष

भारतवर्षे प्रचलितेषु धर्मसम्प्रदायेषु जैनधर्मः महत्त्वं भजते। वर्धमानः महावीरः एतस्य जैन धर्मस्य अन्यतमः श्रेष्ठो महापुरुषः आसीत्। तस्य जन्म ईसा पूर्वं 599 तमे वर्षे वैशाली नगरस्य कुण्डग्रामे अभवत्। बाल्यकाले तस्य नाम वर्धमानः इत्यासीत्। तस्य पितुः नाम सिद्धार्थः मातुश्च नाम त्रिशाला इत्सीत्। सः शैशवात् एव बुद्धिमान् सदाचार सम्पन्नः विचारशीलश्च आसीत्। तस्य विवाहः यशोदा नाम्न्या राजकुमारी सह अभवत्। तस्य एका पुत्री प्रियदर्शिनी अजायत। वर्धमान बाल्यकालादेव विरक्त आसीत्। समाजे प्रचलितः आऽम्बरः, वर्ग भेदः जीवहिंसा च तस्य मनसः विकलतायाः कारणानि आसन्। पितरि दिवङ्गते तस्य मनः शोकोद्विग्नमभवत्। मोहं मायां च परित्यज्य सः स्वभ्रातुः अनुमतिं गृहीत्वा संन्यासं गृहीतवान्। तदानीं सः त्रिंशद्वर्षवयस्क आसीत्। कठिनेन तपसा सः सत्यस्य शान्तेश्च अन्वेषणे प्रवृत्तोऽभवत्। द्वादशवर्षाणि यावत् तपः तप्त्वा सः ज्ञानं प्राप्नोत्। तपसा सः इन्द्रियाणि संनियम्य महावीरः जिनो वा अभवत्। जैनमतानुसारेण वर्धमानमहावीरात् पूर्वं त्रयोविंशतिः तीर्थङ्कराः अभवन्। महावीरः जैनधर्मस्य अन्तिमः चतुर्विंशः तीर्थङ्करः आसीत्। ज्ञानप्राप्तेः अनन्तरं महावीरः त्रिंशत् वर्षाणि यावत् जैनधर्मस्य महता उत्साहेन प्रचारम् अभवत्। शनैः -शनैः भारतस्य प्रायशः सर्वेषु राज्येषु जैनधर्मस्य सम्यक् प्रचारः सज्जातः। तेन प्रदर्शितेन मार्गेण जनाः कैवल्यं प्राप्तुं समर्थाः भवन्ति। तस्य मतेन न केवलं मनुष्याः पशवः पक्षिणः वा प्राणवन्तः अपितु वृक्षादिषु प्रस्तरादिष्वपि प्राणाः सन्ति। महावीरस्य उपदेशानुसारेण सम्यक् - दर्शनम्, सम्यक् - ज्ञानम्, सम्यक् - चरित्रम् इति त्रिरत्नोपासनया जनाः मोक्षं लभन्ते। शुद्धाचरणाया सत्य -अहिंसा- अस्तेय - ब्रह्मचर्य - अपरिग्रह इति पञ्चमहाव्रतानां विधानं सः अकरोत्। साधारणजनैः सह बिम्बिसार- अजातशत्रुप्रभृतयो राजानः अपि तस्य उपदेशैः प्रभाविताः अभवन्। तेनोपदिष्टस्य मार्गस्य सत्यम् अहिंसा च आधारभूते स्तः। दिसप्ततिवर्षवयसि पाटलिपुत्रसमीपे पावापुरीस्थाने महावीरः रूग्णो जातः निर्वाणं च प्राप्तः।

सुभाषितानि

इन्दु

छात्राध्यापिका-बी.एड.

1. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।  
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
2. सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।  
एतद् विदयात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥
3. वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम्।  
वृथा दानं समर्थस्य वृथा दीपो दिवापि च ॥
4. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।  
व्यसनेन तु मुर्खाणां निद्रया कलहेन ॥
5. विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः।  
परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम् ॥
6. किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः।  
विद्यागन पूज्यते लोके नाविद्यः परिपूज्यते ॥
7. वेशेन वपुषा वाचा विद्यया विनयेन च।  
वकारैः पञ्चभिर्युक्तं नरो भवति पूजितः ॥
8. त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधुसमागमम्।  
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मर नित्यमनित्यताम् ॥
9. षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्याः भूतिमिच्छता।  
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥
10. उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।  
षडेते यत्र वर्तन्ते, तत्र देवः सहायकृत् ॥
11. गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि।  
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥
12. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु  
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।  
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा  
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥



“विराजते भारतभूमिरेषा”

नलिनी निषाद  
बी.ए. द्वितीय वर्ष

हिमालयो यन्मुकुटं मनोजं,  
रत्नाकरो यच्चरणो पसेवी।  
गङ्गादिभि सुन्दर-हाररम्या,  
विराजते भारत भूमिरेषा।।

विन्ध्याटवी यत्र सुमध्यदेशा-  
डलङ्काररूपा नवनील कान्तिः।  
काञ्चीव सद्भृंगरवैः स्वनन्ती,  
विराजते भारतभूमिरेषा।।

पाञ्चालवङ्गौ किल बाहुरूणै  
शिरश्च काश्मीरमयं चकास्ति।  
उरु महाराष्ट्र-सुकोङ्कणाख्यौ,  
विराजते भारतभूमिरेषा।।

यस्याः सुभूमेर्हृदयं सुरम्यो-  
त्तर प्रदेशः कमनीयनामा।  
यं प्राप्य गङ्गायमुने सुमुक्ता।  
हाराभिरामे परिष्वजाते।।

यस्यामयोध्या सरयूतटस्था,  
सुपालिता या रविवंशीरैः।  
सुसेव्यमानाऽमल भक्तवृन्दैर-  
विराजते भारत भूमिरेषा।।

यत्रावतीर्ण नररूपाधारि-  
त्रैलोक्य शल्योद्धरणाय धाम।  
रामाभिधं यत्र रमन्त्रि धीरा,  
विराजते भारतभूमिरेषा।।

यस्यां गीरिभीति स चित्रकूटः  
सन्दर्शनेनार्दित-पापकूटः।  
श्री रामपादाङ्गमनन्यलभ्यं

द्रवद्दहा यः सततं दधाति।।  
मन्दाकिनी यत्र सुपुण्यतोया,  
धुनोति पापौधमहीनवेगा।  
श्रीजाकीपाद-सरोजगन्धो-  
न्मत्तेव विस्फूर्जितमाचरन्ती।।

श्रियां, निधानैः पुलिनैर्नदीनां,  
सरोजलैर्दर्पण-निर्मलैश्च।  
स्मृताऽपि सद्यो हरते मनासि,  
विराजते भारतभूमिरेषा।।

वृन्दावनी यत्र महामनोज्ञा,  
सत्प्रेमभूमिः सुजनैकगम्या।  
नृत्यन्ति यस्यां सुमनो-मयूरा-  
नित्यं घनश्याम-निबद्धभावाः।।

अद्यपि यस्यां सरसैकमूर्तिर,  
गौपेः समेतः सवयोडन्तरङ्गैः।  
गोपीरनन्यामलभावरम्या,  
निकुञ्जसंस्थो रमयन् विभाति।।  
विराजते यत्र शिवश्चिदात्मा,  
ज्योतिमर्य-द्वादशालिङ्गरूपी।  
प्रर्वतयन् सत्यपथे प्रज्यः स्वा-  
विराजते भारतभूमिरेषा।।

पुर्यश्च ता मुक्तिविधानदक्षा-  
लोकान पुनाना विलसन्ति यत्र।  
विद्या तपो-योग-वितानलीना  
विराजते भारत भूमिरेषा।।

शौद्धोदनिर्यत्र गुरुर्महात्मा,  
श्री शङ्कराद्या गुरवो फलन्तः।  
भक्ताश्च मीरा-तुलसी-पुरोगा,  
विराजते भारत भूमिरेषा।।

श्रीराम कृष्णाः परहंसदेवा,  
गौराङ्गचैतन्यमहाप्रभुश्च।



## एन.सी.सी.



NCC 2015 राष्ट्रीय छात्रों की उन्नत युवाओं की ओर से एन सी सी कैडेट क्लब का अग्रिम कार्यक्रम

नेशनल कैडेट कोर अर्थात सम-सैन्य अभ्यास छात्राओं की ऊर्जा को प्रखर बनाने का सशक्त साधन है। कैडेट्स में एकता अनुशासन, साहस, मैत्री, नेतृत्व क्षमता, निःस्वार्थ सेवा, क्रीड़ा कौशल

विकसित कर उनकी प्रतिभा राष्ट्रोन्मुखी बनाने के उद्देश्य से महाविद्यालय में सत्र 2008-09 से एन.सी.सी प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया। एन.सी.सी में सीनियर डिवीजन हेतु 'B' प्रमाण पत्र की अवधि दो वर्ष तथा 'C' प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अवधि एक वर्ष है



तथा कैडेट ज्योति पाण्डेय का राष्ट्रीय स्तर पर कबड्डी खेल प्रतियोगिता दिल्ली हेतु चयन होने पर महाविद्यालय द्वारा ग्यारह-ग्यारह सौ रुपये का पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। पूर्व राष्ट्रपति कलाम द्वारा इस पुरस्कार राशि को प्राप्त करना छात्राओं का अविस्मरणीय क्षण

अर्थात पूरे प्रशिक्षण की अवधि तीन वर्ष है।

महाविद्यालय में 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन एन.सी.सी. इलाहाबाद द्वारा आवंटित एन.सी.सी. की एक प्लाटून अर्थात 55 कैडेट्स कार्यरत है। इस सत्र में कैडेट्स ने विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभागिता कर स्थान व पदक अर्जित किया। सर्वप्रथम फैजाबाद में सम्पन्न हुए बेसिक लीडरशिप कोर्स (BLC) में महाविद्यालय की 21 कैडेट्स ने प्रतिभागिता की। इंटीग्रेटेड ग्रुप कम्पटीशन लखनऊ, प्रदेश स्तर कैम्प के लिए 3 कैडेट्स - नेहा, सृष्टि कुशवाहा व प्रकृति कुशवाहा

चयनित की गई। अजमेर ट्रेकिंग के लिए कैडेट आराधना पाल का चयन किया गया। एडवांस लीडरशिप कोर्स, आसाम जोरहट के लिए चार कैडेट्स - कीर्ति पाण्डेय, हर्षिका सोनी, दीपशिखा और नेहा सिंह का चयन किया गया। इलाहाबाद ग्रुप एन.सी.सी. द्वारा आयोजित स्वच्छता अभियान में महाविद्यालय की कैडेट्स ने प्रतिभागिता की। महाविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय अकादमिक प्रतिभा सम्मान समारोह "दामोदर श्री" में महाविद्यालय की दीपशिखा व हर्षिका सोनी ने पायलट के रूप में कार्य किया। सरदार पटेल जयंती यानी राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में महाविद्यालय कैडेट्स ने एक रैली निकाल कर एकता का संदेश दिया।

महाविद्यालय में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के आगमन पर आयोजित 'संवाद यात्रा' कार्यक्रम में, पायलट के रूप में थी- कैडेट दुर्गेश नन्दिनी और कैडेट ज्योति पाण्डेय। कैडेट दुर्गेश नन्दिनी का थल सैनिक कैम्प - दिल्ली

रहा। इन्हीं छात्राओं को इलाहाबाद ग्रुप एन.सी.सी द्वारा आयोजित एन.सी.सी. दिवस पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इ.वि.वि. के कुलपति, प्रो.एन.आर.फारूकी द्वारा भी पुरस्कृत किया गया। दिल्ली में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर लेफ्टिनेट डॉ. रेखा रानी ने रिपब्लिक डे कैम्प में कोटिजेंट आफिसर के रूप में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया।



## रेन्जर



आपातकालीन परिस्थितियों में समाज, राष्ट्र और विश्व को सेवा प्रदान करने हेतु दिया जाने वाला प्रशिक्षण रेन्जर है। जिसका उद्देश्य स्वस्थ सुखी और सहयोगी नागरिक बनाना है। रेन्जर केवल छात्राओं का शारीरिक विकास ही नहीं करता अपितु प्रशिक्षण एवं सर्वांगीण शिक्षा के माध्यम से जागरूक और उत्तरदायी भी बनाता है।

प्रत्येक वर्ष की भाँति महाविद्यालय में 16.2.2015 से 20.2.2015 तक रेन्जर शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में प्रशिक्षण के विभिन्न स्तर पर, प्रवेश में 22, प्रवीण में 13 और निपुण में 22, कुल 57 रेन्जर्स को प्रशिक्षित किया गया।

रेन्जर के नियम, सिद्धान्त, प्रतिज्ञा, उद्देश्य आदि के विषय में जानकारी देने के साथ-साथ रेन्जर्स को प्रार्थना गीत, झण्डागीत भी सिखाये गये। इसके अतिरिक्त गांठे बाँधना, तम्बू गाड़ना, पुल बनाना, प्राथमिक चिकित्सा, एक बर्तन, एक तीली से खाना बनाना आदि का भी प्रशिक्षण छात्राओं को दिया गया। गाड़ड की अनेक तालियाँ बजाना भी रेन्जर्स को सिखाया गया।

शिविर में रेन्जर्स को टोलियों में बाँटा गया, सभी टोलियों के

रेन्जर्स ने तम्बू गाड़कर उसमें आकर्षक सजावट की, जिसमें हस्त कौशल जैसे- पेन्टिंग, चार्ट प्रदर्शन, रंगोली, फैशन डिजाइनिंग, ग्लेशियर आदि की मिट्टी से विभिन्न कलात्मक वस्तुओं का निर्माण और प्रदर्शन किया।

पाँच दिवसीय शिविर में विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। विभिन्न समसामायिक विषयों जैसे - पर्यावरण संरक्षण, जनसंख्या शिक्षा, साक्षरता, विश्व मित्रता, स्वच्छता प्रोत्साहन, रक्तदान, भ्रष्टाचार, पल्स पोलियों, दहेज प्रथा, मँहगाई, गरीबी, एड्स अवेअरनेस, साइबर क्राइम, कैंसर जागरूकता, नारी सशक्तीकरण, प्रदूषण, आई रिलीफ कैम्प, ग्लोबलाइजेशन आदि विषयों पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के अलावा प्रवेश, प्रवीण, निपुण के रेन्जर्स ने इन विषयों पर एक्सटेम्पोर स्पीच भी दी। डॉ. ज़ेबा नकवी ने "सांस्कृतिक विरासत" और डा. रूची मालवीय ने "साक्षरता" विषय पर व्याख्यान देकर रेन्जर्स को लाभान्वित किया। शिविर के अन्तिम दिन पर सर्वधर्म प्रार्थना के साथ रेन्जर्स को दीक्षा दिलायी गई। शिविर में प्रशिक्षण देने का कार्य लीडर ट्रेनर सुश्री उषा कुशवाहा द्वारा किया गया।



## Child Labour : Abuse to the Nation

Ruchi Vishwakarma

B.A. Part Two

India, an IT giant and the world's second-fastest growing major economy, has millions of Rajus: all under 14 years of age, some as young as 4 or 5 and all toiling hard just to get a square meal to keep body and soul from parting company. Child labour is a dagger through India's soul. The country has the dubious distinction of being home to the largest child labour force in the world, with an estimated 30 percent of the world's working kids living here.

His liquid eyes, twin pools of innocence, have a sparkle that only children are blessed with. He speaks in a staccato burst, tripping over his words and lisps a current Bollywood hit with glee.

His toothy, impish grin belies the fact that while other children of his age are either playing or being schooled, he is forced to serve food to people at the dhaba that he works at on the Mumbai-Nagpur highway near Jalgaon in Maharashtra. He does not seem to be a day over ten years old, but insists he is fourteen.

Raju- he doesn't offer his surname- goes about his chore with a cheerfulness that is almost heart-breaking. If he knows that he has been deprived of the right to childhood or of the joys of being a goofy kid or to fulfill his true potential, he disguises it well behind his infectious smile.

He has no inkling of what the future holds for him nor does he seem to care. He is just too busy trying to earn enough to buy some food so that he and his family do not go to bed hungry.

Today, though, he is happy, secure in the knowledge that he would not have to make do with water alone when he goes to bed after a grueling 12-hour work day at the dhaba.

Today millions of children work as labourers in various businesses in India. You find

children being exploited in restaurants, silk industry, carpet weaving, firecracker units, etc.

These kids are forced to work to help their poor families, but this robs them of their right to childhood and all its associated joys. Child labour also crushes their right to normal physical and mental development, to education and thus to a healthy, prosperous life.

Nearly 85 percent are engaged in traditional agricultural activities. Less than 9 percent work in manufacturing, services and repairs. About 0.8 percent work in factories.

The most inhuman form of child exploitation is the age old practice of bonded labour in India. Here children are sold to the buyer like a commodity for a certain period of time. The labour that the child is subjected to is treated as collateral security and exploiters "buy" them for small sums at exorbitant interest rates.

There are many reasons for child labour. Poverty is the biggest reason for child labour in India. The small income labourers are also absorbed by their families.

Absence of compulsory education at the primary level, parental ignorance non-availability and non-accessibility of schools, boring and unpractical school curriculum and cheap child labour are some other factors which lead to child labour.

Businesses save money as child labour is cheap and kids can be easily exploited, taking advantage of their parents' poverty and helplessness. This further spurs the rise of child labour in the country. So factories find loopholes and get round the way by declaring that the child labourer is a distant family member or is about 14 years of age.

Child labor in India is mostly practiced in restaurants, roadside stalls; matches, fireworks and explosives industry; glass and bangles factories; beedi-making; carpet-making; lock-making; brassware; export-oriented garment units; gem polishing export industry; slate mines and manufacturing units; leather units, diamond industry;



building and construction industry brick kilns, helpers to mechanics, masons, carpenters, painters, plumbers, cooks etc.

Thousands of affluent Indians hire youngsters for household chores and to look after their own kids, under the pretext of providing some money to the parents of the child labourers and of offering a better life than he/she would normally have had.

Non-governmental organizations working towards eradicating child labour in India say that; Two out of every three working children are physically abused.

Over 50 percent children were being subjected to one or the other form of physical abuse.

50.2 percent children worked seven days a week.

53.22 percent children reported having faced one or more forms of sexual abuse.

21.90 percent child respondents reported facing severe forms of sexual abuse and 50.76 percent other forms of sexual abuse.

Every second child reported facing emotional abuse.

The Indian Constitution says that child labour is a wrong practice and standards should be set by law to eliminate it. The Child Labour Act of 1986 implemented by the government of India makes child labour illegal in many regions and sets the minimum age of employment at 14 years. No Seven days a week, these children toil as hard as their tender bodies can allow them to, working in inhuman conditions in cramped, dim rooms, breathing toxic fumes, and every now and then being subjected to verbal and physical violence by their employers. These young children work for hours on end, suffering from constant fatigue.

Most of these kids work for as Rs. 300 to Rs. 500 a month; sometimes for no money at all as they are given food to survive.

Government statistics say that there are 2

crore (20 million) child labourers in India, a country that has ambitions of becoming a global superpower in a few years. Non-governmental agencies assert that the figure is more than 6 crore (60 million) including agricultural workers; some claim that the number could be 100 million, if one were to define all children out of school as child labourers.

The International Labour Organization estimates that 218 million children ages 5-17 are engaged in child labour the world over.

An estimated 14 percent of children in India between the ages of 5 and 14 are engaged in child labour activities, including carpet production.

It would cost \$760 billion over a 20 year period to end child labour. The estimated benefit in terms of better education and health is about six times that-over \$4 trillion in economies where child labourers are found.

Some children are forced to work up to 18 hours a day, often never leaving the confines of the factory or loom shed.

Children trafficked into one form of labor may be later sold into another, as with girls from rural Nepal, who are recruited to work in carpet factories but are then trafficked into the sex industry over the border in India.

A recent report, produced by the International Confederation of Free Trade Unions, says there are as many as 60 million children working in India's agricultural, industrial and commercial sectors. The report argues that India's booming economy takes advantage of children workers to aid its growth and to bring wealth to a minority.

Even though the urban centers see many child labourers, estimates say that about 80 percent of child labourers reside in rural India, where they are forced to work in agricultural activities such as fanning, livestock rearing, forestry and fisheries.

Reports say that there are more children under the age of 14 in India than the entire population of the United States. And children under 14 years of age account for about 4 percent of the total labour force in



the country. Of these children, nine out of every ten work in their own rural family settings.

Wonder the barely 10 year-old Raju at the dhaba said he was 14. Exploiters threaten kids in many ways and the child has no way out but to lie to keep his "job".

Due to economic factors, many of the law's goals are difficult to meet. The law, for example, does nothing to protect children who perform domestic or unreported labour. IN almost all Indian industries girls are unrecognized labourers because they are seen as helpers and not workers Girls are thus not protected by the law.

June 12 was observed as World Day against Child Labour. A group of eminent people on June 12, gave a petition to Prime Minister Manmohan Singh seeking a ban on all forms of employment of children under the age of 14 and sought urgent amendments to the child labour law.

### Teacher

**Shahika Suhail**

**B.A. Part one**

Teacher is like a lamp

Who gives us the light of knowledge.

Teacher is like a flower

Who gives us scent of Education.

Teacher is like a captain

Who gives us direction to our lifeship.

Teacher is like a pillar

Who supports the building of progress.

Teacher is like a Gardener

Who cultivates good qualities in the student.

Teacher is like a mother

Who loves equally all her children.

Teacher is great.

### **CAN PEOPLE GO TO MARS**

**Nabeela Khalid**

**B.Sc. Part One**

The sucessfull landing and subsequent operation of the two mars rovers has prompted NASA scientists to plan a manned mission to the Mars. But a siginificant issue concerns the need to provide protection against space radiation between the Earth and the Mars which would be hazardous to astronauts. Scientists are still not sure how the human body is going to react to the space radiation and how dangerous such a journey would be.

The deep space is filled with protons from solar flares, gamma rays from newborn black holes, and cosmic rays from exploding stars. All these radiations in space pose a hazard to astronauts in terms of cancer risk. It's unpredictable as to how much this risk will go up if he travels to the Mars.

The greatest threat to astronauts is from the Galactic Cosmic rays (GCRs). These particles have heavy ionised nuclei. They are much more energetic than typical protons accelerated by solar flares. GCRs barrel through the skin of spaceships and people like tiny cannon balls, breaking the starnds of DNA molecules, damaging genes and killing cells.

To estimate the risk of such radiations exposure, scientists are conducting experiments at NASA's New Space Radiation Laboratory (NSRL). In these experiments, scientists are exposing mammalian cells and tissues to cosmic beams produced by using particle accelerations. Plastic has been found to be a good absorber of cosmic rays and it also disperses radiation. It absorbs 20 percent more cosmic rays than aluminium, and it is 10 times stronger than aluminium. NASA sceintists are also working on medical counter measures that limit the effects of radiation on space crew.



## Indian women - Towards Empowerment

Smt. Krishna Banerjee ;

*Associate Professor ; Department of Sociology*

The concept of **women empowerment** is not new to **India**. Here eminent women of ancient times like **Gargi, Maitry** and many others participated in discourses and discussions equal to men and were given as much respect as men. Indian women also participated in national Freedom Movement at a time when literate women were only 2%. The epistemological meaning of empowerment is, **giving or delegating of power and authority**. In other words empowerment is the granting of political, social and economic power to an individual and group. Empowerment refers to increasing the spiritual, political, social and economic strength of individuals and various communities; it involves **developing confidence** in their own capacities.

'Women empowerment' thus is ..... Enjoyment of all human rights and fundamental freedom; Strengthening of life chances; equal access to participation and decision making process; Collective involvement in the cultural, social, political and economic growth process and changes that are never ending; and of course it is a continuous process. A woman is said to be empowered when she is **aware of herself, her rights and her self-esteem**. Women empowerment has a positive effect on personal, social and national development. At a personal level it gives women; a chance to make their own choices, challenge the worthiness of old traditions and to actually look for opportunities away from their families. Women empowerment also gives them other opportunities in life other than **marriage and motherhood**, such as being part of the work force. In poor families

empowerment help these women to become more than another mouth to feed and they can be a **valuable** asset to their families.

Empowerment of women is the most effective way to reduce birth rate as well as **childhood mortality** of the country. Women empowerment would contribute to economic growth by its powerful role. It is fundamental to the advancement of **human rights, social justice and qualitative development**. The need for women empowerment in India as quoted by **Smt. Pratibha Devi Singh Patil**, President of India in the inaugural function of "**Mukhya Mantri Kanya Vivah Yojna**" at Patna, is "our full potential as a nation only be realized when women who constitute about half of our population, can fully realize their potential. As long as that does not happen, half the talent, half the progress, half the development would be lost. For a chariot to move forward both wheels have to be strong and if one is weak it cannot move forward. So to move, the chariot of our country forward both the wheels; men and women have to be strong and to **move ahead jointly**."

To get the benefit of all the above mentioned advantages of women power, the need for women's empowerment was felt in India long back. Father of the nation said at the second Round Table Conference that his aim was to establish a Political society in India where women would enjoy the same rights as men. After Independence the Indian Constitution not only granted equality to women but also empowered the state to adopt measures of positive discrimination in favour of women. According to census Reports, the population of women in India is roughly 48% of the Indian Population. Therefore, definitely their welfare and progress should hold a central position in the development plans.

In last six decades, there has been a marked change in the approaches related to women's issues. During 70's emphasis was laid on 'women welfare';



80's focused on 'women development', where as in 90's major attention was paid on 'women empowerment'. The Ninth Plan (1997 - 2002) recognised the 'Empowerment of women' as one of the nine primary objectives of the plan. The Tenth Plan also aimed at empowering women by adopting its three fold path i.e. social empowerment, economic empowerment and gender justice. The government adopted certain measures in order to safeguard the rights and privileges of the women as constitutional provision, legal provision, implementation of important policies, passing of important bills and reports etc. The Articles 14, 15, 15(3) 16, 39, 42 51(A) (e) of the Indian constitution gave various types of provisions for equal rights and opportunities for women and for eliminating discrimination against them in different spheres of life. It also provided voting rights to them.

Large numbers of women - related laws have been enacted. Some are : the **special Marriage Act 1954**; the **Hindu Marriage Act 1955**; the **Immoral Traffic (Prevention) Act 1956**; the **Dowry Prohibition Act 1961**; the **Indian Divorce Act 1969**; the **Indecent Representation of women (prohibition) Act 1986**; the **Commission of Sati (Prevention) Act 1987**; the **Child Marriage Restraint Act 1988**; the **Pre-Natal Diagnostic Technique (regulation and Prevention of Misuse) Act 1994**; the **Domestic Violence Act 2005**. The important policies which have vital implications for Indian women are : (a) **National Commission for Women 1990** which made number of recommendations in 34 laws and 8 bills. (b) **Committee on Empowerment of women 1997**, which was constituted as a resolution passed by the parliament on 8th March 1996 on the occasion of International Women's day. (c) **National Policy for Empowerment of women 2001**. (d) Report of Ministry of Rural

Development 2001 especially sought for empowerment of rural women. (e) A new bill has tabled in Parliament for introducing 1/3 rd **reservation for women** in legislatures.

The government has also given focus to issues relating to women through creation of an independent **Ministry of women and child Development**. Despite all the safeguards provided by the government through above mentioned different measures, the women in our country continue to suffer. Indian myth has the concept of **Ardha Narishwar** (God as half woman and half man). Yet in actual practice even today in our male dominated society women are treated as **Second grade citizens**. Hardly 5% to 7% women are able to enjoy human rights in our country.

It is unfortunate that social evils like **child marriage, dowry, female infanticide and prostitution** still exists in our society. They need to be dealt with and eradicated. To **root out the obstacles** from the path of women emancipation, special short term programs should be arranged for men to change **their attitude, outlook and approach towards women**. Both men and women must join hands to fight against the old age and outdated customs. Women themselves should come forward in the movement for equality with men. Upliftment of women must be done on a global scale. Policies and Programs should be designed **according to women's needs and concerns**.

**Every girl must be assured for free and compulsory education**. Women should be empowered at every level of education and those schemes should be implemented which give **incentive for the education** of the girl child. Special attention should be laid on adult education and **women literacy** should be linked with other development actions such as health, skill development and cultural growth. Women must have equal opportunities for employment and they should



be helped to set up their own business with the support of self help groups and availability of credit facilities. Government should make efforts for strict implementation of women related laws and schemes, whereas all sections of **society, social organization, media and the government** should work together collectively.

**Education is the most powerful agent in empowerment of women.** GAP (The Gender Achievement and Prospects in Education) 2005 report quotes "Illiteracy is catastrophe for any child, but particularly devastating for girls". **The consequences of education on women** have a ripple effect beginning from the **individual level to the National level.** When women are educated benefit or empowerment can be seen immediately. As the world works to implement the goal of Education for All (**EFA**) and Millenium Development Goals (**MDG**), women literacy occupies a place of importance. Different education based policies; as National Policy on Education 1986; The National Literacy Mission 1988; Plan of Action 1992 and also the 11<sup>th</sup> Plan

placed the highest priority on women education with special focus on **SC's, ST's minorites and rural women.** Thus, female literacy rate in the last 10 years has grown at a faster rate (3%) than the male literacy rate.

The special interyention Kishori Shakti Yojana (KSY) and Nutrition Program for Adolescent Girls (NPAG) are being implemented for adolescent girls (11-18 years). These programs aim at improving the educational, nutritional and health status of adolescent girls, who would grow as empowered women in future. But much work remains to be done. A social environment should be created where women can live with pride as women and despite being women. It would be proper to end with the following lines expressing the aspiration of Indian women;

"Hata do sab badhayein mere path se  
Mita do akanshayein sab maan ki  
Zamane ko badalne ki shakti ko samjho  
Kadam se kadam mila kar chalne do mujhko"

## Experience As a Secretary of S.S. Khanna

Sonish Ali  
Secretary-Student Council  
B.A. II

"Being Sadanlal Sawal Das Khanna's office bearer is not just a status tag, it is that our minds and souls are connected to it" :

Secretarial work typically involves a wide range of tasks and skills. Our activities during the academic session 2014-15 began like every other year with elections and then solemnly taking the Oath.

Then it was the turn to organise the event. We started with our college's great function "Damodar Shree" and had shown great results

on that with proper discipline.

The visit of "A.P.J. Abul Kalam" at our college gave us one more chance to show the team work and praised by all :

Another notable event in the accadmic year was the visit of NAAC team to grade our college, we worked hard to make it "A" and the efforts brought the result.

I would like to conclude by extending my harty gratitude towards our Principal and Proctor, for their never ending help and encouragement.

At last we are standing at a place :

"Where the mind is without fear  
and the head is high,  
Where knowledge is free  
into the heven of freedom."



## Leucoderma (Vitiligo) : Causes, Myths and Home Remedies

Dr. Preeti Singh

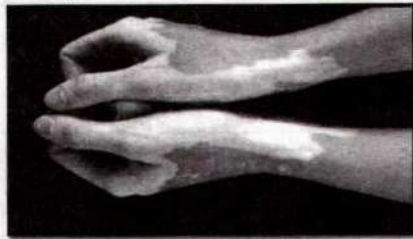
Department of Botany

Leucoderma, also known as "Vitiligo" is a condition in which there is development of milky patches on the skin. Millions of people of all races and ethnicities worldwide have leucoderma. It occurs in 0.5-2% of the general population. Not all white patches are leucoderma. Fungal infections, healed eczemas, sun allergies and guttate hypomelanosis are common conditions which can mimic early leucoderma. The diagnosis of leucoderma can be confirmed by a dermatologist.

### Causes of Leucoderma

Leucoderma usually affects the skin, but other areas such as the scalp, lips and genitals can also be affected. Patches of hair can turn white. The disease develops because *colour producing cells in our skin called "melanocytes", die.*

The main causative agents of leucoderma are excessive mental worry, chronic or gastric disorders, impaired hepatic function (such as jaundice), worms or other parasites in the alimentary canal, typhoid, a defective respiratory mechanism, and burn injuries. Heredity is also a well-recognized causative factor of the disease.



### Myths about Leucoderma

Because of the stigma attached to the disease and limited understanding of its cause many myths are abound.

- Many believe that Leucoderma can be aggravated by eating milk or other white foods, or sour foods like citrus fruits; or by drinking milk shortly after eating fish.

*The reality is, leucoderma has not been shown to have any connection with diet or does. They do not have any impact on the severity of this condition.*

- **Dysfunction** : Leucoderma is purely a disease of the skin and does not influence the physical and mental abilities. Leucoderma is not contagious by nature therefore cannot be transmitted through touch, sharing personal items, saliva or intercourse. The disease

spread can be controlled and medications can help to restore lost skin colour.

### Home Remedies for Leucoderma

- The best known home remedy for leucoderma are the seeds of 'Babchi' (*Psoralea corylifolia*). Soak babchi seeds in ginger juice for 3 days. Thereafter, dry them grind to make a fine powder. Have 1.0 gram of this powder, with a cup of fresh milk for about a month continuously. The ground seeds should also be applied to the white spots.
- Babchi seeds, combined with tamarind seeds are also useful for leucoderma. Soak an equal quantity of babchi and tamarind seeds in water 3-4 days, Dry them well and grind to form a paste. Apply this paste on the affected area on a daily basis.
- Another useful remedy for leucoderma is 'red caly' found by the river side or on hill slopes. Mix red and ginger in a ratio of 1:1. Apply this on the affected area and wash off when dry.
  - Drinking water kept overnight in a copper vessel is also beneficial in treating leucoderma.
  - The vegetable 'goosefoot' (*Chenopodium* or *Bathua*) is valuable in the treatment of leucoderma. This vegetable should be taken twice daily, in the morning as well as in the evening, for two months continuously. Simultaneously, the juice of the leaves should be applied over the patches of leucoderma.
- A paste made from the seeds of the radish is beneficial in treating leucoderma. About 35 gm of these seeds should be powdered and mixed with two teaspoons of vinegar and applied on the white patches.
- Turmeric mixed with mustard oil has also proved useful in leucoderma. Soak 500 gm turmeric in about eight liters of water at night. In the morning, boil the concoction until only a liter of it is left. Strain this liquid and add 500 ml mustard oil to it. Apply this on the patchy areas twice daily, for at least 2-3 months.
- 'Holy basil' (Tulsi) leaves prove to be beneficial in treating white patches. Consume raw basil leaves or make a decoction of basil's leaves and stem, along with water.



- Poultice of ginger leaves on the white patches is quite effective in treating leucoderma.
- Drinking a glass of 'Neem Juice' daily is very effective in treating leucoderma.
- Mix alfalfa and cucumber juice in a ratio of 1:1. Consume the mixture twice daily, i.e., in the morning and evening. This is a useful home remedy for treating leucoderma.
- Take a handful of dry pomegranate leaves and grind them into a fine powder. Have about 8 gm of this powder, every morning and evening with a glass of water.
- 'Black gram' (*Vigna mungo* or 'Urad') is an effective remedy for treating leucoderma. Grind black gram with water to form a paste. Apply this paste on the affected areas and wash it off after paste dries, for about 4-5 months.
- Increase the consumption of walnuts and figs. While walnuts purify blood, figs have healing properties to cure leucoderma.

#### Diet for Leucoderma

Constitutional measures should be adopted to

cleanse the system of accumulated toxins. To begin with, the patient should undertake a fast, partaking only juices for about a week. After the juice fast, the patient may adopt a restricted diet consisting of fresh fruits, raw or steamed vegetables, and wholemeal bread or wheat tortilla. Curd and milk may be added to this diet after a few days. The diet may be supplemented with cold-pressed vegetable oils, honey, and yeast. Juice fasting may be repeated at intervals of two months or so.

The patient should avoid tea, coffee, alcoholic beverages, all condiments and spicy dishes, sugar, white flour products, denatured cereals like polished rice and peraled barely, and tinned or bottle foods.

**Leucoderma is a pigmentation disorder. It is not related to ALbinism, Leprosy of Skin Cancer. The patients suffering from it need understanding support of their family and society; and should not be ridiculed or discriminated due to their mottled skin appearance.**

### Mother

Monika Singh  
B.Ed.

Little boy and his mother

Are crossing the bridge

Mother says :

"Son, hold my hand tight"

Boy says :

"No mom, you hold my hand"

Mother asks :

"What is the difference ?"

Boy answers :

"If I hold your hand,

I may leave it in some difficulty

But if you hold my hand

For sure you will hold onto it forever".

### IT IS EASY BUT

Surabhi Tiwari  
B.Sc. Part two

It is easy to judge the mistakes of others,

But difficult to recognize our own.

It is easy to dream every night,

But difficult to make them come true.

It is easy to promise someone or somebody,

But difficult to fulfil what you said.

It is easy to make a mistake,

But difficult to learn from them.

It is easy to hurt someone who loves you,

But difficult to heal the wounds.

It is easy to enjoy life everyday,

But difficult to give real value.

It is easy to set rules,

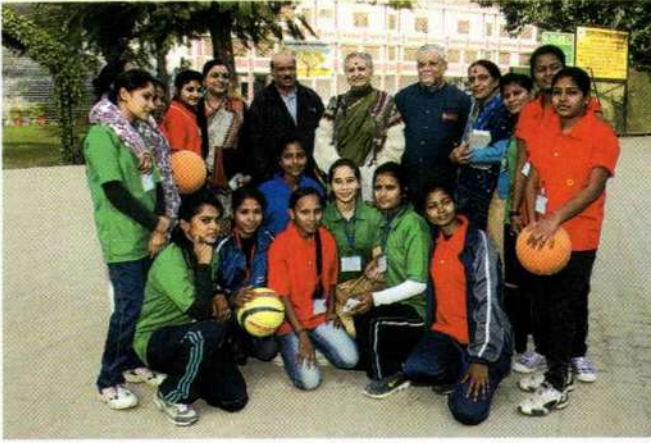
But difficult to follow them.

It is easy to forgive others,

But difficult to ask for forgiveness.



## स्पोर्ट्स



खेल मैदान का अनुशासन छात्राओं में स्वस्थ स्पर्धा, नेतृत्व क्षमता व हार जीत में समान भाव विकसित करता है। महाविद्यालय में खेल वातावरण निर्मित करने तथा खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के लिए सत्र भर खेल संबंधी गतिविधियां संचालित की गई। सत्र के प्रारम्भ में महाविद्यालय की प्रगति साहू, दीपाली गुप्ता, सैययद सानिया, श्रेया दिवाकर, गीतिका उपाध्याय, युक्ता केसरवानी व रितु कौशल ने बरेली में आयोजित प्रादेशिक हैण्डबॉल प्रतियोगिता, में भाग लिया। महाविद्यालय की दो छात्राएं श्रेया दिवाकर एवं युक्ता केसरवानी ने नॉर्थ जोन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय हैण्डबॉल टीम की ओर से जम्मू कश्मीर में प्रतिभागिता की। दो छात्राओं ने नॉर्थ जोन इलाहाबाद विश्वविद्यालय, बास्केट बॉल टीम की ओर से कानपुर में प्रतिभागिता की। लखीमपुर खीरी में आयोजित 36th National Womens Football Championship-

2014 में महाविद्यालय की प्रीति सोनकर, प्रगति साहू, रोली श्रीवास्तव एवं आरती शर्मा ने भाग लिया। महाविद्यालय की तीन छात्राओं का नॉर्थ जोन फुटबॉल टीम हेतु इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से चयन हुआ। इसके अतिरिक्त भोपाल में आयोजित 37th Senior National throwball Championship 2014-15 में महाविद्यालय की 06 छात्राओं का U.P.Team में चयन हुआ। जिला वॉलीबाल संघ, इलाहाबाद द्वारा आयोजित मेजर रंजीत सिंह, स्पोर्ट्स वॉलीबाल प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 04 छात्राओं ने प्रतिभागिता की, जिसमें टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मेजर रंजीत सिंह स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित बास्केटबॉल प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 05 छात्राओं ने प्रतिभागिता की जिसमें टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

महाविद्यालय में आयोजित वार्षिक क्रीड़ा सत्र में चारों हाउस की छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं – क्रिकेट, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, फुटबॉल, टेबल-टेनिस, बैडमिंटन, भाला फेंक, खो-खो, रस्सा कसी, 100 मी., 200 मी., 400 मी. रिले रेस, हाई जम्प, लांग जम्प, शॉटपुट, गोलाफेंक – में प्रतिभागिता की। ब्लू हाउस ओवर आल चैम्पियन रहा तथा ग्रीन हाउस रनर रहा।









## National Service Scheme

The **S. S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad**, National Service Scheme (NSS) enroll 400 N.S.S. volunteers every year. The National Service Scheme is an Indian government – sponsored public service programme conducted by the **Department of Youth Affairs and Sports of the Government of India**. On **September 24, 1969**, which is the **Gandhi Centenary year**, the NSS or the National Service Scheme programme was launched with the aim of establishing a meaningful linkage between the campus and the community. Having as its motto **“NOT ME BUT YOU”** the NSS aims at making education more relevant to the practical needs of the day; encouraging students to work together to promote social welfare; emphasizing dignity of labour and self help and encouraging youth to participate enthusiastically in the process of national development and promote national integration.

### Activities-

- **Independence Day** was celebrated by the N.S.S. volunteers with great enthusiasm. The volunteers visited their respective areas and appealed to create awareness about National unity which is the prerequisite for progress of society. Shramdan was done by the N.S.S. volunteers in their respective areas for spreading awareness about healthy and hygienic environment. They also performed various cultural programmes.
- **“Sadbhavana Pkhwara”** was celebrated by the N.S.S. volunteers from 20<sup>th</sup> August to 3<sup>rd</sup> September. Various programmes like essay competition on the theme **“Quami Ekta”**, Poster & Slogan writing competition on the topic **“National Integrity and Social Harmony”** were organized. The N.S.S. volunteers also planted saplings in the college premises to create green consciousness among the students.
- **Teacher's Day** was celebrated by the N.S.S. volunteers. They performed various colourful cultural programmes to honor teachers for their sincere efforts to impart knowledge to their students.
- **World Literacy Day** was celebrated on 8<sup>th</sup> September. The N.S.S. volunteers took out a rally from college. They visited their
- respective areas and made an effort in motivating the people about benefits of education to their children.
- **N.S.S. Foundation Day** was celebrated on 24<sup>th</sup> September, where students were made aware about the Motto and Objectives of N.S.S. Shramdan was done by the N.S.S. volunteers in the college campus. The N.S.S. volunteers planted saplings in the college premises to promote a green & healthy environment.
- On **Gandhi Jayanti**, a lecture on the topic **“Relevance of Gandhian Thoughts in Modern Times”** was delivered by Dr. Alok Malaviya. The N.S.S. volunteers also presented their views on said topic. Shramdan under the **“Swachh Bharat Mission”** was done by the N.S.S. volunteers in their respective areas for spreading awareness on cleanliness.
- A one day camp was organized on **12<sup>th</sup> October**. This program was organized to affiliate a National Award for Academic Excellence named **“Damodershree”** organized in reverential of Late Prof., D.D. Khanna. On this day volunteers worked under various committees formed for making this special program a big success.
- The Birth Anniversary of Sardar Vallabh bhai Patel on **31<sup>st</sup> October** was celebrated as **National Unity Day**. A **“Run for Unity”** was organized by the N.S.S. volunteers. Various Programmes on **National Integrity and Social harmony** like speech, quiz, group song etc. were also organized.
- On **Children's Day**, the N.S.S. volunteers visited Bal Vidya Niketan, Attarsuiya, Allahabad governed by Bhartiya Patita Uddhar Sabha, New Delhi. Cultural Programmes were presented by the small children. Sweets and fruits were distributed to them.
- The N.S.S. volunteers took out a rally from college on 18<sup>th</sup> November to spread awareness about **Traffic Rules**. The volunteers told the general public about the importance of following traffic rules, wearing helmet, avoiding tripling and safe driving.
- A **Cleanliness week** was observed in the college campus from 14<sup>th</sup> November to 21<sup>st</sup> November 2014. Shramdan was done by the



N.S.S. volunteers. They cleaned the class rooms and grounds of the campus. The N.S.S. volunteers also visited their respective areas for spreading awareness on cleanliness.

- On 'World AIDS Day' a lecture on the topic **“HIV/AIDS- Symptoms, Facts, and Prevention & Treatments”** was delivered by Dr. Soni Srivastava. The questionnaire method was also used to create awareness among the girls about HIV/AIDS. At last, the students took a pledge that they will spread awareness about the disease in their surrounding areas.
- **12<sup>th</sup> January– 18<sup>th</sup> January 2015 Special camp (Day Camp)**
- From 12<sup>th</sup> Jan– 18<sup>th</sup> Jan 2015 special camp (Day Camp) was organized. Each day began with prayer and exercise. Various activities performed were-
- **Lectures on-**
- Motto, Logo and Area of Work of N.S.S.
- Unity in Diversity,
- Discipline,
- “Swachh Bharat Abhiyan”,
- Women Education,
- Time Management and How to become Successful in life,
- Judging personality by one's handwriting.
- Need of Technology for women in Present Era.
- **Skit Competition on-** “Swachh Bharat Abhiyan”
- **Group Discussion on-** Importance of “Aadhar Card”
- **“Ghar Ghar Mai Shauchalaya”**
- **Debate on-** “Internet Boon or Bane?”
- **Essay Competition on -**
- **“Quami Ekta”**
- **“JAN DHAN YOJANA”**
- Poem Competition on- “Nari Shakti”
- **Adult 'Education'-** Old people were taught by N.S.S. volunteers.
- **Poster & Slogan Competition on-** “Women Empowerment”.
- Patriotic Group Song Competition.

- Folk Dance Competition.
- Shramdan
- SUPW Exhibition.
- **Career Counseling** – Regarding Academic Field
- **Pulse Polio Drive**
- Distribution of Woolen Clothes to the poor people (Near Kalyani Devi Temple)
- **“Rastriya Balika Diwas”** was celebrated by the N.S.S. Volunteers on 24<sup>th</sup> January. Various topics like female infanticide, health, safety, education, gender discrimination, dowry and rights of girls etc. were discussed by them. They also visited their allotted areas to create awareness regarding the above issues.
- The N.S.S. volunteers participated in the organization of **“Republic Day”** function. The volunteers participated in the March Past and various cultural programmes to celebrate the occasion.
- On 18<sup>th</sup> February a Poster & Slogan writing Competition on the theme **“Clean Ganga”** was organized. The N.S.S. volunteers took out a **rally** from college to generate awareness about the necessity of having clean Ganga for the benefit of Mankind and for the maintenance of ecological system.
- **“International Women's Day”** was celebrated by the N.S.S. volunteers on 8th March. A lecture on the topic **“Role of Women in Society”** was delivered by Dr. Tanu Shree Roy. The N.S.S. volunteers also presented their views on said topic.
- **“World Forestry Day”** was celebrated by the N.S.S. volunteers on 21<sup>st</sup> March; they presented their views on the topic **“Importance of Forest Conservation”**. The N.S.S. volunteers also planted saplings in the college premises to create green consciousness among the students.

*Besides all these programmes, under the “Swachh Bharat Mission” around the whole session Shramdan was done by the N.S.S. volunteers in the college campus & in their respective areas, for spreading awareness on cleanliness.*



## Educational Thoughts

**Aatikah Ashraf**  
**B.Ed.**

The whole purpose of Education is to turn mirrors into windows - Sydney J. Harris.

He who opens school door,  
closes a prison. - Victor Hugo

Education is the ability to listen to almost anything without losing your temper or your self - confidence. - Robert Frost

You are always a student, never a master.

You have to keep moving forward. - Conrad Hall.

An investment in knowledge pays the best interest. - Benjamin Franklin

Education is the best friend.

An educated person is respected everywhere. Education beats the beauty and the youth. - Chanakya

Education is the key to unlock the golden door of freedom. - George Washington Carver

Education is not preparation for life;

Education is life itself. - John Dewey

The roots of education are bitter,

but the fruit is sweet. - Aristotle

"In order to succeed,

Your desire for success

should be greater than

your fear of failure." - Bill Cosby

"I am thankful for all of those who said

No to me. Its because of them

I'm doing it myself." - Albert Einstien

"Build your own dreams,

or someone will hire you to build theirs." - Farrah Gray



## Scientific approach towards tackling of biological age

**Dr. Sumita Sahgal**  
**Asstt. Prof., Department of Chemistry**

Tired of getting older? Wish you could turn back the clock? . No pill or tonic can simply keep you young forever. But here's a surprise. While you can't do much about the age on your passport, your biological age (or body age) can certainly be reduced. Your chronological age is simply your current age in years, biological age is all about how old or young your organs are.

Reducing the biological age is the new mantra of anti-ageing gurus. This holistic approach to combating ageing has now turned towards keeping your internal organs fit from the skin to the heart . Two people born in the same year may have vastly different biological ages.

No matter what your chronological age is, but one thing is certain that the way we age is largely in our own hands. Although aging is not the result of any one single factor, but is the cumulative result of a number of factors, including:

- Diminished telomerase activity
- Protein degradation

- Progressive systemic inflammation
- Progressive dehydration
- Reduced circulation
- Changes in hormone levels and hormone balance
- accumulation of free radicals in the body

The above list is hardly complete ,whatsoever may be the reason what is important for us how to deal with the above problem. There are three substances which can help us to turn back the clock and optimize our health . They are L-carnosine, DMAE, and Acetyl-L-carnitine. It slows down cellular aging , prolongs the life of organs and rejuvenates the brain .

Can you add years to your life by making smarter food choices? Yes! by following a healthy lifestyle, staying active and eating a nutrient-packed diet, we can help slow the aging process and perhaps even stave off age-related diseases. Olive oil, Yogurt, fish, chocolate, nuts, grapes and blueberries are the seven super food rich in antioxidant must be included in our diet for longevity.

Exercise and nutrition are two things that directly effect these biomarkers of ageing. Being active knocks off years off your biological age because it helps the body use oxygen more efficiently as all these things get worse as you get old and improve when you exercise .Stress accelerate the ageing process so one should



chill out to keep away from the deep wrinkles.

Here are tips for keeping young and wrinkle free skin. These days, anti-aging cosmetics can seem more like food than beauty potions. Applying products on your skin's surface is no substitute for actually eating the foods that will nurture your skin from the inside out. New research has pinpointed specific nutrients that help prevent harm from environmental factors, hydrate your complexion, and keep your skin cells functioning properly. These beauty boosters are easy to incorporate into your meals. So while you're eating for a smoother, brighter complexion, you'll be helping to reduce your risk of cancer, heart disease, and diabetes — and on the way to dropping up to 10 pounds in four weeks as well.

Dermatologists suggest women with higher intakes of vitamin C also had fewer wrinkles and less dry skin. It makes sense, because vitamin C is a powerful antioxidant that can quench free radicals — unstable atoms and molecules in your body that harm cells. What to put on your plate: Aim for enough C-rich foods to get 75 mg a day. One orange for breakfast and five strips of yellow pepper in a lunchtime salad will get you there. So will a cup of broccoli with dinner and a

bowl of strawberries for dessert For an extra skin boost, try blackberries, raspberries, cranberries, and pomegranate — beyond vitamin C, they contain ellagic acid, which may counter the deleterious effects of UV rays.

Another important intake is protein. As collagen and other proteins break down, the skin essentially folds into itself, creating wrinkles and lines. WHAT TO PUT ON YOUR PLATE : Skinless poultry, egg whites, and fish are good lean-protein choices.

Small Japanese study found that women who consumed soy extract for 12 weeks showed improvement in fine lines around their eyes as well as greater elasticity in their skin. Sea fare like tuna and salmon brings to the table a hefty dose of omega-3 fatty acids, which may help guard against sun damage. If you're not partial to fish, walnuts, flaxseeds, canola oil, pumpkin seeds, and tofu contain a compound (ALA) that the body converts into a similar type of beneficial omega fatty acid .

All done! If you follow the above recommendations in our natural Anti-Aging Program, you may not prevent getting older, but you could control how you age. These principles can not only help you prevent and reverse catastrophic illness, but the signs and symptoms of aging.



## Processed Foods: Glazed and Confused... It's Time to Wake up and Smell the danger

**Deepa Srivastava**  
**Assistant Professor**  
**Department of Chemistry**

Rupees to pizzas and burgers, some of your hard-earned money are likely being spent on this soulless treat. Indians— who rank among the lowest of industrialized nations in terms of life expectancy – spent a large fraction of income on fast food; this figure is projected to skyrocket for 2016.

Pizzas and burgers aren't the only problem. The list of terrible things we mindlessly ingest in the name of nourishment is long. But just what are these dietary culprits comprised of? What makes them so toxic? And, most importantly, what are they doing to us?

There are many dangerous ingredients we may be unknowingly ingesting, and the way in which we might be depriving ourselves of the most basic nutritional fundamentals. By this article, I simply want to shed light on some of these.

### Processed, Junk, and Fake Foods:

Processed food is made from real food that has been put through devitalizing chemical processes and is infused with chemicals and preservatives. Canned tea, jam, hot dogs, and low-fat yogurt with sugar or aspartame are a few examples of processed food.

Junk foods contain very little real food. They are made of devitalized processed food, hydrogenated fats, chemicals, and preservatives, and include anything made with refined white flour. Canned breakfast drinks, cold/sugary cereals and soda are examples of junk foods.

Fake foods are made primarily of chemicals, and often contain gums and sugar fillers. Examples include bottled salad dressing, dehydrated soups, and instant coffee.

These non-foods have one thing in common; it costs your body a great deal more to digest, absorb, and eliminate them than they offer your body in nutritional value – an extremely poor return on your investment that leaves your body sluggish and depleted.

### Toxins, Poisons, Processed Food, and the Body:

Our ancestors preserved foods naturally, using salt, fermentation, and sun drying. Food processing has evolved away from these simple practices into more complicated and dubious methods. Today, nearly six thousand additives and chemicals are used by food companies to process our food. Many of them can have a devastating effect on our health.

It is important to note the fact that additives and preservatives cannot always be painted with a negative brush. The addition of vitamins to bread and milk has helped to stamp out diseases such as pellagra and rickets.

Unfortunately, the good intentions that characterized the processed food industry during the early days have now de-evolved to finding ways to cheaply process food and manipulate buyers, regardless of the detrimental effects on the health of people.

Today, many additives and preservatives are harmful toxic chemicals as problematic as the decay they are used to prevent.

### Preservatives:

Food preservatives extend the shelf life of food in grocery stores but may have a detrimental effect on your health. Preservatives



are a good thing for food manufacturers because products can be made, shipped and stored until purchase without going bad, meaning they don't lose money from spoiled food. Preservatives are also beneficial to you in that you're not eating food that has begun to decay. These chemical compounds, however, can have many undesirable side effects in your body.

Preservatives are a type of additive used to help stop food from spoiling. Some of these are as follows:

Nitrates and nitrites are used to preserve meats such as ham and bacon, but are known to cause asthma, nausea, vomiting, and headaches and allergy in some people. The same is true for sulfites (sulfur dioxide, metabisulfites and others), which are commonly used to prevent fungal spoilage, as well as the browning of peeled fruits and vegetables.

Sodium nitrite in some foods is capable of being converted to nitrous acid when ingested by humans. While animal testing showed that nitrous acid caused high rates of cancer, it is still in use.

Benzoic acid and sodium benzoate is added to margarine, fruit juices, and carbonated beverages. It can produce severe allergic reaction and even death in some people.

Sulfur dioxide is a toxin used in dried fruits and molasses as well as to prevent brown spots on peeled fresh foods such as potatoes and apples. Sulfur dioxide bleaches out rot, hiding inferior fruits and vegetables. In the process, it destroys the vitamin B contained in produce.

#### **Antioxidants:**

While antioxidants such as alpha-carotene are recommended by health

specialists to prevent premature aging, some of the antioxidants used as food preservatives may be unhealthy. Contained in nearly every processed food on the market, antioxidants prevent fatty foods from spoiling when exposed to oxygen.

BHT (butylated hydroxytoluene) and BHA (butylated hydroxyanisole) are two of the most widely used, yet controversial of all antioxidants. So alarming were the results of BHT and BHA in animal testing, that a number of countries have severely restricted their use.

Some people have difficulty metabolizing these chemicals, which is thought to result in health and behavioral problems, and hyperactivity. They cause allergic reactions, may also contribute to the development of tumors and cancer, as well as be toxic to the nervous system and liver.

#### **Coloring:**

Each year, food industry uses thousand tons of food colours. Many colouring agents are derived from coal tar, and nearly all colouring is synthetic. Norway has a total ban on all products containing coal tar.

Though some artificial food dyes have been banned because they are believed to cause cancer, most dyes used today are of the artificial variety. They are also linked to allergies, asthmas, and hyperactivity.

The long list of foods and beverages in which colour is altered includes butter, margarine, the skins of oranges and potatoes, popcorn, hot dogs, jellies, jellybeans, carbonated beverages, and canned strawberries and peas.

Even the chicken feed on large-scale egg farms is coloured so that chickens will lay golden-yolked eggs similar to those laid by free-range chickens.

#### **Sweeteners:**

Most processed foods contain sweeteners,



many of which are artificial sugar substitutes containing no natural sugars, such as saccharine and aspartame.

Artificial sweeteners are linked to behavioral problems, hyperactivity, and allergies. Because saccharin was shown to increase the incidence of bladder cancer in animal testing, all foods containing this sugar substitute are required to carry a warning label.

**Emulsifiers, Stabilizers, and Thickeners:**

These additives alter the texture of foods. Emulsifiers, for example, prevent ingredients from separating into unappealing globs in food such as mayonnaise and ice cream.

A first cousin to anti-freeze, propylene glycol is a synthetic solvent used as an emulsifier in foods. Although it is recognized as toxic to the skin and other senses, and is considered a neurological toxicant.

**Flavorings:**

The most common food additive, flavorings – of which there are over 2000 in use – may be natural or artificial, and are usually comprised of a large number of chemicals.

Artificial flavors are linked to allergic and behavioral reactions, yet these ingredients are not required to be listed in detail as they're generally recognized as safe.

MSG (monosodium glutamate) is another popular flavor enhancer. Found to cause damage in laboratory mice, it has been banned from use in baby foods, but is still used in numerous others. It causes common allergic and behavioral reactions including headaches, dizziness, chest pains, depression, and mood swings, and is also a possible neurotoxin.

**Refining:**

Refined flour has had the brown husk of

the grain stripped away, leaving the white, refined starch found in white bread, white rice, pasta, cookies, and numerous other junk foods.

Without the fibrous husk, refined starches are broken down quickly into sugar and absorbed immediately into the bloodstream causing glucose levels to rise, and increasing the risk of obesity.

In contrast, whole grains – such as whole grain bread and cereals, brown rice, and barley – retain the bran surrounding the starch, so they're absorbed more slowly into the bloodstream than refined starches. This slows sugar absorption from the intestine, and reduces the risk of obesity.

**Refining Destroys and Devitalizes Most of Foods' Goodness:**

Healthy unsaturated fatty acids – high in food value – are lost during the milling process. Half the vitamin E is destroyed when the wheat germ and bran are removed. Refining wheat into white flour removes between 50 and 93 percent of wheat's magnesium, zinc, chromium, manganese, and cobalt.

**Additionally, approximately 50** percent of calcium, 70 percent of phosphorus, 80 percent iron, 50 percent potassium, 65 percent of copper, 80 percent thiamin, 60 percent of riboflavin, 75 percent of niacin, and about 50 percent of pyridoxine is lost.

Refining sugar cane into white sugar depletes it of 99 percent of its magnesium and 93 percent of its chromium. Polishing rice removes 75 percent of its zinc and chromium. Refined table salt has had most of the trace minerals removed during processing. It may even contain aluminum.

**Bleaching:**

Part of the process wheat undergoes to become the white flour in popular baked goods involves bleaching. Various chemical bleaching



agents are used including oxide of nitrogen, chlorine, chloride, nitrosyl, and benzoyl peroxide mixed with a variety of chemical salts.

Chlorine oxide— which catalyzes a chemical reaction that destroys beta cells in the pancreas – is now being linked to diabetes. This toxic effect is common scientific knowledge in the research community. In spite of this, the FDA still allows companies to use chlorine oxide in processed food.

**A Healthier Lifestyle:**

Eradicating every guilty pleasure in life is not the end goal here, nor is it a particularly realistic approach to making changes...we all enjoy the occasional cheeseburger, order of fries, or bag of chips.

But if we understand the consequences of making what ought to be an occasional treat into the mainstay of our diet, we can begin to make wise choices about how many of these things we are willing to eat.

When it comes to avoiding many of the questionable – and possibly deadly – additives contained in processed foods, we are only human after all, so taking baby steps toward change is usually the best approach.

If you can accomplish just one of these 10 steps, you're moving in the right direction. Try implementing one change a month...

1. As a general rule, if you don't recognize – or can't pronounce – the words on a label, don't buy it, or eat it. Opt instead for the real thing!

2. Avoid products containing

- Nitrates and nitrites (including sodium nitrite)
- Sulfites (including metabisulfites)
- Sulfur dioxide
- Benzoic acid (aka sodium benzoate)

- BHT (butylated hydroxytoluene)
- BHA (butylated hydroxyanisole)
- Coloring
- Coal tar
- Propylene glycol
- MSG (monosodium glutamate)
- Refined or bleached flour (i.e. whitened using chloride oxide)

3. Don't eat partially hydrogenated or hydrogenated trans fats.

4. Don't eat products containing sugar substitutes such as saccharine and aspartame.

5. Avoid products with a long shelf life – the better they do on the shelf; the worse they are for your body.

6. Avoid products that have been enriched. They have been completely devitalized during processing.

7. Avoid food that has been genetically modified or engineered. Nearly all processed food contains GMOs.

8. Avoid products made with ingredients euphemistically described as “natural flavoring” or “natural coloring.”

9. Avoid products with added sugar – watch for words with “-ose” endings such as glucose.

10. Incorporate a multi-vitamin into your health regimen.

If you've had a history of eating products high in sugar and are concerned about diabetes, incorporate disease-fighting products such as garlic, vitamin E, and aloe vera into your diet. Vitamin E supplements can also protect your body from the harmful effects of eating refined products that have been bleached with chlorine oxide.

As you begin to eliminate processed food from your diet, and start to enjoy eating real food that has not been processed to death, you will be on your way to optimizing your health, making an investment in your body's future and, ultimately,



## 'My Experience - In a Nutshell'

Kashifa Itrat

B.A. Part Two

"If your Actions inspire others to dream more, learn more, do more and become more, you are a leader."

And this what I, Kashifa Itrat, have learnt as the Vice President of the College - Be diligent towards your goal so that someone else build their dream by getting inspired from you.

On 13th of September, 2014, I was shouldered the responsibility of being the Vice-President of S.S. Khanna Girls' Degree College, after having elected to this Post.

I, at first, thank Almighty for having soft-corner for me in his heart. I am thankful to my Principal, teachers members of the management, my friends, all my seniors and juniors for supporting me throughout.

My journey as the Vice-President was mesmerizing but challenging too. I have penned down certain things that experiences have taught me.

Firstly, this world is too complicated place for simple people to survive in. Be good at all times,

but not that good as to get fooled at every step of your lives.

Our simplicity and humility must be the first things to get recognized.

Secondly, one faces criticism whenever one tries to do something that is out of the box. These criticisms must never hold oneself back instead, it should give all the more reason to prove to the people that you have potential to be-

**SUCCESSFUL !** After all, every person who has made a difference to the world was once laughed at

My experiences taught me to be focused about my goal and plan out every detail meticulously. The most important thing, I learnt was setting my priorities. There has to be clarity about what needs immediate attention and what can wait !

I dream of serving humanity as a whole especially the female gender facing atrocities and humiliation using R.T.I. (Right to information Act, 2005), as a weapon to wipe out slackness of law and order and taking stringent measures to end the menaces growing fastly day by day.

I pray to Almighty to guide me and shower his blessings on each one of us !

With love, fondness and friendship !

## "College is a refuge from judgement"

Ankita Yadav

President - Student Council

I still vividly remember my first day in college. I was so excited in meeting new people. I met wonderful friends who are still my best friends, even uptill now. College is a dry run of the rest of our lives. It's a training ground to be successful and good person.

I, myself got many promotions and I became the PRESIDENT of my college (S. S. K. G. D. C.) and honestly. I am going to miss my college days, my teaching staff and non-teaching and buddies too; I love my college and am also loved by my college. It has been a

wonderful experience. Being a student I played many "Roles". I Can't express in words. When I joined 'The S.S.K.D.C. that made me realize my full potential as student artist & as an individual. At last;

"A college degree is the key to realizing the American dream, well worth the financial sacrifice because it is supposed to open the door of world of opportunity" - Dan Rathes.

Thank you for everthing.

"Where the mind is without fear  
and the head is high,  
Where knowledge is free  
into the heaven of freedom."



# प्रंमो 2014-15

## “सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी”

द्वारा वार्षिक देय स्थाई छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2014-15

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
1.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1975	1000/-
2.	श्री भोला नाथ कपूर गुजराती मोहल्ला, इलाहाबाद	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती रमा कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1977	100/-
3.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 642/558ए मालवीय नगर, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	सदनलाल एवं श्रीमती भगवान देई खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1979	400/-
4.	श्री कृष्ण कपूर 13ए म्योर रोड, इलाहाबाद	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	एन0 सी0 कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1979	500/-
5.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 642/558 मालवीय नगर, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	मट्टूमल एवं श्रीमती ज्वाला देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1980	400/-
6.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 642/558, मालवीय नगर, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	शिवचरण दास एवं श्रीमती अचम्पी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1981	400/-
7.	श्री राम किशोर खन्ना श्री अरुण किशोर खन्ना 71, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्याम किशोर खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1983	100/-
8.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 642/558, मालवीय नगर, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती छगन देवी एवं कु0 मंजू खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1985	400/-
9.	श्री राजा राम मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इला0	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी माधोराम मेहरा एवं श्रीमती बिबो बीबी स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1987	500/-
10.	श्री संजय कपूर 619, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती सावित्री कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1988	400/-
11.	श्री दामोदर दास खन्ना श्री नीरज खन्ना ब्लाक आर. ई., 7 फ्लोर, पूर्वा रिवीरिया, मुन्ने कोलाला विलेज, व्हाइट फील्ड, मराठा हल्ली रोड, बेंगलोर-37	बी0 एस0 सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चुन्नी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	2000/-	1988	200/-
12.	श्री वृज किशोर टण्डन श्रीमती राज टण्डन मे0 काशी आर्नामेन्ट हाउस 393, रानी मण्डी, इलाहाबाद	बी0 काम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	कामता प्रसाद टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	1991	1500/-



## प्रंमो 2014-15

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
13	श्री अनिल टण्डन गैम्स इन्डस्ट्रीज (प्रा०) लिमिटेड गाँव मोहम्मद पुर पो० खारकी दौला, खंडासा रोड, गुड़गाँव	बी० ए० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1991	500/-
14.	श्री पन्ना लाल कपूर श्री प्रकाश कपूर 163, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी० काम० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	कु० मन्जू कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1992	500/-
15.	श्री संजय मेहरोत्रा डी-301 विशाप्रंज पाम्स एक्सक्यूजिव लोखण्डवाल अकरौली रोड काम्पलेक्स कादीवली, ईस्ट, मुम्बई	बी० ए० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	बलराम किशोर मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1994	500/-
16.	श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद	बी० ए० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1994	500/-
17.	श्री ए. सी. सहगल श्री मुकुल सहगल EG-3/2 गर्डन इस्टेट महरौली गुड़गाँव रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)	बी० ए० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती शिव प्यारी सहगल स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	1995	1000/-
18.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी० ए० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1998	500/-
19.	डॉ० सुशीला टण्डन डॉ० राम कृष्ण टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्कीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी० एस० सी० 55: अंक से अधिक अंक प्राप्त करने वाली खत्री छात्रा को	हर नारायण जी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
20.	श्री अशोक कुमार मेहरोत्रा C/O, हरीशचन्द्र खन्ना 536 मालवीय नगर, इलाहाबाद	बी० ए० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	हीरा लाल एवं श्रीमती विजय कुमारी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
21.	डॉ० प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी० एस० सी० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ति कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
22.	डॉ० इन्द्रा मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी० एस० सी० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	राज कुमार कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
23.	श्रीमती निर्मला टण्डन ब्लॉक नं० 9ए फ्लैट नं. 407 हेरिटेज सिटी अपार्टमेन्ट मेहरौलीए गुड़गाँव रोड गुड़गाँव (हरियाणा)	बी० ए० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
24.	डॉ. एस० एस० खन्ना 1616/899-ए, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी एवं जरूरतमन्द बी० एस० सी० तृतीय वर्ष की छात्रा को	सत्य नारायण कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-



## प्रंमो 2014-15

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
25.	डॉ० भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन, एम० एस० 39211, यू० एस० ए०	बी० एस० सी०, प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
26.	डॉ० भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन एम० एस० 39211 यू० एस० ए०	बी० एस० सी० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	8000/-	1998	800/-
27.	श्री वी० आर० मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी० एस० सी० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
28.	श्री वी० आर० मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी० एस० सी० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-	1998	1000/-
29.	डॉ० प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवावयुसुफ रोड इलाहाबाद	बी० काम० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती विट्टन देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1999	500/-
30.	श्री आनन्द प्रकाश वर्मा श्रीमती मधु वर्मा 1140, कल्याणी देवी, इलाहाबाद	बी० काम० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	बलदेव कृष्ण वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2000	600/-
31.	श्री अखिल मेहरोत्रा मेसर्स के० के० खन्ना एण्ड सन्स स्टेशन रोड, बिजनौर 246701	बी० काम० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
32.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डॉ० आशा सेठ A-10 अग्नी पथ, 7 सपरु रोड इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
33.	डॉ० रागनी मदान द्वारा डॉ० आशा सेठ A-10 अग्नी पथ, 7 सपरु रोड इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष में संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
34.	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्डस्ट्रीज (प्रा०) लिमिटेड गाँव मोहम्मद पुर पो० खारकी दौला खंडासा रोड, गुडगाँव -122001	बी० ए० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	2002	1000/-
35.	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा फैट लं. 403 टावर 3 ला- गार्डेनिया द पाल्मस, साउथ सिटी 1 युनीटेक कन्ट्री क्लब के सामने, गुडगाँव	बी० काम० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	कमलेश कुमार मेहरोत्रा छात्रवृत्ति	5000/-	2002	500/-
36.	श्री रईस मोहम्मद 10/10ए ताश्कन्द मार्ग इलाहाबाद -211001	बी० ए० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती महमूदा बेगम स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
37.	श्री श्याम नारायण कपूर श्री विवेक कपूर 16/11 A महात्मा गंधी मार्ग, इला.	प्रतिभाशाली छात्राओं को जिनकी न्यूनतम 50% अंक, पढ़ाई शुल्क का 50%।	अमर शहीद त्रिलोकी नाथ कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	60000/-	2003	6000/-



## प्रंमो 2014-15

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
38.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डा. आशा सेठ A 10 अग्निपथ, 7 सप्रू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भाग्यवती मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2003	600/-
39.	श्री अमर नाथ कक्कड़ 10/6 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्याम नाथ कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	14000/-	2004	700/-
40.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अल्कापुरी कालोनी, न्याय मार्ग, इलाहाबाद	बी.एड. में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृत्ति	20000/-	2006	1400/-
41.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अल्कापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी0 काम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृत्ति	48000/-	2006	3600/-
42.	श्रीमती सरल टण्डन डी-2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली - 110057	विज्ञान संकाय की छात्राओं को।	श्रवण टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	500000/-	2008	45000/-
43.	श्रीमती सरोजनी मेहरोत्रा 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	राम भूषण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2008	1000/-
44.	डॉ. शालिनी रस्तोगी 8-डी/1 तपोवन बिहार पोन्पारोड, इलाहाबाद	बी.एड. संकाय की जरूरतमन्द छात्रा को।	प्रो. दामोदर दास खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-	2011	800/-
45.	श्रीमती सरल टण्डन डी-2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली - 110057	बी.एड. संकाय की सर्वगुणोन्मुखी/उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	वी. के. भल्ला स्मृति छात्रवृत्ति	135000/-	2012	11000/-
46.	श्रीमती शोभा भल्ला सी 159 सन सिटी, सेक्टर-54 गुडगाँव हरियाणा	आफिस मैनेजमेन्ट में प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को।	वी. के. भल्ला स्मृति छात्रवृत्ति	125000/- 31000/-	2013 2013	4000/- 4000/- 4000/-
47.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद-211001	दर्शनशास्त्र विषय में द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा	श्री उदय पाल मिश्र स्मृति छात्रवृत्ति	2500/-	2014	2500/-
48.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद-211001	दर्शनशास्त्र विषय में तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती भगवती शुक्ला स्मृति छात्रवृत्ति	2500/-	2014	2500/-
49.	श्री गोपाल चोपड़ा श्रीमती अंजली चोपड़ा 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	2 विकलांग छात्राओं को	श्रीमती शकुन्तला चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	50000/- 50000/-	2014 2014	5000/- 5000/-
50.	श्रीमती इन्द्रा चोपड़ा 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं को	श्री राम लाल चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	100000/-	2014	10000/-



## प्रं० 2014-15

### “सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी”

द्वारा वार्षिक देय अन्य छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2013.14

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
1.	प्रो० प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती कश्मीरो देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
2.	प्रो० प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती जयन्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
3.	प्रो० प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती चुन्नी देवी कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
4.	श्रीमती मीरा खन्ना “मनोहर” 645/560&, मालवीय नगर, इलाहाबाद	बी० ए० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चन्दो खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1100/-
5.	श्रीमती मोनी खन्ना “मनोहर” 645/560- ए मालवीय नगर, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्री संजीव खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	600/-
6.	श्री अशोक कुमार सण्ड 1116, /1337, कल्याणी देवी, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	श्रीमती माधुरी सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
7.	श्री अशोक कुमार सण्ड 62/10 प्राईमरोज वाटिका सिटी सेक्टर 49, सोहाना रोड गुडगाँव 122018	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	पं० विश्व नाथ सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
8.	न्यायमूर्ति अरुण टण्डन 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती हीरो देवी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
9.	डॉ० प्रभा कक्कड़ 10/6 सम्मेलन मार्ग इलाहाबाद	बी०ए० प्रथम वर्ष एवं बी०ए० द्वितीय वर्ष के शिक्षा शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को	श्रीमती शंति देवी कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
10.	श्री वाई. एन. मेहरा 5 तासकन्द मार्ग, इलाहाबाद	बी० एस० सी० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री इन्द्र नारायण मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	5100/- 500/-
11.	श्रीमती मीना टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्क्रीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी० ए० प्रथम वर्ष की खत्री छात्रा जिसने XII कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किये हो।	गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
12.	डॉ० लालिमा सिंह एस० एस० खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद	बी०ए० तृतीय वर्ष में अर्थ शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	प्रो० डी० एस० कुशवाहा स्मृति छात्रवृत्ति	
13.	दी सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी 179 अतरसुईया	महाविद्यालय की प्रतिभाशाली छात्राओं को	दी सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी, छात्रवृत्ति	30000/-



## प्रश्नी 2014-15

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
14.	डॉ० आशा उपाध्याय A-1, पत्रकार कालोनी, अशोक नगर, इलाहाबाद	बी०ए० तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	देव गंगोत्री स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
15.	डॉ० आशा उपाध्याय A-1, पत्रकार कालोनी, अशोक नगर, इलाहाबाद	बी०ए० तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	मेजर वी०पी० स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
16.	डॉ० शिप्रा सान्याल 468, शाहगंज, इलाहाबाद	बी०एस०सी० प्रथम/द्वितीय वर्ष में गणित विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	एम०पी० गांगुली स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
17.	डॉ० शिप्रा सान्याल 468, शाहगंज, इलाहाबाद	बी०ए० तृतीय वर्ष में संगीत वादन में 60% अंक प्राप्त करने वाली मेधावी छात्रा को	जी०सी० सान्याल स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
18.	श्रीमती ममता सिन्हा श्री ओ.पी. सिन्हा 117/52बी/1, दरियाबाद इलाहाबाद	समाजशास्त्र विषय में न्यूनतम 60% अंक प्राप्त करने वाली मेधावी छात्रा को	अम्बिका प्रसाद श्रीवास्तव स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
19.	डा. अल्पना अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद	बी० ए० प्रथम वर्ष में दर्शन शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	प्रताप चन्द्र जैन स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
20.	श्रीमती रचना आनंद गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी० ए० प्रथम वर्ष में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	प्रो. राजेन्द्र कुमार वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
21.	श्रीमती रचना आनंद गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी० ए० द्वितीय वर्ष में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	पो. रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
22.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद	बी० ए० प्रथम वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
23.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद	बी० ए० द्वितीय वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
24.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती शिव दुलारी त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
25.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	राम कृष्ण त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
26.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी-101 फर्स्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड देहरादून-248001	मेधावी खत्री बी.एस.सी. प्रथम वर्ष की छात्रा को	कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-



## प्रश्नी 2014-15

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
27.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी- 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड देहरादून -248001	मेधावी खत्री बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा को	श्रीमती शांती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
28.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी- 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड देहरादून -248001	मेधावी खत्री बी.एस.सी. एवं बी.काम द्वितीय वर्ष की छात्रा को	कैलाश नारायण श्रीमती शांती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
29.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी- 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड को देहरादून -248001	मेधावी खत्री बी.ए., द्वितीय वर्ष की छात्रा	श्रीमती शांती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
30	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी- 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड, देहरादून -248001	मेधावी खत्री बी.एड., की छात्रा को	श्रीमती शांती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
31.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी- 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड, देहरादून -248001	बी.एस.सी. प्रथम वर्ष में भौतिक विज्ञान विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	कैलाश नारायण मेहरोत्रा श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
32.	डा. शिव शंकर श्रीवास्तव एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में मध्य कालीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	मास्टर गौरव श्रीवास्तव छात्रवृत्ति	500/-
33.	श्री जी. सी. मेहरोत्रा बेली रोड इलाहाबाद-2	विज्ञान वर्ग की जरूरतमन्द एवं विकलांग छात्रा को	श्रीमती शशी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-
34.	श्री जी. सी. मेहरोत्रा बेली रोड इलाहाबाद-2	विज्ञान वर्ग की जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती शशी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-
35.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी- 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड, देहरादून -248001	बी. काम प्रथम वर्ष में एक मेधावी खत्री छात्रा को	कैलाश नारायण मेहरोत्रा श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-



प्रंमी 2014-15

प्रतिभाएं

एन.सी.सी. 2014-15

कु. दुर्गेश नंदनी  
बी.ए. II



थल सैनिक कैम्प  
राष्ट्रीय स्तर  
दिल्ली

कु. ज्योति पाण्डेय  
बी.ए. I



कबड्डी  
राष्ट्रीय स्तर  
दिल्ली

कु. नेहा  
बी.काम



IGC लखनऊ  
प्रदेश स्तर

कु. सृष्टि कुशवाहा  
बी.एस.सी.



IGC लखनऊ  
प्रदेश स्तर

कु. प्रकृति कुशवाहा  
बी.एससी.



IGC लखनऊ  
प्रदेश स्तर

कु. दीपशिखा  
बी.ए. II



कु. निधि सिंह  
बी.ए. I



कु. कीर्ति पाण्डेय  
बी.एससी. II



कु. हर्षिता सोनी  
बी.एससी II



कु. आराधना पाल  
बी.ए. II

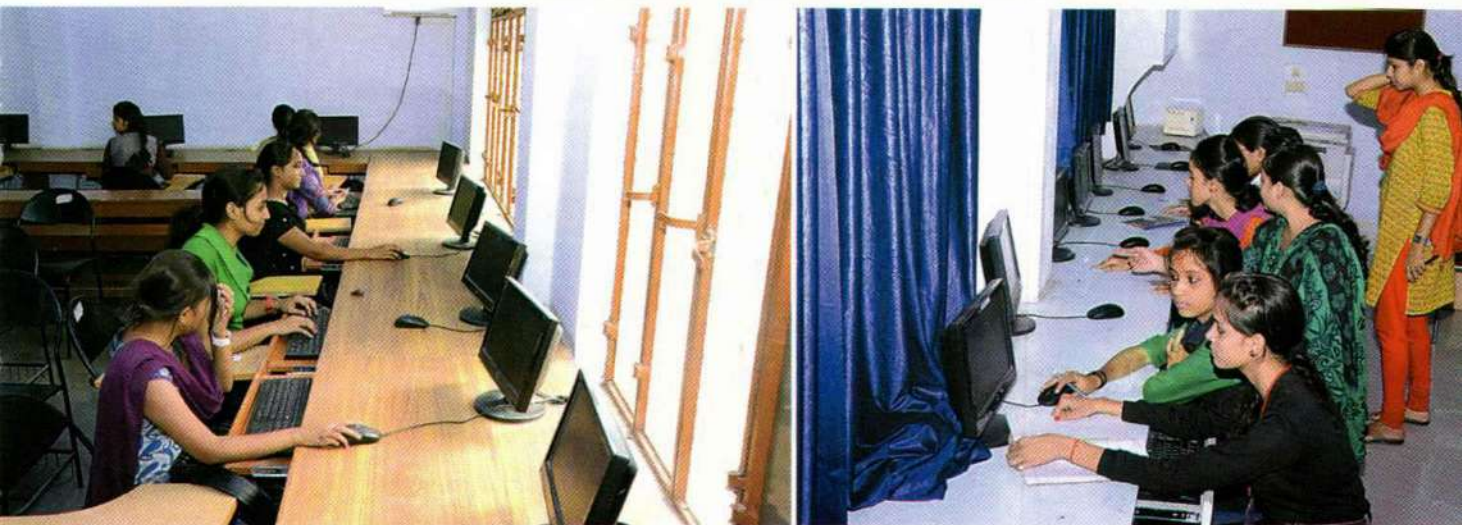




## Computer

In the session 2014-15 a workshop on "Operation of Smartclasses" was organized on 6th Dec 2014 by methodox. A Competition on "Excel ka Don" was organized by ICA on 4th Dec 2014 to test the skills of the students on Excel. The winners of this competition were:-

1. Baziga Arab
2. Sana Hashmi
3. Shruti Goel





### College-Governing Body

Mr. Rajeev Khanna	Chairperson
Mr. Dilip Mehrotra	Manager/Treasurer
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	Member
Dr. Asha Seth	Member
Prof. Indira Mehrotra	Member
Dr. Ram Krishna Tandon	Member
Prof. Prahlad Kumar	Member
Dr. Suman Seth	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Dr. Shipra Sanyal	Principal/Secy.Ex-Officio
Mrs. Gunjan Sharma	Bursor

### Members Nominated by Vice Chancellor

Prof. Ramendu Rai	Commerce Department University of Allahabad
Prof. P.K.Sahu	Education Department University of Allahabad
Prof. B.N. Mishra	Geography Department University of Allahabad
Dr. Kaushal Kishore	18-A, Auckland Road Allahabad

### Teacher Representative

Dr. Sandhya Arora	Teacher Representative
Dr. Ritu Jaiswal	Teacher Representative / Proctor
Dr. Archana Jyoti	Teacher Representative

### Permanent Invitees

Mr. Amit Khanna	Secretary SKP Society / Manager, S.K. Inter College
Smt. Meena Tandon	Manager, Navin Shishu Vatika, Allahabad

### Special Invitees

Mr. Rajat Kapoor	C.A.
Mrs. Krishna Banerjee	Dean - Student Welfare Coordinator - B.Ed. Faculty
Dr. Lalima Singh	Co-ordinator - Arts Faculty Proctor
Dr. Jyoti Kapoor	Co-ordinator - Science Faculty
Dr. Soni Srivastava	Co-ordinator - Commerce Faculty
Dr. Archana Tripathi	Co-ordinator - Commerce Faculty

### Joint Managing Committee

#### Saroj Lalji Mehrotra Science Faculty

Mr. S.K.Seth	Chairman
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	
Mr. Chetan Mehrotra	
Dr. (Smt.) Asha Seth	
Mr. G.C. Mehrotra	
Mr. Y.N. Mehra	
Mr. Rajeev Khanna	
Mr. Dilip Mehrotra	
Dr. (Smt.) Shipra Sanyal	

### Permanent Invitees

Mr. Vinayak Tandon
Mr. Rajat Kapoor
Mrs. Gunjan Sharma
Dr. (Smt.) Soni Srivastava

### Board of Directors - B.Ed

Dr. Asha Seth	Chairperson
Mr. Rajeev Khanna	Chairman of College Governing Body
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	Member
Mr. Dilip Mehrotra	Manager / Treasurer
Dr. R.K. Tandon	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Dr. Shipra Sanyal	Principal
Dr. Sudha Malhotra	Director
Dr. Lalima Singh	Co-ordinator, Chairman Admission Committee
-	Member
Dr. Alpana Agrawal	Member
Dr. Jyoti Kapoor	Teacher Representative
Dr. Harish Kumar Singh	Teacher Representative
Ms. Meenakshi Srivastava	Teacher Representative

### Our Mission

To raise the level of education of the girls belonging to the lower and middle section of society as well as minority class. Achievement and realization of their goals. To make the girl student independent and self reliant. To undertake future courses and training programme in order to make them economically independent.

### Our Vision

To help the girl student discover their innate potentials and promote them towards their personal and social benefits.



डॉ. ( श्रीमती ) शिप्रा सान्याल  
कार्यवाहक-प्राचार्या  
एसोसिएट प्रोफेसर - संगीत गायन

स्थायी शिक्षक वर्ग

कला संकाय

डॉ. अल्पना अग्रवाल  
डॉ. रीता चौहान  
श्रीमती गुंजन शर्मा  
श्रीमती कृष्णा बनर्जी  
डॉ. नीरजा सचदेव  
डॉ. आशा उपाध्याय  
डॉ. मीनू अग्रवाल  
डॉ. अर्चना त्रिपाठी  
डॉ. ज्योति कूपर  
डॉ. लालिमा सिंह  
डॉ. रचना आनन्द गौड़  
डॉ. मंजरी शुक्ला  
डॉ. संध्या अरोरा  
डॉ. रीतू जायसवाल  
लेफ्टिनेन्ट डॉ. रेखा रानी  
श्रीमती संगीता गौतम

एसोसिएट प्रोफेसर - दर्शनशास्त्र  
एसोसिएट प्रोफेसर - शिक्षाशास्त्र  
एसोसिएट प्रोफेसर - अर्थशास्त्र  
एसोसिएट प्रोफेसर - समाजशास्त्र  
एसोसिएट प्रोफेसर - अंग्रेजी  
एसोसिएट प्रोफेसर - हिन्दी  
एसोसिएट प्रोफेसर - प्राचीन इतिहास  
एसोसिएट प्रोफेसर - अर्थशास्त्र  
एसोसिएट प्रोफेसर - संस्कृत  
एसोसिएट प्रोफेसर - समाजशास्त्र  
एसोसिएट प्रोफेसर - हिन्दी  
एसोसिएट प्रोफेसर - दर्शनशास्त्र  
एसोसिएट प्रोफेसर - संगीत वादन  
एसोसिएट प्रोफेसर - प्राचीन इतिहास  
एसिस्टेंट प्रोफेसर - संगीत गायन  
एसिस्टेंट प्रोफेसर - चित्रकला

विज्ञान संकाय

डॉ. सोनी श्रीवास्तव  
डॉ. अर्चना ज्योति  
डॉ. प्रीति सिंह

एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - जन्तु विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - रसायन विज्ञान  
एसिस्टेंट प्रोफेसर - वनस्पति विज्ञान

डॉ. निधि श्रीवास्तव  
डॉ. रुचि मालवीय  
डॉ. ताहिरा परवीन  
डॉ. जेबा नकवी  
डॉ. मृदुला श्रीवास्तव  
डॉ. सुधा सिंह

अतिथि प्रवक्ता - संगीत वादन  
अतिथि प्रवक्ता - अंग्रेजी  
अतिथि प्रवक्ता - उर्दू  
अतिथि प्रवक्ता-मध्यकालीन इतिहास  
अतिथि प्रवक्ता - संस्कृत  
अतिथि प्रवक्ता - शिक्षाशास्त्र

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

कला संकाय

श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव  
श्रीमती सविता मेहरोत्रा

एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - ऑफिस  
मैनेजमेन्ट एंड सेक्रेटेरियल प्रैक्टिस  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - चित्रकला

डॉ. शिवशंकर श्रीवास्तव

डॉ. संजीव श्रीवास्तव

शालिनी तिवारी  
एंड

डॉ. आलोक मालवीय  
डॉ. प्रमिला गुप्ता  
डॉ. शर्मिला वैश्य  
डॉ. अचला श्रीवास्तव  
डॉ. दीपा श्रीवास्तव  
डॉ. मनोज अग्निहोत्री  
डॉ. सुमिता सहगल  
डॉ. अर्चना यादव  
पृथ्वी राज सिंह  
डॉ. प्रियंका द्विवेदी

डॉ. आशुतोष त्रिपाठी  
डॉ. शादमा अंजुम

डॉ. रुचि गुप्ता  
डॉ. मीना चतुर्वेदी  
डॉ. शिखा अग्रवाल  
डॉ. तनुश्री राय  
डॉ. विकास सिंह  
डॉ. शिव शंकर शुक्ला

डॉ. सुधा मल्होत्रा  
डॉ. विनोद कुमार सिंह  
डॉ. अरुणा मिश्रा  
डॉ. मंजू मिश्रा  
डॉ. हरीश कुमार सिंह  
डॉ. सुरेन्द्र कुमार  
डॉ. रंजना त्रिपाठी  
डॉ. शालिनी रस्तोगी  
डॉ. ममता भटनागर  
डॉ. श्रुति आनन्द  
मीनाक्षी श्रीवास्तव  
अनुजा पाठक

एसिस्टेन्ट प्रोफेसर-मध्यकालीन  
इतिहास  
अनुदेशक - ऑफिस मैनेजमेन्ट एंड  
सेक्रेटेरियल प्रैक्टिस  
अतिथि प्रवक्ता-ऑफिस मैनेजमेन्ट  
सेक्रेटेरियल प्रैक्टिस

विज्ञान संकाय

एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - वनस्पति विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - भौतिक विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - गणित  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - वनस्पति विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर- रसायन विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - गणित  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - रसायन विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - जन्तु विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - भौतिक विज्ञान  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - जन्तु विज्ञान/  
बायोटेक्नोलॉजी  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - बायोटेक्नोलॉजी  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - बायोटेक्नोलॉजी

वाणिज्य संकाय

एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर

बी.एड. संकाय

डायरेक्टर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर  
अतिथि प्रवक्ता  
अतिथि प्रवक्ता



शिक्षणेतर कर्मचारी वर्ग

स्थायी

श्री उमेश चन्द्र शर्मा	कार्यालय अधीक्षक
श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता	सहायक लेखाकार
श्री विनय कुमार यादव	स्टेनो
श्री राम कृपाल	सहायक लिपिक
श्री सन्त लाल	पुस्तकालय लिपिक
श्री शिवशंकर लाल	नैतिक लिपिक
श्री लक्ष्मण चन्द्र तिवारी	दफ्तरी
श्री घनश्याम सिंह	बुक लिफ्टर
श्री राधा कृष्ण	परिचर
श्री पुरुषोत्तम शर्मा	परिचर
श्री कल्लू	परिचर
श्री राम मिलन सेन	परिचर
श्री दया राम	परिचर
श्री राम लाल यादव	परिचर
श्री सुशील कुमार शुक्ला	परिचर
श्री मुरारी लाल	प्रयोगशाला परिचर
श्री नीम बहादुर थापा	प्रयोगशाला परिचर
श्री बच्ची सिंह बिष्ट	प्रयोगशाला परिचर
श्री राजेश कुमार	बुक लिफ्टर

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

विज्ञान संकाय

श्री रमेश चन्द्र	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रशेखर जोशी	प्रयोगशाला सहायक
श्री गुरुदास भट्टाचार्या	सहायक लिपिक
श्री जितेन्द्र कुमार	प्रयोगशाला सहायक
श्री मृदुल कुमार यादव	प्रयोगशाला सहायक

श्री आलोक कुमार साहू
श्री राहुल चटर्जी
श्री मोती लाल
श्री मुकेश कुमार
श्री अनोखे लाल
श्री विजय कुमार
श्री सूर्यमणि यादव
श्री दिनेश कुमार गुप्ता
श्री विनोद कुमार
श्री सन्तोष कुमार यादव
श्री चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी
श्री मोहित कनौजिया

कार्यालय सहायक
प्रयोगशाला सहायक
माली
सफाई कर्मचारी
चौकीदार
प्रयोगशाला परिचर
प्रयोगशाला परिचर
प्रयोगशाला परिचर
प्रयोगशाला परिचर
प्रयोगशाला परिचर
प्रयोगशाला परिचर
प्रयोगशाला परिचर

कला संकाय

श्रीमती मिथिलेश कुमारी	पुस्तकालय सहायक
श्री फूल चन्द्र यादव	परिचर
श्री विक्रम कुमार	सफाई कर्मचारी
श्री गोविन्द त्रिपाठी	पुस्तकालय परिचर

वाणिज्य संकाय

सुश्री रूपाली सक्सेना	पुस्तकालय सहायक
श्री अंकुर कपूर	लिपिक
श्री बृजेश कुमार	परिचर
श्री वीरेन्द्र कुमार	परिचर

बी.एड. संकाय

श्री सतीश कुमार धूरिया	टेक्निकल सहायक
सुश्री प्रविता सिन्हा	पुस्तकालय सहायक
श्री उमेश चन्द्र कुशवाहा	एकाउन्टेन्ट
श्री संजय मेहरोत्रा	कार्यालय सहायक
श्री धनंजय कुमार शुक्ल	परिचर
श्री यशपाल	सफाई कर्मचारी
श्री कुलदीप यादव	परिचर
श्री अनूप कुमार	चौकीदार



طوبی انصاری

بی۔ اے سال سوئم

## قصہ بصرہ کی شہزادی کا

قسم کے کھانے سے اس کی ضیافت کی اس سے بادشاہ نے پوچھا کہ تم کہاں کی شہزادی ہو۔ تو اس نے بتایا کہ میں آپ کی بیٹی ہوں، وہی بیٹی جس کو آپ نے ناراض کو کر شہر بدر دیا تھا۔ بادشاہ نے اسے گلے سے لگا لیا اور بادشاہی آمد و رفت رہنے لگی بادشاہ کے بعد ہی لڑکی بصرہ کے تخت و تاج کی مالک ہو گئی۔

□□□

یہ شہزادی شاہ بصرہ کی لڑکی تھی۔ یہ سات بہنیں تھیں۔ ایک دن بادشاہ نے پوچھا کہ یہ عیش و آرام جو تم لوگوں کو میسر ہے کس کی بدولت ہے؟ سب نے کہا آپ کی بدولت ہے۔ لیکن ایک جو سب سے چھوٹی تھی اس نے کہا جس بادشاہ علی الاطلاق نے آپ کو بادشاہ بنایا اسی نے ہم کو بادشاہ زادی کہلوا یا۔ یہ عیش و آرام اپنی قسمت سے ہے۔ یہ سن کر بادشاہ ناراض ہو گیا اور حکم دیا اس کے زیورات اتار لو اور ایک میانے میں بیٹھا کر ایک ویرانے میں پہنچا دیا گیا۔ تین دن بھوکی پیاسی رہی چوتھے دن فقیر مرد آئے شہزادی کو کھالا پلایا اور تسلی دی۔ روز آ نہ درویش صبح سے شام بھیک مانگتا اور شہزادی کو کھلاتا پلاتا ایک دن شہزادی نے کنگھا کرنے کے لئے اپنے بال کو کھولا تو اس میں سے ایک موتی گرا۔ اس نے اس موتی کو درویش سے بکوا یا اور ایک محل بنانے کا منصوبہ بنایا درویش نے کہا تم مٹی کھود کر گارے کیلئے تیار کرو، لڑکی نے جونہی زمین کھودی تو ایک دروازہ دکھائی پڑا جس میں اشرفیاں بھری ہوئی تھیں۔

درویش سے کہا کہ اب راج گیر کو بلاؤ اور ایک اعلیٰ شان محل تعمیر ہو۔ جب بادشاہ کو اس تعمیرات کی خبر پہنچی تو وہ دیکھنے کے لئے آیا۔ شہزادی نے اس کی کافی عزت کی اور قسم



طوبی انصاری  
بی۔ اے سال سوم

## وقت

یہ نہ سمجھیں کبھی حقیر ہے وقت  
ایک لمحہ بڑا خیر ہے وقت  
اہل تدبیر کا اسیر ہے وقت  
قدر دانوں کا دستگیر ہے وقت.  
کرتا نہیں وہ کسی کا بھی لحاظ  
بڑا منصف ہے یا ضمیر ہے وقت  
یوں تر مر ہم ہے سارے زخموں کا  
جس سے زخمی ہیں سب وہ تیر ہے وقت  
کریں تو قیر ہو سکے جتنی  
سب کا مرشد ہے سب کا پیر ہے وقت  
روز اول سے واقعات عالم  
کہ رہا ہے رقم دبیر ہے وقت  
کم گو ملتی ہے ماہی مقصود  
عمر دریا ہے ماہی گیر ہے وقت  
لمحہ رکتا نہیں کسی کے لئے  
برق رفتار گیر ہے وقت

□□□

یہ دنیا ایک شراب کی طرح ہے جو باہر سے تو  
خوبصورت لگتی ہے لیکن اندر سے کڑوی ہوتی ہے پراسوس  
سب اس شراب کے نشے میں ڈوبے ہوئے ہیں اس نشے کی  
دعوت دیتے ہیں اور اس نشے میں کون کیا کرتا ہے اسے خود  
نہیں معلوم، بس وہ اس شراب کے نشے میں دو بار ہوتا ہے  
اور اس نشے میں وہ یہ بھول جاتا ہے کہ یہ شراب ایک دن ختم  
ہو کر رہے گی!

□□□

طوبی انصاری  
بی، اے سال سوم

## دنیا

جتنی ہموار ہو گئی ہے دنیا اتنی ہی دشوار ہو گئی دنیا  
جتنی زردار ہو گئی دنیا اتنی نادار ہو گئی دنیا  
شوق آوارگی نے پایا فروغ گھر سے بے زار ہو گئی دنیا  
طشت ازبام ہو گئے اسرار ایک اخبار ہو گئی دنیا  
دیکھتی ہے جو وہ دکھاتی ہے آئینہ دار ہو گئی دنیا  
اب تو ہر شے لگی ہے یاں بکنے ایک بازار ہو گئی دنیا  
ہم رہے سادگی کے گرویدہ اس سے بیزار ہو گئی دنیا  
ظلم کرتی ہے اور ہستی بھی ایسی ناچار ہو گئی دنیا  
ہے طلب عاقبت کی اس کو سب کی دلدار ہو گئی دنیا  
روپ اہل ہوس کے ہاتھوں لٹا جس کا وہ نار ہو گئی دنیا  
اپنا پیدل ہی ہے سفر جاری برق رفتار ہو گئی دنیا  
گل رہا نہ کہ ہو مہک جس میں کیسی گلزار ہو گئی دنیا  
سب تو ابھی محو خواب ہیں کب سے بیدار ہو گئی دنیا

□□□



## شراب

روز کی طرح ایک دن جب ماں گئی تو کافی دیر تک واپس نہ آئی ہم ڈر سے باہر بھی نہیں نکلتے تھے کہ کہیں پھر کوئی بلند پرواز شکاری پرندہ ہمارا شکار نہ کر لے۔ ہم شدت سے ماں کا انتظار کر رہے تھے کہ بی چڑیا ہانپتے ہوئے آئیں اور بولیں ”شکاری نے جال بچھایا تھا جس میں تمھاری ماں پھنس گئی۔“

شام کا وقت تھا ہم گھونسلے میں تھے اور ہمیں آدم زاد کی آواز سنائی دے رہی تھی جو دھیرے دھیرے تیز ہوتی جا رہی تھی۔ ہم نے گھونسلے سے باہر جھانک کر دیکھا تو کچھ آدم زاد کے بچے تھے ان میں سے کچھ کے ہاتھوں میں پھل بھی تھے۔ ان میں سے ایک کی نظر ہم پر پڑ گئی اور وہ چلایا۔ ”ارے وہاں دیکھو اس پیڑ پر گھونسلا ہے اور اس میں چڑیا ہے بچے بھی ہیں۔“

اس کا اتنا کہنا تھا کہ وہ سب ہماری طرف آنے لگے ہم دونوں فوراً اپنے گھونسلے میں چھپ گئے لیکن کوئی فائدہ نہیں ہوا وہ آدم زاد کا بچہ میرے بھائی کو لے گیا ہم دونوں بہت چلائے لیکن انھیں ہم پر ذرا بھی رحم نہ آیا اور میرے بھائی کو لے کر جانے کہا چلے گئے۔

میری ماں بالکل صحیح کہتی تھی یہ دنیا پر آشوب ہے یہ دنیا خود غرض ہے یہ دنیا خود پرست ہے۔

واہ کتنا خوبصورت نظارہ ہے چاروں طرف سبزہ ہے اور ان میں رنگ برنگے بڑے ہی حسین و جمیل پھول۔ کتنے سارے پھولوں کے درخت بھی ہیں۔ آسمان سے مشرق سے سورج طلوع ہو رہا ہے اس کی ہلکی ہلکی روشنی سے تو منظر اور بھید لکش لگ رہا ہے واقعی یہ دنیا کتنی خوبصورت ہے۔ نا معلوم ماں کیوں کہا کرتی ہے کہ دنیا بہت خراب ہے.... اب تو میں بڑا ہو رہا ہوں پوری دنیا کی سیر کروں گا..

میں اپنے ایسے ہی خیالوں کی دنیا میں مگن تھا کہ اچانک ماں کی آواز سنائی دی۔ ”ارے تم گھر سے باہر کیوں نکل آئے۔ چلو اندر چلو میں نے منع کیا تھا کہ گھر سے باہر مت نکلنا ابھی تم بڑے نہیں ہوئے ہو۔ دنیا کتنی خراب ہے تم نہیں جانتے“ ماں کی بات سن کر میں گھر کے اندر ایک کنارے بیٹھ گیا۔

ایک روز یونہی جب ماں گھر میں نہیں تھی تب ہم تینوں بھائی بھر سے باہر کا مزہ لے رہے تھے کہ جانے کہاں سے ایک چیل آئی اور اپنی تیز رفتار کے ساتھ ہمارے ایک بھائی کو اپنے پنجوں کی گرفت میں لے کر اڑ گئی۔ ہم دونوں بھائی تو ڈر سیرو نے لگے اور فوراً گھر میں جا کر سمٹ گئے جب ماں واپس آئی تو ہم نے اسے ساری بات بتائی ہماری باتیں سننے کے بعد ماں بولی، اسی بات کا ڈر تھا۔ اب تو ہم گھر سے باہر نہیں نکلتے تھے جب تک ماں نہ کہے۔



دینے کے برابر ہے مگر یہ بھی ضروری ہے کہ ہر لڑکی تعلیم کے ساتھ ساتھ اپنی تمام ذمہ داریوں کو بھی بحسن خوبی نبھائے اور میں سب سے کہنا چاہو گی کہ:

روش خام پہ مردوں کی نہ جانا ہرگز  
داغِ تعلیم میں اپنی نہ لگانا ہرگز

□□□

ہما انصاری

بی۔ اے سال اول

## دوست

جو وقت پے آئے کام وہ ہے دوست  
جو نہ احسان جتائے وہ ہے دوست  
جب ضرورت پڑے مدد کی مجھے  
دوڑ کے پاس آئے وہ ہے دوست  
جو ہو آشنا برائیوں سے میری  
پھر بھی چاہے مجھ کو وہ ہے دوست  
اس کی تکلیف ہو میری تکلیف  
جو تکلیف سمجھے میری وہ ہے دوست  
دیکھ کر خوش مجھے، خوشی ہو اسے  
میرے ہر دکھ کو کھائے وہ ہے دوست  
دوں میں ہر شخص پر اسے ترجیح  
ہو بس میرا جائے وہ ہے دوست  
ساتھ ایک دوسرے کا دیں دونوں  
عمریوں ہی بیت جائے وہ ہے دوست

□□□

وجود زن سے ہے تصویر کائنات میں رنگ  
اسی کے ساز سے ہے زندگی کا سوزِ دروں  
جب عورت پڑھی لکھی نہ تو تصویر کائنات میں رنگ  
بیرنگ رہ جاتا ہے ساز کے تاروں سے وہ آگ پیدا نہ ہو  
سکیں گی۔ اکبر الہ آبادی جو تعلیم نسواں کے مخالف ہونے کے  
باوجود اس بات کے قائل ہیں۔

تعلیم عورتوں کو بھی دینی ضرور ہے  
لڑکی جو بے پڑھی ہو وہ بے شعور ہے  
ایسی معاشرت میں سراسر فتور ہے  
اور اس میں والدین کا بے شک قصور ہے

وقت کا تقاضا ہے کہ عہد حاضر میں بھی عورتوں کو  
تعلیم سے آراستہ کرنے کی جدوجہد کی جائے۔ پیغمبر اسلام  
حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ تعلیم  
حاصل کرنا ہر انسان مرد و عورت پر فرض ہے اور یہاں تک  
فرمایا ہے کہ اگر تعلیم پانے کیلئے آپ کو چین بھی جانا پڑے  
تو آپ ضرور جائیے۔ زمانہ قدیم میں عورتوں کی تعلیم سماج  
میں ایک بڑے گناہ کی حیثیت رکھتی تھی اور آج بھی کہیں کہیں  
خیالات موجود ہیں انہیں آج بھی کہا جاتا ہے کہ عورتوں کو  
صرف گھر کی چہار دیواری میں ہی مقید رہنا چاہئے۔ بلکہ بیٹو  
کی تعلیم پر خاصی توجہ دی جاتی ہے۔ حضرت اسمعیل علیہ السلام  
کو آدابِ فرزندگی کون سکھاتا؟ اگر عورت کم عقل ہے تو بڑے  
بڑے دانشوروں کی پرورش کس نے کی اور کون کر رہا ہے  
؟ عورت ضرور مقالات افلاطون نہ لکھ سکی مگر اس کے شعلے سے  
نکلا ہوا شرارہ افلاطون ہیں مختصر ہے کہ لڑکیوں کی تعلیم بہت  
ضروری ہے کیونکہ ایک لڑکی کو تعلیم دینا ایک خاندان کو تعلیم



## تعلیم بالغاں

تہذیب میں پوری طرح ڈھل جاتی ہیں۔ آزادانہ ماحول میں لڑکیاں بے پردگی اور بے راہ روی کا شکار ہو جاتی ہیں۔ لیکن حقیقت تو یہ ہے کہ اثر تعلیم کا نہیں بلکہ غلط تربیت اور غلط موزوں ماحول کا نتیجہ ہے۔ لڑکیوں کو ان پڑھ اور ناخواندہ رکھنا ایسا ہی ہے جیسے کوئی پر بہار درخت ساری عمر پھول اور پھل سے محروم رہ گیا ہو۔ علم ایک ایسا پیش بہاد دولت ہے جس کی اہمیت و افادیت سے کوئی انکار نہیں کیونکہ ہر شخص جانتا ہے کہ علم ہی وہ سیڑھی ہے جسے طے کر کے ترقی کی بلند یوں تک پہنچا جا سکتا ہے۔ تعلیم کی وجہ سے انسان، مذہب، شائستہ اور ہنرمند بنتا ہے۔ پڑھے لکھے لوگوں کی وجہ سے سماجی زندگی بہتر اور باعزت بنتی ہے۔ ملک کی ترقی اور خوشحالی کا سبب بنتی ہے۔ اسلئے سماج کے ہر فرد کو تعلیم حاصل کرنا ضروری ہے۔

بچہ کا پہلا مدرسہ ماں کی گود ہوتی ہے عورت کا تعلیم ادبا و رطو طریقہ سے آشنا ہونا انتہائی لازمی ہے۔ اگر ماں تعلیم یافتہ ہے تو وہ اپنے بچوں کو اول مرحلہ میں اچھی اچھی باتیں سکھاتی ہے اور بہتر طریقے سے اس کی پرورش کس کر سکتی ہے، جو لڑکیاں پڑھی لکھی نہیں ہوتی وہ خوبصورت ہی کیوں نہ ہو اکثر انھیں شرمندگی اٹھانی پڑتی ہے عورت کی عظمت کا راز علامہ اقبال نے بڑی خوبصورتی کے ساتھ پیش کیا ہے۔

انسانی زندگی میں تعلیم کا ایک اہم مقام ہے تعلیم کے بغیر زندگی نامکمل ہے تعلیم کی روشنی حاصل کر کے ہی انسان اپنی منزل تک پہنچ سکتا ہے اس کے برعکس جو لوگ تعلیم کی دولت سے محروم ہوتے ہیں انہیں زندگی کے مختلف منصوبوں میں کئی طرح کی دشواریوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔

چونکہ تعلیم انسانوں کے لئے اہم ہے اس لئے اسلام نے حصول تعلیم کے معاملہ میں مردوں و عورتوں کے درمیان کوئی امتیاز نہیں رکھا۔ قرآن مجید میں جہاں علم حاصل کرنے کی طرف توجہ دلائی گئی ہے ہاں مرد یا عورت کے درمیان فرق نہیں کیا گیا ہے۔ اس کا مطلب ہے کہ حصول علم جہاں مردوں کے لئے بہت ضروری ہے وہی عورتوں کے لئے بھی انتہائی مفید ہے کیونکہ دونوں ہی معاشرہ کا حصہ ہیں کسی ایک کے بغیر انسانی معاشری کی تکمیل نہیں ہو سکتی۔ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی پاکیزہ حیات کا مطالعہ کرنے سے یہ بات روز روشن کی طرح عیاں ہو جاتی ہے کہ آپ نے مردوں کی تعلیم کے ساتھ ساتھ خواتین پر بھی خصوصی توجہ دی ہے۔ جہاں تک لڑکیوں کی تعلیم اور ذہانت کا تعلق ہے یہ دیکھا گیا ہے کہ فطرتاً لڑکیاں زیادہ محنتی اور دلچسپی سے پڑھنے والی ہوتی ہیں تعلیم میں انہماک قابل داد ہوتا ہے۔ آج بعض لوگ لڑکیوں کو اعلیٰ تعلیم دلانے کی مخالفت کرتے ہیں کہ وہ مغربی



ازکا صدیقی  
بی۔ اے سال سوم

## تعلیم نسواں کی اہمیت

بہت جلد باعزت مقام پالیتی ہے۔ پڑھی لکھی بہو پورے خاندان میں ایک روشن چراغ کے مانند ہے۔ صورت شکل کے ساتھ تعلیم یافتہ لڑکیوں میں بات کرنے کا سلیقہ تہذیب و شائستگی اور خود عقاد کی ان کی شخصیت کو چار چاند لگاتی ہے۔ جو لڑکیاں تعلیم یافتہ نہیں ہوتی اور وہ خوبصورت ہی کیوں نہ ہوں اکثر انہیں شرمندگی اٹھانی پڑتی ہے۔

لڑکیوں کی تعلیم کا مسئلہ ابھی تک کسی سنجیدگی کے ساتھ ملک میں تحریک کا مقام حاصل نہ سکا عورت کی عظمت کا راز علامہ اقبال نے بڑی خوبصورتی کے ساتھ پیش کیا ہے۔

وجودِ زن سے ہے تصویرِ کائنات میں رنگ

اسی کے ساز سے ہے زندگی کا سوزِ دروں

جب عورت پڑھی لکھی نہ ہو تو تصویرِ کائنات میں رنگ بے رنگ رہ جاتا ہے ساز کے تاروں سے وہ راگ پیدا نہ ہو سکیں گی۔ اکبر الہ آبادی تعلیم نسواں کے مخالف ہونے کے باوجود اس بات کے قائل ہیں:

ایسی معاشرت میں سراسر فتور ہے  
اور اس میں والدین کا بے شک قصور ہے

□□□

جہاں تک لڑکیوں کی تعلیم اور ذہانت کا تعلق ہے یہ دیکھا گیا ہے کہ فطرتاً لڑکیاں زیادہ محنتی اور دلچسپی سے پڑھنے والی ہوتی ہیں۔ تعلیم انہماک (competition) قابل داد ہوتا ہے۔ آپس میں دوسرے پر رشک کرتی ہیں۔ اس لئے شاید مقابلہ کی اسپرٹ بہت کام کر جاتی ہے اور اکثر لڑکوں کے مقابلے میں تعلیم میں لڑکیاں بہت آگے رہتی ہیں۔ اگر لڑکے ۲۰ فیصد کامیاب ہوتے ہیں تو لڑکیاں ۸۰ فیصد کامیاب ہوتی ہیں۔

لڑکیوں کو انپڑھ اور ناخواندہ رکھنا ایسا ہی ہے جیسے کوئی پُر بہار درخت کو ساری عمر پھل اور پھول سے محروم کیا گیا ہو۔ ایک لڑکی کی تعلیم سے پورا خاندان روشن ہو جاتا ہے۔ اور وہ جس گھر میں جائے گی عزت پائے گی۔ ماں بچوں کی سب سے پہلی درس گاہ ہوتی ہے۔ اگر ماں تعلیم یافتہ ہوتی ہے تو اس کی اولاد کی تربیت تعلیم کے دائرے میں ہوتی ہے۔ اکثر یہ دیکھا گیا ہے کہ ملازمت کرنے والی لڑکیوں کی شادی بہت جلد ہو جاتی ہے یعنی ان کا رشتہ بہت جلد مل جاتا ہے۔ کیونکہ ان کی وجہ سے خاندان کی آمدنی میں اضافہ ہوتا ہے۔ تعلیم یافتہ ہونے کا سب سے بڑا فائدہ یہ ہے کہ ہر ماحول میں بہت جلد ہی اپنے آپ کو ڈھالنے کی صلاحیت رکھتی ہے۔ اور اس جگہ



## ہمارے سنے اور حقیقت

ہے۔ جیسے ہماری آنکھوں پر کسی نے کالی پٹی باندھ دی ہو اور جسکو نہ کھول پانے کی وجہ سے یا تو ہم بہت ہی حقیر سے مصروف ہو کر بیٹھ جاتے ہیں اور یا تو اسے ہٹانے کی کوشش میں اتنا مصروف ہو جاتے ہیں کہ کبھی کبھی ہم غلط راستہ بھی اختیار کر لیتے ہیں اور کبھی بالکل سیدے راستے پر چل کر اور کمر توڑ کوششوں سے وہ کامیابی حاصل کرتے ہیں جسے قیامت تک لوگ پسند کرتے ہیں اور کچھ تعلیم حاصل کر لیتے ہیں۔

زندگی ایک برسات کے اپنی کی طرح صاف پاک رکھنا یا گندا کرنا ہمارے ہاتھ میں ہے۔ اگر صاف رکھتے ہیں تو لوگ خوشی خوشی پینا پسند کرتے ہیں اور اگر گندا ہے تو وہی لوگ پیتے ہیں جو اپنے آپ کو بیماری کا شکار ہونا دیکھنا چاہتے ہیں یا جن کو اس نتیجہ کا احساس بھی نہیں ہوتا۔

یہی ہمارے چھوٹے چھوٹے یا بڑے سنے ہوتے ہیں جو اصل زندگی میں قدم رکھتے ہی وہ حقیقت کا چہرہ اختیار کر لیتے ہیں۔ اس طرح ہمارے سنےوں کا حقیقت سے بہت بڑا تعلق ہوتا ہے جس کے بنا یا پورا نہ ہونے پر ہم موت کی بھیک مانگنے لگتے ہیں۔

”سننا ہی حقیقت ہے اور حقیقت ہی سننا“

□□□

اس دنیا میں کون ہے جو اس احساس کے ساتھ پیدا نہ ہوا ہو کہ ہم تو ہم اور جو کچھ ہمارے سامنے ہے وہ سب ہمارا ہے۔ جب بچہ چھوٹا ہوتا ہے تبھی سے اس کے اندر یہ احساس جاگ اٹھتا ہے کہ یہ والدین ہمارے ہیں۔ اور جس گھر میں ہم رہ رہے ہیں وہ ہمارا ہے۔ جس اسکولوں میں پڑھنے جا رہے ہیں اور جس کھلونے سے کھیل رہے ہیں وغیرہ سب ہمارا ہے اور کسی کا نہیں۔ ان میں سے کچھ ایسے ہوتے ہیں جو ان ساری چیزوں کو کھونے کے ڈر سے بھی کانپ اٹھتے ہیں اور کچھ بے پرواہ مست مولا ہو کر زندگی بسر کر رہے ہیں۔ اور جیسے جیسے ہم بڑے ہوتے ہیں ہمارے اندر یہ احساسات اور بھی مضبوط ہوتے جاتے ہیں اسکے علاوہ ہم ایک نئی دنیا کی بھی کھوج کر لیتے ہیں جیسے ہی ہم بڑے ہوتے ہیں اور نوجوانی کی حالت میں پہنچ رہے ہوتے ہیں ہمارے اندر ایک عجیب و غریب کیفیت پیدا ہوتی ہے اللہ ہی جانے وہ کہاں سے آ جاتی ہے اور کیوں؟

آتی ہے عجیب و غریب کیفیت ہمارے اندر کہ دیکھنے لگتے ہیں سنے آنکھوں سے پورا کرنے کی حسرت بھری نگاہیں ہمارے اندر ہمیں جگاتی ہیں اسے حقیقت کرنے کو سنے سے ہم کھلی آنکھوں سے سنے دیکھنے لگتے ہیں اور ان سنےوں میں اتنا ڈوب جاتے ہیں کہ ہمیں اور کچھ دیکھائی نہیں دیتا



ہما انصاری

بی۔ اے سال اول

## اچھی باتیں

- ۱- زندگی ایک ہیرے کے مانند ہے اسے تراشنا انسان کا کام ہے
- ۲- سچ بولو چاہے نقصان ہی کیوں نہ ہو۔
- ۳- اچھے لوگوں کی مجلس میں بیٹھو، اچھی باتیں معلوم ہوں گی۔
- ۴- دوسروں کی مدد کرو، خدا تمہاری مدد کرے گا۔
- ۵- لڑائی جھگڑے سے بچو، خدا جھگڑا لوالو آدمی کو ناپسند کرتا ہے۔
- ۶- ہمیشہ انصاف کی کہو چاہے وہ تمہارے خلاف ہی کیوں نہ ہو۔
- ۷- علم ایسی دولت ہے جسے کوئی چھین نہیں سکتا۔
- ۸- اللہ غرور کرنے والوں کو پسند نہیں کرتا۔
- ۹- چوری چغلی غیبت گالی وغیرہ بری عادتیں ہیں ان سے بچو۔
- ۱۰- خود بھی نیک کام کرو اور دوسرے سے بھی نیک کام کرنے کو کہو۔

□□□

ہماری مشرقی تہذیب میں اب تک یہی تعلیم رائج ہے، مگر غدر کے بعد مغربی تہذیب نے مشرقی تہذیب و تمدن پر پورا اثر ڈالا۔ لوگ مغرب کے مقلد ہو گئے۔ انگریزی تہذیب نے عورتوں کو متاثر کیا۔ مغرب کی عورتوں کا شمار کلب ایٹنڈ کرنا، مرد کے دوش بدوش بازار جانا، ان کے ساتھ رقص کرنا، مشرق تہذیب ان کے لیے عیب ہے۔ مشرق خواتین نے مغرب کی تقلید کی بقول اکبر الہ آبادی:

حامدہ چمکی نہ تھی انگلش سے جب بیگانہ تھی

اب ہے شمع انجمن پہلے چراغ خانہ تھی

بے پردگی، بے شرمی، آج عورتوں کا شعار ہو گئی ہے آج کا نظام تعلیم مغربی طرز پر ہے جو عورت کے لیے نہایت مضر ہے۔ لڑکیوں اور لڑکوں کو ایک ہی تعلیم دینا غلط اور بے سود ہے۔ آج کی تعلیم نسواں کچھ اس قسم کی ہے۔

ہمارے ملک میں ہوتا ہے کیا تعلیم نسواں سے

بجز اس کے کہ آبا اور بھی گھبرائیں اماں سے

زیادہ سے زیادہ خواتین کو تعلیم یافتہ ہونا چاہئے تا کہ وہ اپنے مستقبل میں اپنے گھر بار کو سلیقہ مندی سے سنبھالیں۔ بچوں کی دیکھ بھال، صحت اگر کوئی عورت تعلیم یافتہ نہیں تو وہ پھوہڑ اور جاہل کہلاتی ہے۔ وہ گھر کو دوزخ اپنے شوہر کو اپنے پھوہڑ پن سے بدظن بنائے گی اور اس زندگی بچوں کے اوپر برا اثر پڑتا ہے فضول خرچ کرے گی اور تنگدستی اور پریشان حالی میں زندگی بسر کرے گی۔

□□□



رہنما افروز  
بی۔ اے سال اول

## تعلیم نسواں

پرانے زمانے سے گھر کی بچیاں قرآن پاک، ودینیات اور اخلاق و اصلاح کی تعلیم حاصل کرتی تھی۔ وہ گھر پر بھی پڑھتی تھیں اور اڑوس پروس میں بھی پڑھنے جاتی تھیں ان کو امور خانہ داری کی تعلیم خاص طور پر دی جاتی تھیں اور انگریزوں کی بیٹی نہ صرف عالم تھی بلکہ اچھی شاعرہ اور ایب بھی تھی۔ اور جتنی تخلص رکھتی تھیں۔

تعلیم نسواں کا مطلب ایسی تعلیم ہے جس میں دین و مذہب اخلاق و اصلاح کی تعلیم ہو۔ امور خانہ داری کی تربیت ہو۔ اپنے فرائض اور حقوق کو پہچانے۔ حلاکتہ آج کا تقاضہ کچھ اور ہی ہے۔ لڑکی خطوط نویسی، دینیات اور امور خانہ داری کے ساتھ ساتھ ایسی زبان اور تعلیم بھی سیکھے جو اس کے مستقبل کو روشن بنائے۔ لڑکی کو اس دور میں کم سے کم میٹرک پاس ہونا چاہئے۔ لیکن کالج و اسکول کا رنگ نہ ہو۔ آج کل کالج و اسکول جانے والی لڑکیاں عام طور پر شرم و حجاب کو بالائے طاق رکھ دیتی ہیں۔ یہ میٹرک کی تعلیم ان کے برے وقت میں کام آئے گی۔ جو عورت تعلیم یافتہ نہیں وہ بے شعور ہے۔

تعلیم عورتوں کو بھی دینا ضرور ہے  
لڑکی جو بے پڑھی ہو وہ بے شعور ہے

تعلیم عورتوں کی ضروری تو ہے مگر خاتون خانہ ہوں وہ سبھا کی پری نہ ہوں عورت اور مرد دونوں ہی سماج کے فرد ہیں۔ دونوں ایک دوسرے کے مددگار اور ایک دوسرے پر منحصر ہیں ایک کے بغیر دوسرے کی زندگی نامکمل ہے۔ سماج کی ترقی میں دونوں کا یکساں ہاتھ ہے۔ مرد کا کام روزی کمانا ہے اور عورت اس روزی کی تقسیم اپنی سلیقہ مندی سے کرتی ہے۔ ایک سلیقہ مند عورت گھر کو جنت کا نمونہ بنا دیتی ہے یہ سلیقہ اس کو آتا کہاں سے ہے؟ یہ تعلیم و تربیت کے ذریعے آتا ہے۔ مرد کو روزی کمانے کے لیے کسی نہ کسی قسم کی تعلیم حاصل کرنا ضروری ہے۔ اس طرح عورت کی تعلیم بھی ضروری ہے تاکہ وہ اپنے دین و مذہب اور امور خانہ داری سے پوری طرح واقف ہو اس میں سلیقہ مندی ہو وہ گھر کو نمونہ جنت بنا سکے۔ جس طرح مرد گھر کی حفاظت کرتا ہے اسی طرح سلیقہ مندی بھی گھر کی محافظ ہے۔ عورت گھر کی ذمہ دار ہے گھر کا حساب، انتظام بچوں کی دیکھ بھال اور بچوں کے مستقبل کی وہ واحد ذمہ دار ہے۔ بچوں کے اوپر ماں کی تربیت کا پورا اثر پڑتا ہے۔ اگر ماں تعلیم یافتہ ہے تو بچوں کا مستقبل رہے گا۔

مسلم خواتین میں تعلیم کا سلسلہ بہت پرانا ہے۔



سے دیکھتے تھے بادشاہ نے پوچھا مرزا اس قدر غور سے کیا دیکھتے ہو؟ مرزا نے ہاتھ باندھ کر عرض کیا کہ ”پیر و مرشد“ کسی شاعر نے کہا ہے کہ اناج کے ہر دانے پر اس پانے والے کا نام اور شجرہ لکھا ہوتا ہے۔ میں دیکھ رہا ہوں کہ کسی دانے پر میرا اور میرے باپ دادا کا نام لکھا ہے یا نہیں! بادشاہ مسکرائے اور اس دن بہت نفیس آم مرزا کے گھر بھجوا دیا۔

غالب انسان دوست اور عوام دوست شاعر تھے ان کی شاعری میں عشق و محبت کی باتیں زیادہ ملتی ہیں انھوں نے پاکیزہ و محبت کو بہت ہی اچھی طرح سے بیان کیا ہے۔

غالب کی عشقیہ بیان کے مثال ملاحظہ ہو:

وہ آئیں گھر میں ہمارے خدا کی قدرت

کبھی ہم ان کو کبھی اپنے گھر کو دیکھتے ہیں

اردو شعر و ادب میں مرزا غالب کا خاص مرتبہ ہے لیکن شاعر کی حیثیت سے وہ زیادہ مشہور ہیں اور شاعری کے میدان میں ان کا شاید ہی کوئی ہم سر ہو۔ یہی وجہ ہے کہ جب تک اردو قائم ہے مرزا غالب کا نام بھی زندہ رہے گا ان کی شاعری بہت ہی کمال اور شوخی مزاج کی ہوتی تھی ان کی شاعری کا بڑا غلبہ تھا وہ بہت ہی خوبصورت انداز میں شاعری پیش کرتے تھے۔

ہیں اور بھی دنیا میں سخن در بہت اچھے

کہتے ہیں کہ غالب کا ہے انداز بیباں اور

غالب کا نام رہتی دنیا تک قائم رہے گا حقیقت تو یہ

ہے کہ غالب سب پر غالب ہے۔

□□□

اور کہاں۔ پانی سبحان اللہ، شہر سے تین سو قدم پر ایک دریا ہے اور کوئی اس کا نام ہے بے شبہ چشمہ آب حیات کا کوئی سوتا اس میں ملا ہے۔ خیر، اگر یوں بھی ہے تو بھائی آب حیات عمر بڑھاتا ہے لیکن اتنا شیریں کہا ہوگا تمہارا نخل پھنچا۔ تر دد عبث۔ میرا مکان ڈاک گھر کے قریب اور ڈاک منشی میرا دوست نہ عرف لکھنے کی حاجت نہ ملے کی حاجت ہے۔ یہاں کا حال سب خوب ہے اور صحبت مرغوب ہے اس وقت مہمان ہوں دیکھوں کیا ہوتا ہے تعظیم و توقیر میں کوئی دقیقہ ضرور گزراست نہیں ہے۔ لڑکے دونوں میرے ساتھ آئے ہیں اس وقت اس سے زیادہ نہیں لکھ سکتا۔“

مرزا کی گفتگو بہت ہی دلچسپ ہوتی تھی اور ظرافت

ان کے مزاج میں کوٹ کوٹ کر بھری تھی۔ اس کے علاوہ غالب کے چند خطوط جیسے میر مہدی مجروح کے نام، منشی ہر گوپال تفتہ کے نام اور چند دیگر اشخاص جو ان کے قریبی تھے۔ ایسے خطوط نگاری کی حیثیت سے اپنا ایک خاص مقام رکھتے ہیں۔ بہت سے ادیبوں نے خطوط لکھے مگر غالب کے خطوط کا آج تک جواب نہ ہو سکا یہ خطوط اردو نثر کی ارتقا میں سنگ میل کی حیثیت رکھتے ہیں اس کے علاوہ بہت شوخ تھے اس خیال کو غالب نے نہایت فلسفیانہ انداز میں نظم کیا ہے۔

کعبہ کس منہ سے جاؤ گے غالب شرم تم کو مگر نہیں آتی

بادشاہ کے حضور میں بھی خاموش نہیں رہتے تھے

آموں کے بہت شوقین تھے ایک بار آموں کے موسم میں

بہادر شاہ، مرزا غالب اور دیگر مصاحبین کے ساتھ اپنے باغ

میں ٹہل رہے تھے۔ اس باغ کے آم صرف بادشاہ اور ان کی

بیگمات کو نصیب ہوتے تھے۔ مرزا بار بار آموں کی طرف غور



## اردو ادب میں غالب کا مرتبہ

غالب نے اپنی زندگی میں بہت غم اٹھایا بہت تکلیفیں سہی لیکن پھر بھی ہمیشہ خوش و خرم رہے۔ بچپن سے ہی ان کا ذہن ایسا تھا کہ لوگ رشک کرتے۔ غالب کی زندگی میں بہت اتار چڑھاؤ آئے لیکن غالب نے بہت ہمت و صبر سے کام لیا اور اپنی آن بان میں فرق نہیں آنے دیا۔ غالب کے کلام میں رشک خوداری کے مضامین بھی موجود ہیں۔

درد منت کش دوانہ ہوا میں نہ اچھا ہوا برانہ ہوا  
جان دی دی ہوئی اس کی تھی حق تو یہ ہے کہ حق ادا نہ ہوا  
دوستوں کی صحبت کا ان کو بہت شوق تھا جو شخص ایک بار ان سے ملتا اسے ہمیشہ ان سے ملاقات کا اشتیاق رہتا تھا۔ غالب کے بہت دوست تھے جو مختلف مذہبوں سے تعلق رکھتے تھے ان کے خطوط پڑھنے سے انداز ہوتا ہے کہ ان کو اپنے دوستوں سے کس قدر محبت تھی۔ ان کا کافی وقت خطوط کے جواب لکھنے میں جاتا تھا یہاں تک کہ بیماری اور تکلیف کی حالت میں بھی جواب لکھنے سے باز نہیں آتے تھے۔ وہ اپنے دوستوں کو خط اس طرح سے لکھتے تھے کہ ایسا لگتا کہ دو دوست آپس میں بیٹھ کر باتیں کر رہے ہوں انھوں نے میر مہدی حسن مجروح کو خط کے جواب میں لکھا۔

”ابا ہا ہا میرا میرا مہدی آیا۔ بھائی مزاج تو اچھا ہے بیٹھو یہ رام پور ہے دارالسرور ہے جو لطف یہاں ہے وہ

غم ہستی کا اسد کس سے ہو جز مرگ علاج  
شع ہر رنگ میں جلتی ہے سحر ہوتے تک  
مرزا غالب کے نام سے ہر شخص واقف ہے وہ اردو کے سب سے مشہور شاعر ہیں۔ نام اسد اللہ خاں اور تخلص غالب ہے ۱۲۱۲ھ میں اکبر آباد میں پیدا ہوئے لیکن زندگی دہلی میں گزری تھی صرف پانچ برس کے تھے کہ ان کے والد مرزا عبد اللہ بیگ کا انتقال ہو گیا۔ چنانچہ ان کی پرورش ان کے چچا مرزا نصر اللہ بیگ نے کی۔ ابتدائی کتابیں مرزا نے آگرہ کے ایک نامی معلم شیخ معظم سے پڑھیں اور فارسی کی تعلیم ایک ایرانی ہر مز سے حاصل کی۔ یہی وجہ ہے کہ انھیں فارسی زبان میں غیر معمولی مہارت حاصل تھی۔ غالب کی سادگی ملاحظہ ہو۔

دلِ ناداں تجھے ہوا کیا ہے آخر اس درد کی دوا کیا ہے  
قدرت نے انھیں شاعر پیدا کیا تھا۔ دلی پہنچ کر وہ اپنی شعر و شاعری کے لئے مشہور ہو گئے ان کی رسائی شاہی دربار میں بھی ہو گئی جہاں سے انھیں ۱۸۵۷ء تک پچاس روپے مہوار ملتے رہے۔ غدر کے بعد بادشاہت ختم ہو جانے کی وجہ سے یہ رقم بند ہو گئی۔ حکومت نے چند سال کے لئے ان کی پینشن بھی روک لی چنانچہ زندگی کا آخری زمانہ انہوں نے بہت تکلیف سے گزارا ۱۸۶۹ء میں ان کا انتقال ہو گیا اس وقت مرزا کی عمر ۷۴ برس کی تھی۔



دروازے دولت نے آکر بھی سر جھا کا یا ہے۔

ورنہ تالابوں میں میڈھگ بھی بولا کرتے ہیں۔

ہمیں بھی اگر اپنے ملک اپنے کو آگے بڑھانا ہے  
ترقی دینا ہے تو دنیا کو ترقی یافتہ ملکوں کی طرح اپنی نئی نسلوں کو  
علم کے زیور سے آراستہ کرنا ہے اسی میں ہماری بھلائی ہے  
اور پوری انسانیت کی بھلائی ہے کیونکہ ترقی کا ہر راز علم میں  
چھپا ہے علم ہی کے ذریعے ہمارا ملک ترقی یافتہ ملکوں کی گنتی  
میں آئے گا۔

☆ جھوٹے ساتھی سے سچی جدائی ہزار درجہ بلند ہے کم  
از کم یہ محبت تو باقی رکھتی ہے۔

☆ کوئی نازک شیشہ توڑنے سے پہلے سوچ لو کہ اس  
کی کرچیاں تمہیں بھی زخمی کر سکتی ہیں۔

☆ اپنے دل کی حالت کو کبھی گرنے مت دو کیوں کہ  
لوگ گرتے ہوئے مکان کی اینٹ بھی اٹھالے جاتے ہیں۔

☆ رحم کرنے والوں پر رحمان رحم کرتا ہے سچائی ہمیشہ  
کامیابی کا راستہ دکھاتی ہے۔

☆ کسی کو برا کہنے سے پہلے سوچ لو کہ تم کتنے اچھے  
ہو۔

☆ کچھ بھی بولنے سے پہلے سوچ لیا کرو تو کبھی ذلیل  
نہ ہو گے۔

☆ زیادہ گفتگو کرنے سے خاموشی ہزار درجہ بلند ہوتی  
ہے۔ کیونکہ خاموش رہنے والا زیادہ عقل مند ہوتا ہے۔

☆ سب سے اچھا ساتھی کتاب ہے۔ بات ایسی کرو جو  
تمہیں رسوا نہ کر سکے۔ جہالت تمام برائیوں کی بنیاد ہے۔

☆ جہالت ختم کرو برائیوں کا خاتمہ ہو جائے گا۔

☆ غیبت عبادت کو ختم کر دیتی ہے۔ جھوٹ تمام نیکیوں  
کو ایسے کھا جاتا ہے جیسے آگ لکڑی کو۔

☆ نیک عورت سب سے بڑی نعمت ہے۔  
☆ اخلاق سب سے بڑی دولت ہے۔

□□□

اسی لئے مولائے کائنات حضرت علیؑ نے فرمایا ہے  
کہ ”نہیں یتیم وہ شخص جسکے باپ مرجائیں بلکہ یتیم وہ شخص ہے  
جو جاہل ہے۔“

اور مولائے کائنات کے اسی قول سے متاثر ہو کر  
علامہ شاعر اقبال نے کہا ہے:-

زمانہ نام ہے میرا تو میں سب کچھ مٹا دوں گا  
کہ جو تعلیم سے بھاگے گا نام اس کا مٹا دوں گا

□□□

ناز فاطمہ

بی۔ اے اوّل

## باتوں سے خوشبو آئے

☆ زندگی کی مشکلات گھاس کی طرح ہیں اگر ان پر توجہ  
نہ دی جائے بہت تیزی سے بڑھنے لگتی ہیں۔

☆ زندگی کو اس کی طوالت سے نہیں شدت سے ناپا  
کرتے ہیں۔

☆ اگر بولنے کا شوق ہے تو بولنے کا کمال بھی پیدا کرو



## علم کی حقیقت

آئینہ ہے جس میں فکر سنگار کرتی ہے علم وہ راستہ ہے جس میں چل کر آدمی مایوس نہیں ہوتا علم انسانیت کی دلہن کا زیور ہے علم وہ شمع ہے جو اپنے پروانوں کو جلاتی نہیں ہے بلکہ حیات جاویداں عطا کرتی ہے۔ علم وہ سیپ ہے جس میں پیدا ہونے والا ہر موتی سچا ہے۔

علم ایسی روشنی ہے جو راستہ دکھاتی ہے علم ایسی دولت ہے جو عزت دیتی ہے اور اس دولت کو کوئی چرا بھی نہیں سکتا علم جس کے دم سے پورے روئے زمین پر بسا ہے علم کے محو کے ذریعے انسان کسی بھی کام میں کامیابی حاصل کرتا ہے۔ علم انسان کی حفاظت کرتا علم جو انسان کی قسمت بدل دیتا ہے۔ علم کی قیمت نہیں لگائی جاسکتی۔ علم ایسا پھول ہے جسکی مہک دور تک جاتی ہے اور ایسا گلاب ہے جو کبھی نہیں مرجھاتا علم جو پہاڑ سے زیادہ بلند ہے اور سمندر سے زیادہ گہرا۔ اور علم ہی انسان کا اصل معیار ہے اور انسان کو ناپنے کا صحیح پیمانہ ہے۔

حقیقت یہ ہے کہ علم کے پاس انسان کے ہر درد کی دوا ہے اور انسان کے مرنے کے بعد بھی علم زندہ رہتا ہے آج دنیا میں جتنی بھی ترقی ہے سب علم سے ہے علم نہیں تو آج کچھ نہ ہوتا یہ ساری دولت علم سے ہے ہر ملک اور قوم نے علم کے سہارے ہی آج تک ترقی کی ہے۔

تاریخ گواہ ہے کہ علم کے آگے تاج و تخت بھی جھکے ہیں علم کے سامنے دربار بھی کانپ اٹھے ہیں اور علم کے

انسان کی زندگی میں علم کی بہت بڑی اہمیت ہے اگر کسی انسان کے پاس علم نہیں ہے اس کے پاس کچھ نہیں۔ علم ہونے سے عزت ہے علم نہ ہونے سے ذلت۔ جس طرح چاند اندھیرے کو روشنی دیتا ہے بادل سوکھی زمینوں کو پانی دیتا ہے اسی طریقے سے علم جہالت کے بنجر زمینوں میں سبزہ اُگاتا ہے اور انسان کو گھنے جنگل سے نکال کر جالوں کے چمن میں کھڑا کر دیتا ہے۔ یہ وہ طاقت ہے جس کی جستجو میں ہزاروں تیلیوں اور بھورے اپنا دامن پھیلا کر اس سے خوشبو کی بھیک مانگتے ہیں۔ واقعی علم وہ خزانہ ہے جس میں خرچ سے اضافہ ہوتا ہے سورج دن میں نکل کر رات کو ڈوب جاتا ہے، چاند رات کو نکل کر دن میں ڈاب جاتا ہے لیکن علم وہ سورج اور چاند ہے جو دن میں ڈوبتا ہے اور رات کو اپنی روشنی ہر وقت بکھیرتا رہتا ہے۔

علم کسی دھرم یا مذہب کا نہیں ہے بلکہ ہر مذہب اور دھرم کو سمان دیتا ہے علم کے چہرے پر کبھی بڑھاپے کی جھریاں نظر نہیں آتی ہیں۔ علم وہ سمندر ہے جس کی گہرائی کا اندازہ نہ ممکن ہے۔

علم کے ہونے پر ہمیشہ مسکراہٹ رہتی ہے علم بلند یوں کی ضمانت ہے خوش نصیب ہیں وہ لوگ جو علم کی جستجو میں رہتے ہیں۔ ماں کی گود سے قبر کی منزل تک علم ایک ایسا رہنما ہے جو پوشیدہ رہ کر بھی انسان کی رہنمائی کرتا ہے علم وہ



اپنے بچوں کو پڑھانا لکھانا چاہئے اور ان کو اس قابل بنانا چاہئے کہ وہ سماج و معاشرے میں اچھا مقام حاصل کر سکے اور عزت و شان شوکت سے رہے۔

□□□

ایمن افتخار  
بی۔ اے سال دوم

## وقت کی اہمیت

دنیا میں سب سے قیمتی چیز ہے ”وقت“ اگر کسی انسان کے پاس وقت نہیں ہے تو وہ ایک چھوٹی سی سوئی تک حاصل نہیں کر سکتا۔ مطلب یہ ہے کہ اگر انسان وقت ضائع نہ کرے وقت کی اہمیت کو سمجھے تو وہ اپنے مقام تک آسانی سے پہنچ سکتا ہے۔ آج بچے، بوڑھے، نوجوان سب ہی موج مستی میں مصروف رہتے ہیں۔ اور بچے اپنا قیمتی وقت کھیل کود میں ضائع کر دیتے ہیں اگر وہ اپنا قیمتی وقت پڑھائی میں صرف کرے تو وہ امتحان میں ہمیشہ اول آئے۔ وقت ضائع کرنے والوں کے لئے اب انٹرنیٹ بھی ایک آسان اور سستا ذریعہ بن گیا ہے جب کہ اس میں وقت اور پیسے کی بربادی کے سوا کچھ بھی ہاتھ نہیں آتا ہے ان سب کے باوجود بھی اس سے بچنے کی کوشش بھی نہیں کی جاتی ہے جس نے بھی وقت کی بربادی نہیں کی اور وقت کی قدر کی اس نے ہی مقام حاصل کیا اور آسمان کی اونچائیوں کو چھوا اس لئے کہتی ہوں وقت اہمیت کو سمجھو وقت ضائع مت کرو کیوں کہ اگر ایک بار وقت چلا گیا تو وہ پھر واپس نہیں آتا ہے۔

□□□

پوچھیں تو تم دونوں ایک ایک صفر بڑھانے کو کہنا کہ قرض لینے والا قرض کی آدائیگی بھی نہ کر سکے اور سودا کرتے کرتے مر جائے یا پھر اپنی زمین ساہوکار کے نام کر جائے۔

کسان کا بیٹا وہاں بیٹھا سب دیکھ رہا تھا۔ ساہوکار نے اس سے بھی اس کی رائے دریافت کی، اسے امید تھی اسکی بیوی اور بیٹے کی طرح یہ بھی ایک صفر بڑھانے کو کہے گا۔ لیکن کسان کے بیٹے نے کہا کہ یہ تمام دائروں کے ساتھ ایک لکیر مناسب نہیں لگ رہی ہے لہذا اس کو بھی دائرہ بنا دیا جائے۔ ساہوکار یہ سن کر پریشان ہو گیا کیوں کہ اس کی بیوی اور بیٹے نے جو کہا تھا وہ اس نے کیا تھا اب اگر کسان کے لڑکے کی بات نہ مانتا تو کسان ناراض ہوتا۔ ساہوکار مرتا نہ تو کیا کرتا کہ بمصداق ایک کے عدد کو بھی صفر میں تبدیل کر دیا اور کاغذ کسان کو لوٹا دیا اور ساہوکار نے سو روپے بھی دیدئے۔ ساہوکار کی زندگی میں شاید ایسا پہلی بار ہوا تھا کہ اس نے روپے بھی دیے اور کاغذ بھی اور اس میں رقم صفر۔ صفر ہی لکھنی پڑی۔

کسان وہ کاغذ لیکر گھر آیا اور اس نے قریب ہی ایک اسکول میں ٹیچر کو دیکھا یا اور صفر والا واقعہ سنایا ماسٹر صاحب نے کہا۔ اگر تم پڑھے لکھے ہوتے تو ساہوکار تم کو بیوقوف نہ بناتا اور یہ سب ہر کت نہ کرتا لیکن آج تمہارے لڑکے کی وجہ سے اتنا زیادہ قرض لوٹانے سے بچ گئے۔ اسلئے کہا جاتا ہے کہ بچے سے کھیتی باڑی کرانے کے بدلے انکو پڑھاؤ اور تعلیم یافتہ بناؤ اور اس کا اسکول کالج میں داخل کراؤ جس سے تعلیم حاصل ہو اور یہ کسی ساہوکار کے ہاتھ بیوقوف نہ بن سکے۔ سب کو آج کل چاہئے کہ وہ غریب ہو یا امیر سب



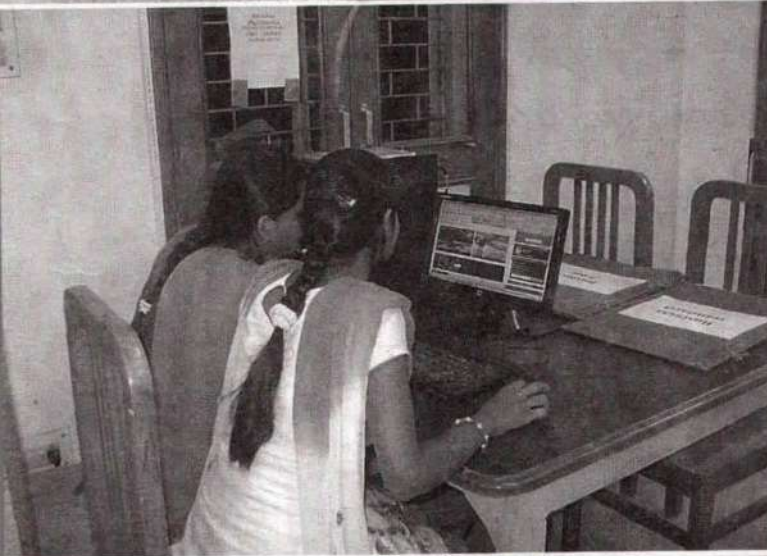
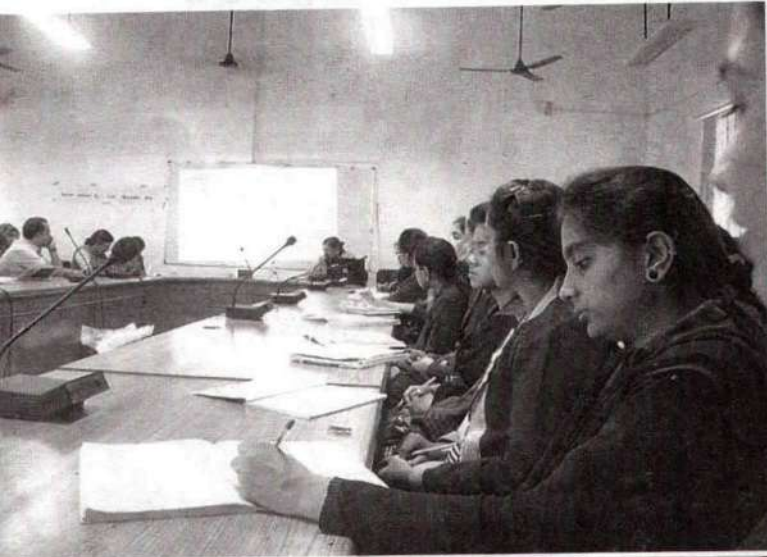
## تعلیم کی خاص اہمیت

وہ پوری طرح سے تعلیم یافتہ ہو جائے اور وہ اچھے اخلاق و کردار کا مالک بن جائے اور وہ اس قابل بن جائے کہ روزی روزگار کا حصول اس کے لیے آسان ہو جائے۔ چاہے وہ شہر کا ہو یا گاؤں۔ گاؤں سے یاد آیا ہم نے اپنے پیارے استاد سے سنا ہے کہ ایک گاؤں میں ایک کسان رہتا تھا اس کا ایک سات برس کا بیٹا تھا۔ برسات کا موسم قریب تھا اس لیے کسان کو کھیت تیار کرنے اور اس میں بیج بونے کے لئے پیسوں کی ضرورت تھی تو اس گاؤں میں ایک ساہوکار تھا جو تمام گاؤں والوں کو بوقت ضرورت پڑنے پر قرض دیتا تھا۔ کسان ان پڑھ تھا ایک دن وہ اور اس کا لڑکا ساہوکار کے گھر قرضہ لینے کے لئے گئے۔ ساہوکار نے ایک سادہ کاغذ لیا اور لے کر اس پر کچھ لکھا بعد میں اس نے قرض کی رقم ۱۰۰ روپے لکھی اور اندر سے اپنی بیوی کو آواز دی اور اس سے اس کی رائے پوچھی۔ بیوی نے ۱۰۰ کے آگے ایک صفر بڑھانے کو کہا اس طرح رقم ۱۰۰۰ روپے ہو گئی۔ اسکے بعد ساہوکار اپنے بیٹے کو آواز دے کر بولا اور اس سے بھی اس کی رائے کاغذ پر لکھی رقم دکھا کر پوچھی تو بیٹے نے بھی ۱۰۰۰ کے آگے ایک صفر بڑھانے کو کہا۔ اس طرح یہ رقم دس ہزار ہو گئی۔ ساہوکار نے اپنی بیوی اور بیٹے کو سمجھا رکھا تھا کہ جب بھی کوئی گاؤں کا ان پڑھ آدمی آئے تو قرضہ کے لیے تو اس وقت تم دونوں سے تمہاری رائے ہم

تعلیم ہم سب کے لئے بہت ضروری ہے اور ہم سب کی زندگی میں تعلیم کی بہت خاص اہمیت ہے۔ آج کل تعلیم سب کے لیے اہم ہے اور ہو بھی کیوں نہ، تعلیم کے بنا زندگی کچھ بھی نہیں۔ آج ہر کوئی چاہتا ہے کہ وہ پڑھے ہر ماں باپ چاہتے ہیں کہ ان کے بچے کا داخلہ کسی اسکول یا کالج میں ہو جس سے اور وہ خوب پڑھ لکھ کر اچھا انسان بنے۔ جیسے جیسے آبادی بڑھ رہی ہے ویسے ویسے تعلیم کی اہمیت ہوتی جا رہی ہے اور لوگ تعلیم یافتہ ہوتے جا رہے ہیں اور جو نہیں ہے وہ تعلیم حاصل کرنا چاہتا ہے لیکن دنیا میں بہت سے ایسے لوگ ہیں جو تعلیم سے محروم ہیں وہ لوگ غریب اور مفلس لوگ ہوتے ہیں جو تعلیم حاصل کرنا چاہتے ہیں پر کیا کریں اپنی غریبی اور مفلسی کے عاجز ہوتے ہیں وہ چاہ کر بھی تعلیم کو حاصل نہیں کر پاتے وہ اس لیے کیونکہ وہ خود اپنی مفلسی اور غریبی سے پریشان ہوتے ہیں تو وہ کسی طرح کرے ان کی تکلیف کا احساس بھی صرف اس کو ہوتا ہے وہ خود اپنی غربت میں ہوتا ہے ایک غریب کی نہ کوئی عزت ہوتی اور نہ شان و شوکت وہ تو ایک ایک روٹی کے لیے پریشان رہتا ہے تو وہ تعلیم کیسے حاصل کرے اس سرکار کو چاہئے کہ وہ غریب لوگوں کے لیے تعلیم کے لیے وہ سبھی انتظامات مہیا کرے اور ان کے لیے وہ سبھی چیز مہیا ہو تعلیم کی جس سے ان کو پوری پوری تعلیم حاصل ہو اور



# प्रंमो 2014-15 महाविद्यालय परिसर





## प्रतिभाएं



श्रीमती अपर्णा माथुर शर्मा  
बी.एड. संकाय-सर्वोच्च स्थान  
प्रेसीडेन्ट स्वर्ण पदक  
(चारो संकाय के मध्य)



श्रेया त्रिपाठी  
सर्वोच्च स्थान  
कला संकाय



दीपिका श्रीवास्तव  
सर्वोच्च स्थान  
विज्ञान संकाय एवं  
बायोटेक्नोलॉजी



श्रीमती गौरांगना खन्ना  
सर्वोच्च स्थान  
वाणिज्य संकाय



पारुल मिश्रा  
बेस्ट इन स्पोर्ट्स



फ़रहा फातिमा  
बेस्ट इन गेम्स



ऐमन हुसैन  
बेस्ट टीम कोऑर्डिनेटर



अंकिता यादव  
प्रेसीडेन्ट  
प्रॉक्टोरियल बोर्ड



काशिफ़्रा इतरत  
वाइस प्रेसीडेन्ट  
प्रॉक्टोरियल बोर्ड



सोनिश अली  
सेक्रेटरी  
प्रॉक्टोरियल बोर्ड



मेघना सिंह  
ज्वाइंट सेक्रेटरी  
प्रॉक्टोरियल बोर्ड





सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी

253/179ए अतरसुइया रोड, इलाहाबाद - 211 003

फोन : 0532-2451367

E-mail : [katripathshala@gmail.com](mailto:katripathshala@gmail.com)

[www.skpallahabad.com](http://www.skpallahabad.com)